1, I

* श्रीः *

संसारमें शान्ति स्थापित करनेके लिए

भारतीय महान् आदर्शका पुनरुद्धार

❀ श्रीस्वाध्याय ❀

स्वाध्यायकी आवश्यकता

प्रिय सज्जनों !

संसारमें प्राणिमात्र शान्तिकी इच्छा करता है। शान्तिसे ही परमानन्दकी प्राप्ति होती है। शान्ति-लाभ बिना स्वाध्यायके हो नहीं सकता। स्वाध्यायसे अपने आपकी पहचान होती है, आत्मोन्नतिके उपाय ज्ञात हो जाते हैं, अपनी अवनतिके कारणों का भी भलीभांति ज्ञान हो जाता है। आत्मोन्नति ही परम धर्म है, इसी लिए उपनिषदोंमें "स्वाध्यायोऽध्येतव्यः।" "स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ॥" इस प्रकार स्थान स्थान पर उपदेश मिलते हैं। जो राष्ट्र इस पर विचार करते हैं तथा आरूढ होते हैं, वे कभी परतन्त्र नहीं हो सकते। स्वातन्त्र्यके बिना शान्ति लाभकी सम्भावना ही नहीं। स्वातन्त्र्य प्राप्ति और उसकी रक्षाके लिए स्वाध्याय जैसा दूसरा कोई साधन नहीं। खोई हुई स्वतन्त्रताको स्वाध्याय ही प्राप्त करा सकता है और प्राप्त की हुई स्वतन्त्राको सदाके लिए सुरक्षित भी स्वाध्याय ही रख सकता है। भारतीय महान् आदर्श सदासे यही रहा है कि सम्पूर्ण संसार में एक दूसरेकी सद्भावनासे सम्भावना करें और प्रत्येक दूसरेको शान्ति और आनन्द प्रदान करें। किन्तु ये सब बातें स्वाध्यायके बिना कैसे मालूम हो सकती हैं ? इन्हीं बातों पर बहुत समयसे विचार करके अन्तमें हमने यही स्थिर किया कि स्वाध्याय की परम आवश्यकता है।

भारतके आदर्श सुपुत्रों !

हमने यही सब सोच समझ कर समस्त संसार में शान्ति स्थापित करनेके लिए "श्रीस्वाध्याय" नामक त्रैमासिक पत्र प्रकाशित करनेका निश्चय किया है।

मनुष्य लोकमें सम्पूर्ण वस्तुमात्रका व्यवस्थापक मनुष्य ही माना गया है। स्वभावतः सम्पूर्ण प्रकार का नेतृत्व मनुष्यमें ही होनेके कारण उसीको नर कहा जाता है, किन्तु यदि वह अपने आपको पहचान न सके तो पशुप्राय होकर किसी का कल्याण नहीं कर सकेगा। उसको अपना स्वाभाविक नेतृत्व पूर्ण रूपसे निभानेके लिये स्वाध्याय करना ही होगा।

श्रीस्वाध्यायके उद्देश्य

श्रीस्वाध्यायका मुख्य उद्देश्य संसारके प्राणिमात्रको अपने २ यथार्थ हितकी ओर लेजाना है।

आजकल संसार अधिकतर रुचिकी ओर ही आकर्षित होता जारहा है; उस (रुचि) के शुभाशुभ परिणामकी ओर किसीका ध्यान नहीं। जबतक हित की ओरसे आंखें बन्द करके रुचिके पीछे ही दौड़ लगाई जावेगी तबतक किसीका कल्याण नहीं हो सकता। इस लिए "श्रीस्वाध्याय" में आपको रोचकता की अपेक्षा हितकारिता अधिक मिलेगी। इसका अर्थ यह नहीं है कि "श्रीस्वाध्याय" रोचक या सुन्दर नहीं होगा। यह सुन्दर भी होगा, रोचक भी होगा, परन्तु हितकारिताके साथ। या यों कहिए कि श्रीस्वाध्याय का उद्देश्य केवल "सुन्दरम्" ही नहीं अपितु "सत्यं शिवं सुन्दरम्" होगा।

इसी सदुद्देश्यको लेकर "श्रीस्वाध्याय" आपको सर्वप्रकारके लौकिक पारमार्थिक बन्धनों या पारतन्त्र्य से छुड़ाकर मुक्तिपद या स्वातन्त्र्य प्राप्त करानेका प्रयत्न करेगा। क्योंकि मनुष्य यदि स्वतन्त्र हो तभी सब कुछ कर सकता है। इसी कारण स्वातन्त्र्य (मोक्ष) सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। पुरुष सर्वदा जिसको चाहते हैं उसको पुरुषार्थ कहते हैं। प्रत्येक प्रकारसे पुरुष आनन्द चाहता है। वह आनन्द दो प्रकारका है—व्यावहारिक और पारमार्थिक। व्यावहारिक आनन्द (इन्द्रिय विषयोपभोग) की इच्छा ही काम है; इसको सभी लोग चाहते हैं। किन्तु काम का साधन अर्थ (धन) है। द्रव्यके विना संसारमें किसी वस्तुकी प्राप्ति नहीं हो सकती। धर्म (नियम) न हो तो अर्थ और काम ये दोनों पुरुषार्थ संसार में अनवस्था फैलाएंगे। इसी लिए पहला पुरुषार्थ धर्म, दूसरा अर्थ, तीसरा काम और सबसे बड़ा इन तीनों पुरुषार्थों का मूलभूत होनेके कारण मोक्ष (स्वातन्त्र्य) चौथा पुरुषार्थ है।

सज्जनों! हमने भी इसी कारण "श्रीस्वाध्याय" त्रैमासिक पत्रमें यही चार स्तम्भ प्रधान रक्खे हैं। इनके सम्यक् ज्ञानमें परम साधन इतिहास ही होने के कारण पांचवां स्तम्भ इतिहास रक्खा है। संसार के समस्त विषय इन पांचों स्तम्भोंमें आसकते हैं।

दर्शन (Phylosphy), अर्थशास्त्र (Economics), ज्योतिष, गणित फलित (Astrology Astronomy) मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, मतमतान्तर परिचय, आयुर्वेद, भूगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय, समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख इस पत्रमें प्रकाशित हुआ करेंगे।

प्रति वर्ष आश्विन मासमें "श्रीस्वाध्याय" का एक बिशेषाङ्क प्रकाशित हुआ करेगा। विशेषाङ्कमें ज्योतिश्शास्त्र सम्बन्धी गवेषणापूर्ण ठोस सामग्री रहेगी। आगामी वर्ष भरके दैनिक वेधसिद्ध सूक्ष्म ग्रहोंके साथ ही त्रैमासिक व्रतोत्सव निर्णय, मुहूर्तादि निर्णय और संसारकी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थिति एवं व्यापारिक हलचलों पर महत्वपूर्ण चमत्कारी भविष्यवाणियां भारतके धुरन्धर ज्योतिश्शास्त्रविशेषज्ञों की लिखी हुई आपको इसमें मिलेंगी। अधिक क्या प्रत्येक दृष्टि से यह पत्र अद्वितीय और अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

प्रथम अङ्क विशेषांकके रूपमें आश्विन शु० १० (विजयादशमी) ता० ३० सितम्बर १९४१ ई० को प्रकाशित होकर आप सज्जनोंके कर कमलोंमें पहुंच रहा है।

हम प्रार्थना करते हैं कि सदा से उन्नत रहा हुआ भारतीय महान् आदर्श "यावच्चन्द्रदिवाकरौ" संसार में फलता फूलता रहे। किन्तु इसका फूलना फलना "स्वाध्याय" के प्रचार में ही है। हमें आशा है कि भारतके बड़े बड़े धर्माचार्य, महामान्य नृपतिगण (राजा महाराजा), धनीमानी सेठ साहूकार, सम्माननीय वृद्ध पुरुष एवं उत्साही नवयुवक, विदुषी माताएं और बहिनें सब मिलकर इस "श्रीस्वाध्याय" को प्रचारित करेंगे। हम चाहते हैं कि भारतकी उन्नति की कामना करनेवाले सभी भारतीय इस "श्रीस्वाध्याय" को पढ़ें, पढ़ाएँ तथा इस पर स्वयं आचरण करें और दूसरोंसे भी आचरण कराएं। यह सब सहृदय पाठकों और ग्राहकों पर ही अवलम्बित है।

———

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः । ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् ।

श्रीस्वाध्याय

[शरदंक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष १ | सोलन, आश्विन शु० १० मङ्गलवार सं० १९९८ वि० | संख्या १

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां
शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी
श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥

इस संसारमें प्रेमसे तथा आर्योंकी रीतिसे शोभा और सम्पत्तिसे समृद्ध प्रत्येक राष्ट्रमें मनुष्यकी व्यवस्था (मर्यादा)को स्थापित करता हुआ वास्तविक परिस्थितिको बताने वाला यह "श्रीस्वाध्याय" विश्वके कल्याण और समृद्धिके लिए हो ।

—अ० वा० आचार्य

आवश्यक निवेदन



प्रिय पाठकवृन्द !

पत्र सम्पादकोंका कार्य कितना कठिन होता है यह उसके भुक्तभोगी ही जान सकते हैं। इस समय किसी नये पत्रको प्रकाशित करना तो बहुत ही कठिन कार्य है। एक ओर महायुद्धके कारण प्रत्येक वस्तुकी महर्घता, कागजका प्रतिबन्ध, निजी मुद्रणालयका न होना, प्रकाशन संस्था और मुद्रणालयका एक स्थान पर न होना। दूसरी ओर नया २ पत्र प्रकाशनका प्रथम प्रयास और सबसे बड़ी बात तो यह कि— "सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः" तथा "सर्वे गुणाः-काञ्चनमाश्रयन्ते" किन्तु इससे हम निरुत्साह होकर संसारको अपनी यथाशक्ति सेवासे वञ्चित कर अपना तथा संसारका अकल्याण करना कभी भी पसन्द नहीं करते। भगवान् तो कहते हैं —

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

जिन लोगोंका इस भगवद्वाक्य पर विश्वास ही नहीं वे भले ही अकर्मण्य होकर बैठे रहें। परन्तु जिन लोगोंके हृदयमें अपने राष्ट्र, अपनी जाति, अपने धर्म, अपनी विद्या, अपना कलाकौशल और अपनी संस्कृति का कुछ भी प्रेम है वे सैकड़ों विघ्न आने पर भी अपने कार्यको नहीं रोक सकते। उपर्युक्त भगवद् वाक्य पर विश्वास रख कर ही जनता जनार्दनकी सेवाका यह व्रत अथवा 'श्रीस्वाध्याय' पत्र सम्पादन एवं प्रकाशनका भार हमने ग्रहण किया है। इस कार्यमें अबतक हमारे सब सहृदय मित्रोंका हमें हृदयसे प्रोत्साहन भी मिला है, और आगे भी हमें पूर्ण-आशा है कि तन-मन-धनसे इस कार्यमें सहायता करके सब लोग संसारके कल्याणमें हमारा हाथ बटाएंगे।

सर्वप्रथम हम श्रीस्वाध्यायसदन संस्था तथा इस 'श्रीस्वाध्याय' पत्रके संस्थापक श्री १०८ मान् पूज्यपाद आचार्यजीका धन्यवाद करते हैं; जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर जनताका महान् उपकार किया है। यह सब उन्हींके शिवसंकल्पका फल है कि हमें प्रत्येक कार्यमें निरन्तर सफलता प्राप्त होती जारही है। यद्यपि हमारा उनको धन्यवाद देना छोटे मुंह बड़ी बात या सूर्यको दीपक दिखानेके समान ही है। तथापि दीपकसे सूर्यकी आरतीके समान यह धन्यवाद भी श्रीस्वाध्याय-परिवारके लिए कल्याणकारी ही सिद्ध होगा। आपकी तपोनिष्ठा एवं विद्वत्ताके विषय में हमें यहां कुछ नहीं कहना है; जिन्होंने आपके ग्रन्थों का अध्ययन किया है या जिन सज्जनों ने कभी आपसे प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त किया है वे ही आपके सार्वदैशिक पाण्डित्य एवं अद्भुत प्रतिभाको समझ सकते हैं। अनेक शास्त्रोंमें पूर्ण अधिकार रखते हुए भी आप अपने शुभ नामके साथ कोई भी उपाधि या पदवी लिखना कभी पसन्द नहीं करते और न कभी किसीको यह बतलाते हैं कि आपकी क्या २ उपाधियां हैं। आप अपने पत्रोंमें भी हस्ताक्षरके स्थान पर केवल मात्र "आनन्द" इतना ही उपनाम लिखते हैं। कुछ आपके चिरपरिचित मित्रोंके आए हुए पत्रोंसे कभी २ हमें मालूम हुआ है (जिन्होंने पते पर आपके शुभ नामके साथ कुछ उपाधियां भी लिखी थीं) कि व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्याचार्य, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र आदि अनेकों आपकी सम्मानित उच्च उपाधियां हैं; किन्तु आप किसीका भी उपयोग नहीं करते। हमारे पूज्यपाद श्री ६ गुरुवर स्व० प्रिं० आपटे साहब ने भी आपकी विद्वत्ता और अद्भुत कवित्व शक्तिसे प्रसन्न होकर आपको "राजकवि" उपाधिसे सम्मानित किया था, अस्तु। ऐसे तपोनिष्ठ वीतराग सर्वशास्त्रनिष्णात महात्माके करकमलोंसे "श्रीस्वाध्याय" नामक जिस छोटेसे वृक्षका बीजारोपण हुआ है यह आगे चल कर अवश्य ही कल्पवृक्षकी भांति समस्त संसारको सुखकर सिद्ध होगा, ऐसी हमें पूर्ण आशा है। यहां इतना लिखनेमें भी उक्त

आचार्यचरणों की अनुमति नहीं थी, किन्तु इसमें "श्रीस्वाध्याय" का गौरव समझ कर हठात् आपके सम्बन्धमें ये कुछ पंक्तियां हमने लिख दी हैं।

अब हम उनका धन्यवाद करेंगे जिन्होंने "श्रीस्वाध्याय" का संरक्षकत्व भार ग्रहण किया है। इसमें सर्वप्रथम शुभनाम बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड राजश्रेष्ठ श्रीमान् राजासाहब श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई० महोदय सोलन का है। आपकी धर्मनिष्ठा, भगवद्भक्ति, न्यायपरायणता, विद्यानुरागिता, प्रजाप्रियता, सौजन्य, सदाचरण, शौर्य, औदार्य आदि सद्गुण सर्वविदित ही हैं। आपने श्रीस्वाध्याय सदनके लिए उपयुक्त स्थान एवं कार्यालय की सब सामग्री तथा पत्र प्रकाशनार्थ आर्थिक सहायता प्रदान करके अपनी महान् उदारताका परिचय दिया है; अतः आपको जितने भी धन्यवाद दिये जाएं वे थोड़े ही हैं। यह कहनेमें भी अत्युक्ति न होगी कि इस संस्था और पत्र द्वारा जो भी जन-सेवा हो सकेगी उसका अधिक श्रेय आप ही को होगा। इसी प्रकार 'श्रीस्वाध्याय' के दूसरे संरक्षक श्री १०५ मान् रावजी साहब गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर हैं। आपने भी यथेष्ट आर्थिक सहायता और सप्रेम सहयोग दिया है; यह आपकी स्वाभाविक सरलता, विद्यानुरागिता, गुणग्राहिता आदि सद्गुणोंके अनुकूल ही है। आपको विशेष धन्यवाद देना आत्मीयता से पृथक् करना है।

"श्रीस्वाध्याय" के सहायक श्रीमान् सरदार कुंवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर) श्रीमान् कुंवर शिवसिंहजी बी० ए० एल्-एल्० बी० सेशन जज बघाटस्टेट सोलन, श्रीमान् कुं० ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़) तथा श्री १०५ हिजहाईनेस महाराजाधिराज नाभाके ए० डी० सी० श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों बी० ए० एल-एल० बी० नाभाको भी धन्यवाद हैं। आप लोगोंने आर्थिक सहायता व सप्रेम प्रोत्साहन देकर जनता का विशेष उपकार किया है।

अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त भारतके प्रसिद्ध विद्वान् श्रीमान् पूज्य पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य भारती भवन उज्जैन, श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति, श्रीयुत प्रो० भगवद्दत्तजी बी. ए. रिसर्च स्कालर, श्रीयुत पं० सखाराम पुरुषोत्तमजी जोशी, श्री० डॉ० श्रीनाथ शास्त्री तिक्कू, श्रीयुत वैद्यराज पं० मोहनलाल जी शास्त्री भिषगाचार्य, श्री० राजवैद्य माधवशर्मा आदि २ विद्वान् महानुभावोंने अपने २ लेख भेजकर "श्रीस्वाध्याय" को अलंकृत किया है; एतदर्थ हम उक्त महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए आशा रखते हैं कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार "श्रीस्वाध्याय"में लेख भेजकर जनताका उपकार करते रहेंगे।

श्रीयुत पं० गोविन्दजी मिश्र भरतपुरने जिस आत्मीयता और सहृदयतासे 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशन के कार्यमें सहायता दी है उसको हम ही जान सकते हैं। आपने हमें कई कार्योंमें सहायतादी है और भविष्यमें भी 'श्रीस्वाध्याय' को आपसे बहुत कुछ आशा है, आपके लिए धन्यवाद शब्द बहुत थोड़ा है। हमारे मित्र पं० नन्दलालजी शास्त्रीने प्रूफ संशोधनादि कार्योंमें सहायता दी एतदर्थ इनको भी सप्रेम धन्यवाद है।

इस पत्र सम्पादनमें हम कहां तक सफल होसके हैं इसका निर्णय महाकवि कालिदासके—

आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।
बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः॥

इन शब्दोंमें "श्रीस्वाध्याय" के सहृदय पाठकों पर ही छोड़ते हैं। साथ ही महाकवि भवभूतिके इन शब्दों को भी निवेदनके रूपमें जनताको जतला देना उचित समझते हैं—

ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां
जानन्तु ते किमपि तान्प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी॥

निवेदक—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
(सम्पादक)

मोक्ष—

मोक्ष और स्वातन्त्र्य पर्याय मात्रही हैं। संस्कृत साहित्यमें मोक्ष शब्दकी व्युत्पत्ति "मुच्लृ मोक्षणे" इस धातुसे कीगई है। उसका अर्थ है छूटना। छूटना बिना बन्धनके नहीं हो सकता, अतः बद्धका ही मुक्त होना सम्भव है। दूसरी प्रकार यदि कहना हो तो कह सकते हैं कि स्वातन्त्र्य प्राप्ति करना ही मोक्ष प्राप्त करना है।

स्वातन्त्र्य प्राप्तिके बिना कोई भी कार्य सम्भव नहीं। स्वतन्त्रतामें जितनी ही आंशिक त्रुटि होगी उतनी ही सुखप्राप्तिमें त्रुटि होगी। सुखप्राप्तिकी इच्छा प्राणिमात्रके हृदयमें निरन्तर निवास करती है, किन्तु परतन्त्रता उनको सुख प्राप्त नहीं करने देती। परतंत्रतासे सर्वदा दुःखप्राप्ति होती है। सुखप्राप्तिका साधन स्वतन्त्रताके सिवा अनन्तकोटि ब्रह्माण्डमें दूसरा कोई नहीं है। कहाभी है—

दुःखमूलं पारतन्त्र्यं सुखमूलं स्वतन्त्रता।
अतः सर्वात्मना सर्वैस्तस्याः प्राप्त्यै प्रयत्यताम्॥

[दुःखका मूल परतन्त्रता तथा सुखका मूल स्वतन्त्रता (मोक्ष) है। इसी कारण सब लोगोंको चाहिए कि सम्पूर्ण सुख देनेवाली उस स्वतन्त्रता (मोक्ष) प्राप्तिके लिए सब प्रकारसे प्रयत्न करें।]

स्वातन्त्र्य यदि न हो तो नियम बनाना अथवा बने हुए नियमों पर चलना सम्भव नहीं। दूसरेका दास तीसरेके पास अपने प्रभुकी आज्ञाके बिना जा नहीं सकता, इस बातको प्रतिदिनका अनुभव साक्षी है। कोई भी कार्य हो, स्वातन्त्र्यके बिना उसकी सिद्धि हो ही नहीं सकती—इसीलिए सबसे पहले इसीको प्राप्त करना चाहिए और इसीकी रक्षा भी करनी चाहिए। किन्तु अनार्योंकी स्वेच्छाचारिताका नाम ऊपर ऊपर स्वातन्त्र्य होनेपर भी वस्तुतः वह स्वातन्त्र्य नहीं है। जो स्वातन्त्र्य दूसरेको दास बनानेके लिए उपयुक्त किया जाता है वह स्वातन्त्र्य पूर्ण स्वातन्त्र्य कैसे होसकता है? आमके आम और नीम्बूके नीम्बू फला करते हैं, स्वातन्त्र्यसे पारतन्त्र्य उत्पन्न करना या होना यह वास्तवमें स्वातन्त्र्यका लक्षण नहीं। स्वातन्त्र्य सबको समानरूपसे हितकर स्वतन्त्रताको प्रदान करता है। ठीक देखा जाए तो हितकर स्वातन्त्र्यका ही नाम स्वातन्त्र्य है। अन्यथा वही अहितकर होनेपर पारतन्त्र्य बन जाता है। किन्तु आजकलकी अनार्य लोगोंकी परिभाषामें स्वातन्त्र्यकी जो छीछालेदर होरही है उसे देख बहुत दुःखसे कहना पड़ता है कि स्वातन्त्र्यका मूल्य ही कुछ न रहा। प्रथम तो स्वातन्त्र्य की परिभाषा जबतक आर्योंकी ओरसे न की जाएगी तबतक स्वातन्त्र्यका ज्ञान ही नहीं होसकता। आर्योंकी परिभाषामें स्वातन्त्र्य वह वस्तु है जो समस्त संसारका पूर्णरूपेण कल्याण करती है। इसीलिए स्वाध्यायकी परम आवश्यकता है। आत्मविषयक अध्ययन जबतक अन्तस्तल प्रविष्ट होकर न किया जाएगा तबतक स्वातन्त्र्यका ज्ञान कैसे सम्भवहै? मोक्ष (स्वातन्त्र्य) की वह पारमार्थिक हो अथवा व्यावहारिक इच्छा सर्वदा होनेपर भी उसका स्वरूप ज्ञान तथा कारण व उद्देश्यका ज्ञान न होगा तो अकल्याणके सिवा हाथ क्या आएगा? इसीलिए तो मोक्षको जाननेके लिए और उसका उपयोग करनेके लिए हम कौन हैं? हमें क्या करना चाहिए? हमारा कल्याण किसप्रकारसे हो सकता है? इन सब बातोंको सत्पुरुषोंसे सच्छास्त्रोंसे समझना होगा और उसपर आचरण करना होगा। तथा पूर्णरूपसे उसका प्रचार भी करना होगा। इन बातोंका जिनमें समावेश हो वे सब मोक्षशास्त्र हैं। तब यह ठीक ही है कि—

इच्छन्ति नित्यमिह सौख्यसुधासमुद्रं
स्वातन्त्र्यमेव पशुपक्ष्यमरादयोऽपि।
तस्माद् बुधैः खलु तदेव समर्थनीयं
नान्यत्किमप्यपरमस्ति हि शिक्षणीयम्॥

—अ० बा० आचार्य

धर्म

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत् ॥

[यदि धर्मका विनाश किया जाय तो उन विनाशकारियोंका ही धर्म विनाश कर देता है। यदि धर्मका रक्षण किया जाय तो वह धर्म उन रक्षणकारियोंका सर्वदा रक्षण करता है। अतः धर्मका हनन कभी नहीं करना चाहिए। पीड़ित धर्म हम लोगोंको नष्ट न कर डाले। धर्मपालन ही सर्वदा कल्याणकारक है।]

समस्त संसारमें प्राप्त करनेके योग्य सुख व छोड़नेके योग्य दुःख है। यह संसारका स्वभाव है। स्वभाव पलटा नहीं जा सकता। अन्तर्मुखोंको अन्तःसुख प्राप्तिकी तथा बहिर्मुखोंको बाह्यसुख प्राप्तिकी इच्छा इसी स्वाभाविक नियममें आबद्ध है। इसी लिए अन्तर्मुखकी दृष्टिमें बाह्य सुख दुःख रूप भासित होता रहता है। बहिर्मुखको तो अन्तःसुखकी कल्पनाका स्वप्न भी नहीं होता। किन्तु बाह्यसुख क्षणविनाशी होनेके कारण उन्हींमें चिरसुख प्राप्तिकी इच्छा तथा क्षिप्रसुखोंको छोड़नेकी इच्छा भी बहिर्मुखका स्वभाव है। वह स्वभाव ही धर्म है। इसी स्वभावका परिपालन करनेसे संसारका पालन हो सकता है। उसका पालन न किया जाय तो संसार उच्छिन्न हो जाएगा। सांसारिक पुरुष अपूर्णज्ञान होनेके कारण विशुद्ध-काम नहीं होसकता। वह सर्वदा अपनी इन्द्रियोंको उनउनके विषयोंके उपभोगसे तृप्त करना चाहता है; यही अशुद्ध काम है (कामतत्त्वका विचार आगे कामस्तम्भमें किया जाएगा) कामपूर्तिके लिए ही अर्थप्राप्ति करनी पड़ती है (अर्थतत्त्वका विचार आगे अर्थस्तम्भमें होगा) अर्थप्राप्ति भी यदि अवैध होगी तो सुखप्राप्ति नहीं हो सकती। अत एव अर्थ और कामको सुव्यवस्थित करना होगा। उस सुव्यवस्थाके नियमोंको ही धर्म (नियम) कहते हैं। इसी कारण प्रवृत्ति निवृत्तिमें ज्ञापक अथवा कारक वाङ्मयको शास्त्र तथा उसके अनुसार चलानेवालेको शास्ता कहा जाता है। जिस प्रकार आम्रके बीजसे फल पर्यंत अवयवसमुदाय आम्र ही कहलाते हैं, उसी प्रकार विधायक व निषेधक वाक्योंसे व्यवस्थापित क्रिया और तज्जन्य अपूर्वको धर्म कहा जाता है। महर्षि जैमिनिने स्पष्ट ही कहा है कि:— "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः" महर्षि मनु भी इसी लिए "आचारः परमो धर्मः" ऐसा कहते हैं। बात यह है कि पुरुष सर्वदा आत्मतृप्ति चाहता है और उसीकी कामनासे धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषके अर्थनीय होते हैं। जितने ही अंशमें इनकी सुव्यवस्था पुरुष कर सकेगा उतना ही वह उन्नत होगा। उन्नतिमें ही तृप्तिका मूल निहित है। इसी लिए महर्षि कणाद धर्मका लक्षण यों करते हैं कि— "यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः" तात्पर्यतः संसारकी सुव्यवस्थाकारक नियमोंको धर्म कहना चाहिए यह निष्पन्न होता है। किन्तु स्वाध्याय के बिना उन नियमोंका ज्ञान ही नहीं होगा। अतः कहना न होगा कि स्वाध्यायका कितना ऊंचा स्थान है। वेद कहते हैं "स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्"। स्वाध्यायसे संसारकी सुव्यवस्थाविधायक नियमोंका परिज्ञान होगा। एवं च अर्थ और काम धर्म ज्ञान पर ही अवलम्बित रहते हैं। जैसे अर्थप्राप्ति कई प्रकारसे हो सकती है, मांग कर, व्यापारसे, सेवासे, अयाचित

प्रतिग्रहसे, किन्तु चोरी, लूटपाट आदिसे नहीं हो-सकती ऐसा नहीं कहा जा सकता तो भी संसारकी सुव्यवस्थाके लिये चोरी आदि उपायोंको निषिद्ध किया गया। साथ ही निषिद्ध कार्य करने पर दण्ड-विधानकी भी व्यवस्था करनी पड़ी। अन्यथा सुव्यवस्था नहीं होसकती। कामके विषयमें भी ऐसी ही बात है। देखिये इन्द्रियोंसे उन उन विषयोंका उपभोग किया जाता है। किन्तु यदि विषयोंके उपभोग करने का कोई नियमविधान न हो तो इन्द्रियोंका सामर्थ्य शीघ्र ही नष्ट हो जायगा, तथा नाना प्रकारके रोग इन्द्रियोंको घेर कर दुःख देते रहेंगे। किसी भी यन्त्र को चलानेके लिये उसके अवयवोंकी पूर्णरूपसे आरोग्य व्यवस्था करनी पड़ती है, अन्यथा यन्त्र टूट जाएगा। उस व्यवस्थाका ही नाम धर्म है। इसी कारण तत्वदर्शी आर्य महर्षियोंका यह सिद्धान्त है कि:—

विहितस्याऽननुष्ठानान्निन्दितस्य च सेवनात।
अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणां नरः पतनमृच्छति॥

[शास्त्रों में जिन कर्मोंका कर्तव्यरूपमें विधान है उन कर्तव्य कर्मोंका आचरण न करनेसे, तथा शास्त्रोंमें जिन कर्मोंका निषेध किया गया है उन अकार्य कर्मोंका आचरण करनेसे और इन्द्रियवृत्तियों को अविवेकसे विषयोंमें लगा देनेसे नेताका भी पतन हो जाता है। अतः सम्पूर्ण कार्य शास्त्रानुसार व विवेक बुद्धिके अनुसार ही होने चाहिएँ]

पतन कोई नहीं चाहता, किन्तु केवल न चाहनेसे क्या होगा? जब तक अर्थ और कामकी संसारमें आर्यविधया सुव्यवस्था न की जाएगी तब तक उन्नतिकी आशा आकाश कुसुमके सिवा क्या होसकती है? संसारमें निष्कर्म कोई भी वस्तु नहीं रह सकती, तथा वृत्तिहीन भी कोई प्राणी नहीं रह सकता। कार्य-कर्म और अकार्य कर्मकी तथा वृत्तिकी सुव्यवस्था अत्यन्त आवश्यक और स्पृहणीय होनेके कारण ही उपनिषदों में लिखा गया है— "अथ यदि ते कर्म-विचिकित्सा वृत्तिविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः एष उपदेशः एषा वेदोपनिषद्।" यदि क्या करना चाहिए और क्या नहीं? इस प्रकार किसी भी कर्म के तथा वृत्ति (जीविका व इन्द्रिय विषयोपभोग) के विषयमें किसी प्रकारका भी संशय हो तो वहां रहनेवाले तत्त्वदर्शी योग्य सम्पन्न लोभादिरहित सांसारिक सुव्यवस्थाकी इच्छा रखने वाले ब्राह्मणोंसे पूछ कर उनकी आज्ञानुसार चलना चाहिए। यही आज्ञा है, यही उपदेश है और यही सम्पूर्ण वेदों का सार रहस्य है। —अ० वा० आचार्य

ग्रहोंका चमत्कार और भारतवर्ष
दैनिक सूक्ष्म ग्रहोंकी आवश्यकता और उनका उपयोग।

[ले०—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन, पंजाब]

"श्रीस्वाध्याय" के इस शरदङ्कमें हमने आगामी वर्ष सं० १९९९ शके १८६४ के निरयन दैनिक ग्रह-स्पष्ट वेधसिद्ध सूक्ष्म दृक्प्रतीतिप्रद गणिताऽनुसार दिये हैं। इसके विषयमें पाठकोंको कुछ निवेदन करना आवश्यक है। यह तो सभी जानते हैं कि भारतके प्रान्त प्रान्तसे जितने पञ्चाङ्ग (तिथिपत्र) या जन्त्रियां प्रकाशित होती हैं उन सबमें साप्ताहिक (अष्टमी पूर्णिमा अमावस्या) और दक्षिणभारतके पञ्चाङ्गोंमें तो प्रायः पाक्षिक (पूर्णिमा और अमावस्याके पन्द्रह २ दिनके) ग्रह ही लिखे जाते हैं। इन पञ्चाङ्गों परसे ज्यौतिषियोंको जन्मपत्र वर्षफल प्रश्न मुहूर्तादि बनाने और फलादेश बतलानेमें इतनी सुविधा एवं सूक्ष्मता प्राप्त नहीं हो सकती जितनी कि दैनिक ग्रहोंसे हो सकती है। इसी कारण सर्वसाधारण ज्योतिर्विद् ग्रहोंका सूक्ष्म विचार करके फलादेश ठीक २ नहीं बतला सकते, क्योंकि इत्थशालादि योगोंमें तो ग्रहोंके अंश कलादिकी परम आवश्यकता होती है। इस आवश्यकताको विदेशियों (यूरोपवालों) ने खूब समझा है, अतः वे प्रतिवर्ष लाखों रुपया व्यय करके ग्रीन्विच वेधशालासे Nautical Almanac और पेरिसकी वेधशाला से Des Temps नामक सुविस्तृत विशाल नाविक-पञ्चाङ्ग तथा Raphaels Ephemeris नामक छोटा दैनिकग्रहों वाला पञ्चाङ्ग भी प्रकाशित करते हैं। बहुतसे अंग्रेजी पढ़े लिखे हमारे भारतीय ज्योतिर्विद् भी जन्मपत्र, प्रश्न, वर्षफल, महर्घ समर्घ आदिमें इन्हीं यूरोपियन पञ्चाङ्गोंका उपयोग करते हैं। किन्तु आंग्लभाषासे अनभिज्ञ भारतके सर्वसाधारण ज्योतिर्विद् इनसे कोई लाभ नहीं उठा सकते। क्योंकि Nautical Almanac में अब कुछ वर्षोंसे भौमादि ग्रहोंका राश्यंशात्मक भोग Geocentric Longitude नहीं दिया जाता; केवल वेधोपयोगी ग्रीन्विच का विषुवकाल Right Ascension याम्योत्तर लङ्घनकाल और Declinations क्रान्ति आदि ही दी जाती हैं। इन परसे विपरिणमन गणित द्वारा ग्रहोंका भूपृष्ठीय राश्यंशात्मक भोग जानना सर्वसाधारणकी तो बात ही क्या है आंग्लभाषाविद् गणितज्ञ विद्वान्के लिए भी परिश्रम साध्य पड़ता है। और फिर इस नाविक पञ्चाङ्ग का मूल्य ५॥) पड़ता है, अतः यह भारतीय फलितोपजीवि ज्योतिर्विदोंके लिए अनुपयुक्त है। Des Temps में सब ग्रहोंका भोग अवश्य होता है, परन्तु वह फ्रेञ्च भाषामें है और उसका मूल्य ६॥) पड़ता है। इसी प्रकार जर्मनी आदि के पञ्चाङ्गोंमें भी हमें ये ही असुविधाएँ पड़ती हैं। हां, भारतके बहुतसे ज्योतिषी (जो थोड़ी बहुत अंग्रेजी जानते हैं) छोटी यूरोपियन ग्रहपञ्जिका Raphaels Ephemeris से ही प्रायः काम लेते हैं। परन्तु इसमें ग्रह तथा राशियाँ सब साङ्केतिक (काल्पनिक) चिन्होंमें लिखी रहती हैं, उनको सर्वसाधारण जनता सहजमें नहीं समझ सकती। दूसरी बात यह भी स्मरण रहे कि उपर्युक्त सब यूरोपियन पञ्चाङ्गोंमें तत्तद्देशीय सायन गणित होता है, उसे यहांका निरयन बनाया जावे तभी भारतीय ज्योतिर्विदोंके उपयोगी हो सकता है, अस्तु।

भारतकी इस महान् न्यूनताको पूर्ण करनेके लिए सर्वप्रथम प्रशंसनीय प्रयास अखिलभारतीय पञ्चाङ्ग-संशोधन सभा (इन्दौर) के अध्यक्ष वयोवृद्ध विद्वान् श्रीयुत पं० दीनानाथजी शास्त्री चुलैट महोदयने किया था और श्री १०५ मन्त इन्दौर नरेशके आश्रयसे उन्होंने यूरोपियन पञ्चाङ्गोंसे टक्कर लेने वाला सं० १९९५ का सुविशाल "भारत विजय पञ्चाङ्ग"

Indian Almanac प्रकाशित कराया था। कहना न होगा कि "भारतविजय पञ्चाङ्ग" द्वारा श्री० चुलैटजीने भारतकी एक बड़ी भारी न्यूनताको पूर्ण किया था। किन्तु दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि श्री० चुलैटजीने भी केवल एक ही वर्ष यह सत्प्रयत्न करके फिर स्थगित कर दिया। अर्थात् सं० १९९५ के अनन्तर आज तक पुनः 'भारतविजय-पञ्चाङ्ग' के दर्शन नहीं हुए और यह न्यूनता जैसी की तैसी ही बनी रही।

अब कुछ वर्षोंसे काशीके सुप्रसिद्ध "विश्व-पञ्चाङ्ग" में दैनिक ग्रह दिये जाने लगे हैं। परन्तु उनका होना न होना एक जैसा ही है। क्योंकि विश्व-पञ्चाङ्गके ये दैनिक ग्रह सूर्यसिद्धान्तीय स्थूल गणनाके हैं। दृक्तुल्य वेधसिद्ध सूक्ष्म निरयन ग्रहोंमें और विश्व-पञ्चाङ्गके ग्रहोंमें बड़ाभारी अन्तर रहता है। प्रमाणके लिए आप विश्व-पञ्चाङ्गकी दैनिक लग्न-सारिणीके नीचे लिखी हुई ग्रह युतिका दैनिक ग्रहोंके साथ मिलान करिये तो आपको आकाश पातालका अन्तर दिखाई देगा। उदाहरणार्थ वर्तमान वर्ष सं० १९९८ के विश्व-पञ्चाङ्ग पृष्ठ १६ पर आषाढ़ कृष्ण ११ शुक्रवारको "बुधशुक्रयुतिः रे० घं० १७।३०" लिखा है, किन्तु इसी दिन दैनिक ग्रहोंमें बुध राश्यादि २।१६।२५।३६ और शुक्र राश्यादि २।२५।५३।१६ लिखा है। यहां युतिके समय सूर्य-सिद्धान्तीय स्पष्टग्रहोंमें ९ अंशोंका अन्तर है। इसी प्रकार यदि पाठक मिलान करके देखेंगे तो प्रत्येक ग्रह युति और विश्व पञ्चाङ्गके ग्रहोंमें भारी अन्तर दिखाई देगा। वास्तवमें बात यह है कि यूरोपियन पञ्चाङ्ग Nautical Almanac में जो युति कालके घण्टे मात्र लिखे रहते हैं उसीमें ५ घण्टे ३० मिनट जोड़ा हुआ समय विश्व-पञ्चाङ्गमें लिखा जाता है, अस्तु। अब वर्तमान वर्ष सं० १९९८ में विश्व-पञ्चाङ्ग के गुरु शनिको ही ले लीजिए। इस वर्ष ग्रहलाघवीय, मकरन्दीय, केतकी, सर्वानन्दलाघवीयादि सभी पञ्चाङ्गोंमें आषाढ़ कृ० ८ से आषाढ़ कृ० १२ तक शनि निरयन वृषभ राशिका होगया है। परन्तु विश्व-पञ्चाङ्गमें दो मासके पश्चात् भाद्रपद कृ० १४ को शनि वृषभराशिमें जाता है। आगे भाद्रपद शु० ७ को (विश्व पञ्चाङ्गमें) बृहस्पति मिथुनराशिमें प्रवेश करता है; यह मार्ग० शु० ७ तक (३ मासतक) मिथुनमें ही रहेगा। किन्तु ग्रहलाघव, मकरन्द, ज्योतिर्गणित, केतकी, सर्वानन्द आदिकी गणितसे यहाँ बृहस्पति मिथुनराशिमें नहीं आता। उक्त गणितके सभी भारतीय पञ्चाङ्गोंमें सं० १९९८ में बृहस्पति वृषभराशिमें ह है, मिथुनका स्पर्शभी नहीं हुआ। परन्तु विश्व-पञ्चाङ्गकी मथुरा तीन लोकसे न्यारी ही है। गत सं० १९८४ में जब हरिद्वारका कुम्भमहापर्व हुआ था उस समय भी विश्व-पञ्चाङ्गमें कुम्भका बृहस्पति नहीं था। वहाँ सूर्यसिद्धान्तीय विश्व पञ्चाङ्गा-नुसार मीनके बृहस्पतिमें ह हरिद्वारका कुम्भपर्व हुआ था। ऐसे अवसर पर विश्व पञ्चाङ्गमें कुम्भ महापर्वोका कहीं उल्लेख तक भी नहीं होता। यह है विश्व-पञ्चाङ्ग के दैनिक ग्रहोंकी दयनीय दशा। क्या ही अच्छा होता यदि विद्वान् पञ्चाङ्गकर्ता जिस प्रकार विश्व-पञ्चाङ्गमें ग्रहयुति उदयास्त और सूर्य-चन्द्रग्रहण सूक्ष्मतम नवीन पद्धतिसे लगाते हैं, उसी प्रकार दैनिक ग्रह भी सूक्ष्म करदेते।

जन्मपत्र वर्षफल प्रश्न मुहूर्तादिमें जब तक स्पष्ट ग्रह सूक्ष्म दृक्तुल्य न होंगे तब तक फलादेश कभी यथार्थ नहीं मिल सकता। इसी लिए श्रीकेशवाचार्यजी ने अपनी जातकपद्धति (केशवी) के आरम्भमें ही लिखा है —

> "यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽथ खेटाः स्फुटाः
> यत्पक्षे हि घटन्त .... "

ब्रह्मसिद्धान्तमें लिखा है —

> संसाध्यं स्पष्टतरं बीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः।
> तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ॥

दामोदरपद्धतिमें भी लिखा है —

> यान्ति संसाधिताः खेटाः येन दृग्गणितैक्यताम्।
> तेन पक्षेण ते कार्याः स्फुटास्तत्समयोद्भवाः॥

बृहज्जातककी नौकाटीकामें भी लिखा है —

यदा यश्चैव सिद्धान्तो गणितो दृक्समो भवेत्।
तदा तेनैव संसाध्यं जातकं गणयेद् बुधः॥

श्रीमन्महादेवजीने भी पत्रीमार्गप्रदीपिकाके आरम्भ में ही लिखा है —

यत्पक्षे हि घटन्ति शुद्धखचराः कार्यास्तु तत्पक्षकाः।

इन प्रमाणोंसे स्पष्ट ही है कि जिस पक्षके ग्रह आकाशमें वेधसे प्रत्यक्ष घटित हों (दिखाई दें) उसी पक्षका उपयोग करना चाहिए। जो सज्जन सूर्यसिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघवादि प्राचीन स्थूल गणितके ग्रहोंका ही सर्वत्र उपयोग करनेका आग्रह करते हैं, वे बड़ी भारी भूल करते हैं। सूर्यसिद्धान्त ग्रहलाघवादिका केवल मात्र सूर्य प्रायः ठीक आता है (इसमें भी कुछ कलाओंका थोड़ा अन्तर तो आता ही है) अन्य सब ग्रहों में काल भेदके कारण बहुत (कई अंशों तकका) अन्तर पड़ गया है।

सूर्यसिद्धान्तमें ही लिखा है :—

शास्त्रमाद्यं तदेवेदं यत्पूर्वं प्राह भास्करः।
युगानां परिवर्तेन कालभेदोऽत्र केवलः॥

ग्रहलाघवकार श्रीगणेशदैवज्ञके समयमें ही सूर्यसिद्धान्तादि प्राचीन सिद्धान्तोंकी ग्रहगणितमें अन्तर आगया था, इसी कारण उन्होंने तत्कालीन ग्रहस्थितिको वेध द्वारा जांचकर नवीन करण ग्रन्थ ग्रहलाघवकी रचनाकी। उसमें उन्होंने लिखा है —

"सौरोऽर्कोऽपि विधूच्चमङ्ककलिकोनाब्जो गुरुस्त्वार्यजः"

ग्रहलाघव रचनाकालको भी आज ४२१ वर्ष होगये, अतः अब इसके ग्रहण समय और ग्रहोंके अंशादिकोंमें अन्तर आने लग गया है। ऐसी स्थितिमें अब भी प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय ग्रहों पर ही विश्वास करना कदापि बुद्धिसङ्गत नहीं कहा जा सकता। हां, सूर्यसिद्धान्तकी अपेक्षा तो ग्रहलाघव और मकरन्दके ग्रह फिर भी कुछ ठीक आते हैं। किन्तु वे भी आधुनिक कालके दृक्तुल्य सूक्ष्म नहीं कहे जा सकते। स्वयं श्रीगणेशदैवज्ञने—

कथमपि यदिदं चेद्भूरिकाले श्लथं स्यात्
मुहुरपि परिलक्ष्येन्दुग्रहाद्यक्षयोगात्।
सदमलगुरुतुल्यप्राप्तबोधप्रकाशैः
कथितसदुपपत्त्या शुद्धिकेन्द्रे प्रचाल्ये॥

यह लिखकर स्पष्ट किया है कि कभी कालान्तरमें जाकर मेरा यह गणित (ग्रहलाघव तिथिचिन्तामणि) भी शिथिल हो जाएगा; तब मर्मज्ञ विद्वान् चन्द्रमा व ग्रहोंकी युति तथा नक्षत्र-ग्रहयुति, ग्रहणादिकों को बारबार देखकर (वेध करके) सुन्दर शुद्ध उपपत्ति से इसमें चालन देवें। इसी प्रकार मकरन्दकारने भी अपने ग्रन्थ (मकरन्द सारणी) की स्थूलता स्पष्ट ही लिखी है। यथा—

"वक्रादिकं स्थूलमिदं मयोक्तं सुखार्थमेवेति न तद्यथार्थम्।"

जो सज्जन केवल प्राचीन आर्ष प्रणालीकी दुहाई देकर आधुनिक दृक्प्रतीतिप्रद करणग्रन्थ केतकी-ज्योतिर्गणित-ग्रहगणित-सर्वानन्दकरणादि को स्वीकार करनेमें आपत्ति करते हैं— उन्हें तो चाहिए कि वे ग्रहलाघव और मकरन्दको भी न मानें। क्योंकि ग्रहलाघवकारने भी तो सूर्यसिद्धान्त-आर्यसिद्धान्त-ब्रह्मसिद्धान्तादि की स्थूलता प्रकट करके तत्कालीन वेधसिद्ध दृक्प्रतीतिप्रद नवीन करणग्रन्थ ग्रहलाघव की रचना की थी। उसे तो सभी प्राचीन पक्षपाती आर्षाभिमानी लोग मानते हैं किन्तु आधुनिक करण-ग्रन्थ केतकी सर्वानन्दकरणादिकोंको माननेमें वे आपत्ति करते हैं, यह बड़े आश्चर्य की बात है। जैसा ग्रहोंमें अन्तर अपने समयमें श्रीगणेश दैवज्ञने देखकर ग्रहलाघवको रचनाकी थी, वैसा अन्तर आजकल वेधद्वारा प्रत्यक्ष देखकर केतकरादि आचार्योंने नवीन करणग्रन्थोंकी रचना की तो इसमें उन्होंने कौनसा गुरुतर अपराध या आर्षत्वको नष्ट कर दिया।

बहुतसे सज्जन केतकी आदि नवीन करण ग्रन्थों-के ग्रह-ग्रहण-उदयास्तादिक तो ले लेते हैं, परन्तु तिथ्यादि नहीं लेते। उनका कहना है कि—'ग्रह उदयास्त ग्रहणादि दृश्य पदार्थ तो आधुनिक दृग्गणित के ले लेने चाहिएँ और तिथ्यादि अदृष्ट पदार्थ प्राचीन

गणितके ही लेने चाहिएँ' इसके लिए वे कमलाकर भट्टका यह प्रमाण देते हैं—

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तित: कुरु।
गणितं यदि दृष्टार्थं तद् दृष्ट्युद्भवत: सदा॥

पाठक यदि विवेक पूर्वक विचार करेंगे तो उन्हें ज्ञात होगा कि तत्त्वविवेकसिद्धान्तके इस श्लोकमें कमलाकर भट्टने यह नहीं लिखा है कि— तिथ्यादि पञ्चाङ्ग (तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करण) सूर्यसिद्धान्तके ही लेने चाहिएँ। इस श्लोकमें तो केवल दृष्ट अदृष्ट पदार्थका उल्लेख है। वास्तवमें आचार्य कमलाकर भट्टका आशय तो यह है कि— "भूगर्भीय मध्यमादि अदृष्टग्रह सूर्यसिद्धान्तकी युक्तिसे करना और विषुवांश-क्रान्ति–याम्योत्तरलङ्घनकाल-भूपृष्ठीयग्रह-ग्रहण–उदयास्तादि प्रत्यक्ष वेधोपलब्ध युक्तिसे करने चाहिएँ"। कमलाकर भट्टके अतिरिक्त अन्य किसी भी आचार्यके ग्रन्थमें यह नहीं मिलता कि सर्वदा तिथ्यादि सूर्यसिद्धान्त की ही लेनी चाहिएँ। वास्तवमें कमलाकर भट्टका भी यह भाव नहीं है, अस्तु।

आजकल भारतमें अधिकतर ग्रहलाघवीय और मकरन्दीय पञ्चाङ्गोंका ही प्रचार है; इन सबमें सूर्यसिद्धान्तीय तिथ्यादि कहां होती हैं? यह मैं मानता हूं कि सूर्यसिद्धान्तका सूर्य प्राय: ग्रहलाघव मकरन्दके तुल्य ही है, परन्तु चन्द्रमामें तो अन्तर अवश्य है। ऐसी स्थितिमें जब सौरपक्षाभिमानी श्रीगणेशदैवज्ञके संस्कारित (शुद्ध किये हुए) सूर्य-चन्द्र परसे बनी हुई ग्रहलाघवीय तिथ्यादिकोंका सर्वत्र उपयोग करते हैं तो फिर इस समयके संस्कार दिये हुए सूर्य चन्द्रमा पर से बनी हुई सूक्ष्म तिथ्यादिकोंको माननेमें उनको क्यों आपत्ति होती है?

मैं तो तिथ्यादिकोंको भी अदृष्ट नहीं मानता। क्योंकि-जब ये दृष्टपदार्थ सूर्य-चन्द्रसे ही निष्पन्न होते हैं तब अदृष्ट कैसे? तिथि नक्षत्रका भी वेध हो सकता है, वह इस प्रकार कि जब हमें तिथि नक्षत्रका कोई ज्ञान न हो और नाहीं हमारे पास पञ्चाङ्ग हो तब हम केवल यन्त्रराज तुरीययंत्र या षष्ठ्यंशादि किसी भी सूक्ष्म यंत्रसे सूर्य चन्द्रका वेध लेकर तिथि-नक्षत्रादिका मान निकाल सकते हैं। ग्रहण मध्यकालमें तिथिका पूर्णरूपेण दृक्-प्रत्यय हो ही जाता है। ठीक पूर्णिमाकी समाप्ति और प्रतिपद्के आरम्भ (सन्धि) में चन्द्रग्रहणका मध्यकाल होता है।

"तिथि विरतिरयं ग्रहस्यमध्य:" (ग्र०ला०चं०धि०)

इसी प्रकार शुक्लपक्षकी प्रतिपदाको जब चन्द्रमा सूर्यसे १२ अंश या एक तिथि आगे निकल जाता है तो उसी दिन चन्द्रदर्शन हो जाता है, यह भी तो द्वितीया तिथिका ही प्रत्यक्ष दृक् प्रत्यय है। इसी कारण काशीके सुप्रसिद्ध ज्योतिश्शास्त्राचार्य स्व० महामहोपाध्याय श्री पं० बापूदेवजी शास्त्री, पूनाके स्व० लो० तिलक, तथा श्री केतकर आदिके कई पञ्चाङ्ग पूर्णरूपेण दृग्गणितके ही होते हैं, अर्थात् इनमें तिथ्यादि भी आधुनिक नवीन गणनानुसार ही लगाई जाती है। स्व० महामहोपाध्याय बापूदेवजी शास्त्री C. I. E. महोदय भारत में प्राच्य पाश्चात्य ज्योतिश्शास्त्रके एक अद्वितीय विद्वान् थे, ऐसे प्रतिभा सम्पन्न महापुरुषने अपने पञ्चाङ्गके विषय में जो निर्णय किया वह भलीभांति सोच समझकर ही किया होगा यह मानना पड़ेगा। इतना ही क्यों, अभी गत सं० १९९५ में अखिल भारतवर्षीय पञ्चाङ्ग संशोधन सभाके अध्यक्ष श्रीचुलैट महोदयने इन्दौर से जो "भारतविजय पञ्चाङ्ग" प्रकाशित किया था उसमें भी उन्होंने तिथ्यादि पञ्चाङ्ग दृक्पक्षीय नवीन गणनानुसार सूर्यचन्द्र साधन करके ही बनाया था। इतने पर भी अब जो सज्जन तिथ्यादिको अदृष्ट कह कर प्राचीन गणितानुसार करनेका ही आग्रह करते रहें तो इसे हठधर्मीके अतिरिक्त और क्या कहा जावे? अस्तु।

तिथ्यादिकोंको अदृष्ट मानकर प्राचीन गणितसे पञ्चाङ्ग बनाने या मानने वाले सज्जनोंको भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि ग्रह, उदयास्त, वक्रमार्ग, ग्रहणादिक तो प्रत्यक्ष दृग्गणितानुसार ही होने चाहिएँ। तदनुसार अब भारतके कुछ विद्वान् पञ्चाङ्गकर्ता अपने २ पञ्चाङ्गोंमें तिथ्यादि पञ्चाङ्ग सौरपक्ष (सूर्य-

सिद्धान्त मकरन्द ग्रहलाघवादि) से और ग्रहस्पष्ट गुरुशुक्रास्तोदय ग्रहणादि दृक्पक्ष (ज्योतिर्गणित केतकी ग्रहगणित सर्वानन्दकरणादि) से लगाने लगे हैं, यह प्रसन्नताकी बात है। परन्तु इन पञ्चाङ्गों में भी ये सूक्ष्म ग्रह पाक्षिक या साप्ताहिक (आठ २ दिनके) ही होते हैं। अच्छा हो यदि विद्वान् पञ्चाङ्ग-कर्ता महानुभाव इन्हें दैनिक बना देवें, अस्तु।

विश्व-पञ्चाङ्गमें भी सूर्य चन्द्रग्रहण गुरु शुक्रास्तोदय और ग्रहयुति नवीन दृक्तुल्य सूक्ष्म गणित या Nautical Almanac द्वारा ही लगाये जाते हैं। किन्तु यह बात मेरी समझमें नहीं आई कि जैसे ग्रहण, ग्रहयुति, अस्तोदयादि दृष्टपदार्थ हैं वैसे ही सूर्यादि सभी ग्रह बिम्ब भी तो प्रत्यक्ष दृष्ट वस्तु ही हैं। तब विश्व-पञ्चाङ्गकर्ता ग्रहोंको भी ग्रहणादिकी भांति नव न गणितसे न करके प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय गणितसे ही क्यों रखते हैं ? विज्ञपाठकोंको भी यह जानकर आश्चर्य होगा कि विश्व-पञ्चाङ्गके मतसे ग्रह अदृष्ट पदार्थ हैं। विश्व-पञ्चाङ्गकी भूमिका पृष्ठ २ कॉलम १ की १०वीं से १७वीं पंक्ति तक नीचे उद्धृत करता हूं :—

"............इसी कारण सूर्यसिद्धान्तमें लिखा है—

नक्षत्रग्रहयोगेषु ग्रहास्तोदयसाधने ।
शृङ्गोन्नतौ तु चन्द्रस्य दृक्कर्मादाविदं स्मृतम् ॥

अर्थात् ग्रहोंके योगमें, नक्षत्र ग्रहोंके योगमें, ग्रहणसाधनमें, उदयास्त साधनमें, चन्द्रमाके शृङ्गोन्नतिके साधनमें जिन संस्कारोंके द्वारा ग्रह देख पड़ें उन संस्कारोंको करके इन कार्योंको करना। परन्तु इतना जानने पर भी जो ग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता इसीको बनाने के लिए लिखा है।

तत्तद्गति वशान्नित्यं यथा दृक्तुल्यतां ग्रहाः।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥

यहां पर दृक्तुल्यका अर्थ यह है कि जिस ग्रहके द्वारा अदृष्ट जनित फलकी प्राप्ति हो तथा संसारमें ठीकठीक फलका परिणाम देखा जाय उस ग्रहका नाम वास्तव दृश्य है।"

विज्ञ वाचकवृन्द ! विश्व पञ्चाङ्गके इस उद्धरणमें रेखाङ्कित पंक्तियां विशेष रूपसे द्रष्टव्य हैं। "जो ग्रह दृष्टिगोचर नहीं होता उसीको बनानेके लिए लिखा है" यह अर्थ ऊपरके "नक्षत्रग्रहयोगेषु" श्लोकसे निष्पन्न नहीं होता और नाही "दृक्तुल्यतांग्रहाः" का अर्थ 'जिस ग्रहके द्वारा अदृष्ट फलकी प्राप्ति' हो सकता है। हां, खींचातानी करके स्वार्थ सिद्धिके लिए हठसे तो जो मनमें आवे वह अर्थ चाहे भले ही लिख देवें। इस अर्थ पर मुझे एक बात याद आई, वह यह कि—मैं एकबार पञ्जाबके एक अन्वेषक विद्वान् ज्योतिषीजी से मिला। वे नैय्यायिक और वैय्याकरण भी हैं, उन्होंने मुझे "जीव" शब्द का अर्थ "मृतसञ्जीविनी विद्यया मृतान्दैत्यान् यः जीवयति सः जीवः शुक्र इत्यर्थः" ऐसी व्युत्पत्ति करके बतलाया। किन्तु क्या कोई भी विद्वान् "जीव" का अर्थ बृहस्पति न मानकर शुक्र मानेगा ? कदापि नहीं। ऐसी ही बात मुझे तो "विश्वपञ्चाङ्ग" के उपर्युक्त लेखमें भी प्रतीत होती है।

क्या विद्वान् विश्वपञ्चाङ्गकर्ता अपने सूर्यसिद्धान्तीय अदृष्ट ग्रहोंसे संसारका शुभाशुभ भविष्य तथा जन्मपत्र वर्षफलादिका फलादेश ठीक ठीक बतलानेका विश्वास दिला सकते हैं ? यदि नहीं, तो फिर उनके इन सूयसिद्धान्तीय अदृष्ट ग्रहोंसे जनता को क्या लाभ होगा ? जन्मपत्रादिका फलादेश सर्वदा सूर्यसिद्धान्तीय अदृष्टग्रहोंसे ही यथार्थ ठीक २ मिलता तो फिर श्री केशवाचार्यजीको अपनी जातक-पद्धति (केशवी) में—

"अत्र खेटा स्फुटाः यत्पक्षे हि घटन्त" इत्यादि लिखने की क्या आवश्यकता थी ? एक साधारण जनसे लेकर सम्राट् तक अपना २ जन्मपत्र वर्षफल प्रश्नादि केवल फलादेश जानने के लिए ही तो बनवाते या दिखलाते हैं और उन्हीं (जन्मपत्रादिकों) में तत्कालीन दृक्प्रतीतिप्रद सूक्ष्म ग्रह लेनेकी हमारे सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन आचार्यों की आज्ञा है।

किन्तु कितने खेदकी बात है कि–जिन भारतीय पञ्चाङ्गों पर यह सब कार्य अवलम्बित है उन्हींकी ऐसी अस्तव्यस्त दशा है। जब पञ्चाङ्गोंकी ग्रह स्थिति ही ठीक सूक्ष्म न होगी, तब उन परसे बने हुए जन्मपत्र वर्षपत्र प्रश्न मुहूर्तादिका फलादेश कैसे ठीक मिलेगा ? परन्तु इस प्रश्नकी ओर आजतक किसी भी पञ्चाङ्गकर्ता विद्वान् महानुभावने पूर्ण रूपसे ध्यान देकर कोई स्थाई कार्य आरम्भ नहीं किया ?

इस महान् त्रुटिको दूर करनेके लिए हमारा कई दिनोंसे विचार हो रहा था। तदनुसार "श्रीस्वाध्याय" के प्रथमाङ्कमें ही इस अभाव पूर्तिके रूप में सं० १९९९ के दैनिक दृग्गणितैक्य सूक्ष्म निरयन ग्रह विज्ञ पाठकोंको भेंट कर रहे हैं। यूरोपियन पञ्चाङ्गोंमें जो दो नवीन ग्रह हर्शल नेपच्यून Herschel Neptune या वरुण इन्द्र दिये जाते हैं, वे भी हमने दे दिये हैं। अनुभव द्वारा देखा गया है कि उक्त दोनों नव्यग्रह फलादेशके लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। दैनिक सूर्यचन्द्रके साथ ही साथ हमने प्रतिदिनकी रविक्रान्ति चन्द्रक्रान्ति और चन्द्र शर भी देदिया है। प्रत्येक पत्तके नीचे अन्तमें उसी पृष्ठपर भौमादि सप्ततारा ग्रहोंकी क्रान्ति और शर भी तीन २ दिनका देदिया गया है। ग्रहोंके योग प्रतियोगादिमें शर क्रान्तिकी बड़ी आवश्यकता होती है और युद्धमें ग्रहोंका जयपराजय ज्ञान भी शर द्वारा ही होता है। एवं वेधमें तो इनकी (शर क्रांतिकी) परम आवश्यकता होती है। एतदर्थ यह उपयोगी गणित भी हमने परिश्रम पूर्वक साथ ही देदिया है। भारतीय पञ्चाङ्गोंमें इसका नितान्त अभाव होता है। अतः आशा है हमारे इस परिश्रमसाध्य प्रयाससे सहृदय विद्वान् अवश्य सन्तुष्ट होंगे।

अब हम आपको यह बतला देना भी आवश्यक समझते हैं कि हमारे ये दैनिकग्रह कहांके ? (कितने अक्षांश रेखांश वाले नगरके ?) किस समयके ? और किस ग्रन्थके गणित द्वारा बनाये गये हैं ?

भारतमें इन्द्रप्रस्थ नगर (देहली)का प्रधान स्थान है। प्राचीन एवं अर्वाचीन कालमें यही भारतकी राजधानी रही है और यहांसे (दिल्लीसे) युक्तप्रान्त पंजाब राजस्थान आदि कई प्रान्त प्रायः समीप २ ही पड़ते हैं, इस कारण हमने देहलीके मध्यमार्कोदय कालीन दैनिक स्पष्टग्रह दिये हैं। अर्थात् देहलीमें स्थानिक Local ६ बजे प्रातःकालके प्रतिदिनके ग्रह स्पष्ट दिये गये हैं।

गणित सर्वानन्दकरणके अनुसार किया गया है। 'सर्वानन्दकरण' श्री ६ गुरुवर स्व०प्रिं०आपटेसाहबका निर्माण किया हुआ है। यह ग्रन्थ बनारस गवर्नमेण्ट कालेजकी आचार्य परीक्षामें भी नियुक्त होचुका है। इसके द्वारा गणित करनेसे सायनग्रह यूरोपियन पञ्चाङ्गों (Nautical Almanac आदि) के बराबर आते हैं। सायनग्रहोंमें से अयनांश २२°।५६'।४७" हीन करके निरयन दैनिक ग्रह हमने रक्खे हैं। आगामी वर्ष सं० १९९९के आरम्भमें सूर्यसिद्धान्तीय निरयन सूर्य और सर्वानन्दकरणके सायन सूर्यका अन्तर २२°।५६'। ४७" आताहै। इसी प्रकार सूर्यसिद्धान्तीय मध्यमसूर्य और पाश्चात्य न्यूकॉम्ब मत Nautical Almanac के सायनमध्यमसूर्यका अन्तर भी प्रायः इतना ही आता है, अतः यही युक्तियुक्त शुद्ध अयनांश है। यदि आप "श्रीस्वाध्याय"के इन दैनिकग्रहोंका किसी यूरोपियन पञ्चाङ्गके साथ मिलान या संतुलन करना चाहें तो पहले इनमें २२°।५६'।४७" अयनांश जोड़ कर सायन बना लीजिए, तब आपको स्वयमेव ज्ञात हो जाएगा कि हमारे ये दैनिक ग्रह कितने सूक्ष्म और शुद्ध हैं। यूरेन्स (हर्शल) नेपच्यून सहित ११ दैनिक ग्रह शर क्रान्ति सहित और वह भी आधुनिक नवीनतम सूक्ष्मगणित द्वारा ज्याचाप कर्मसे बनाना कोई साधारण बात नहीं है। जो विद्वान् पञ्चाङ्गकर्ता केवल पाक्षिक या आठआठ दिनकी अवधियोंके सूक्ष्म दृश्य ग्रहमात्र ही बनाते हैं उनको भी पर्याप्त परिश्रम उठाना पड़ता है, तो फिर ऐसे दैनिक ग्रह क्रान्ति तथा शरके सहित बनानेमें कितना परिश्रम और समय लगताहोगा ? यह तो वही लोग भलीभांति जान सकते हैं जिन्होंने आधुनिक नवीन गणित ज्योतिश्शास्त्रका कुछ अध्ययन किया होगा, अस्तु।

"श्रीस्वाध्याय"के इन दैनिक सूक्ष्म ग्रहोंका सारा श्रेय हमारे सतीर्थ्य (गुरुभाई) लश्कर (ग्वालियर) निवासी श्रीयुत पं०सखाराम पुरुषोत्तमजी जोशीको है। आपहीने परिश्रमपूर्वक यह दैनिक ग्रह बनाकर हमारे पास भेजे हैं, उनको 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा हम आप तक पहुंचानेमें समर्थ हुए हैं। समझमें नहीं आता कि इस सौजन्यपूर्ण सहायताके लिए हम भाई श्रीसखारामजी का किन शब्दोंमें धन्यवाद करें। हमारे धन्यवादकी अपेक्षा 'श्रीस्वाध्याय'के पाठक ज्योतिश्शास्त्रज्ञ विद्वान् उनके परिश्रमकी परीक्षा करके जो आशीर्वाद या धन्यवाद देंगे वह उनके लिए अधिक मूल्यवान् होगा। हमारे तो वे अभिन्नमित्र एवं गुरुभाई हैं, अतः हमारा धन्यवाद करना तो अपना ही धन्यवाद कहलायेगा। इस लिए यह भार हम विज्ञ पाठकों पर ही छोड़ते हैं।

अब हम आपको 'श्रीस्वाध्याय'के दैनिकग्रह देखनेकी युक्ति और उनका उपयोग भी बतला देते हैं। अगले एकएक पृष्ठमें पूरे एक पक्ष या १५ दिनके ग्रह प्रतिपदासे पूर्णिमा और अमावास्या तकके दिये गयेहैं। पृष्ठके उपरि पूर्वार्धके पहले खानेमें सर्वानन्दकरणका अहर्गण, दूसरे खानेमें तिथि, तीसरेमें वार, चौथेमें सूर्यस्पष्ट (राशि-अंश-कला-विकला) पांचवेंमें सूर्यक्रान्ति (अं० क०) छठेमें चन्द्रस्पष्ट (रा० अं० क०) सातवेंमें चन्द्रक्रान्ति (अं० क०) आठवेंमें चन्द्रशर (अं० क०) ९वेंमें मङ्गलस्पष्ट (रा० अं० क०) दशवें खानेमें अंग्रेजी तारीख दी गई है। इसी प्रकार पृष्ठके अधोभाग (उत्तरार्ध) में पहिले खानेमें (उसी पक्षकी) तिथि, दूसरेमें वार, तीसरेमें बुधस्पष्ट (रा० अं० क०) चौथेमें गुरु (बृहस्पति) स्पष्ट (रा० अं० क०) पांचवेंमें शुक्र (रा० अं० क०) छठेमें शनि (रा० अं० क०) सातवेंमें राहु (रा० अं० क०) आठवेंमें हर्शल (रा० अं० क०) ९वेंमें नेपच्यून (रा० अं० क०) और दशवेंमें अंग्रेजी तारीख दी गई है। राशियां प्रत्येक ग्रहके आरम्भमें ही (ग्रहके नीचे साथ ही) लिख दी गई हैं। तिथियोंके सामने प्रत्येक ग्रहके केवल अंश कलादि दिये हुए हैं, राशि आरम्भमें ऊपर लिखी हुई समझना चाहिए। जहां जिस तिथिको जो ग्रह दूसरी राशिमें गया है वहां उस राशिका नाम भी लिख दिया गया है। जैसे सं० १९९९ चैत्र शु० ११ शनिवार ता० २८ मार्च १९४२ को देहलीमें प्रातः ६ बजे (मध्यमार्कोदय समयमें) सूक्ष्म शुक्र स्पष्ट मकर राशिके २८ अंश ४१ कला है और दूसरे दिन १२ रविवार ता० २९ मार्चको प्रातः कुम्भराशिके ० अंश २१ कला है। इस दिन शुक्र राशि बदल गया है इस कारण ०।२१ के पहले "कुं" लिखदिया है। इसी प्रकार चैत्र शु० ८ बुधवार ता० २५ मार्चके सामने मङ्गलके नौवें खानेमें १७-३३ लिखा है और ऊपर राशि वृषभ लिखी है, इसका अर्थ यह हुआ कि अष्टमी को प्रातः ६ बजे मंगल स्पष्ट राश्यादि १-१७ ३३ (वृषभके १७ अं० ३३ क०) है। यह मंगल वैशाख कृष्ण ३० बुधवार ता० १५ अप्रैलको प्रातः मिथुनके ० अंश १३ कला हुआ है, इससे पहले दिन १४ अप्रैलको २९-२७ वृषभके ही हैं। इसी प्रकार सब ग्रहोंको समझना चाहिए। चन्द्रमाके साथ प्रतिदिनकी राशियां लिख दी गई हैं।

गति जाननेका प्रकार यह है कि— दो दिनके (इष्टदिन और उससे आगामी दिनके) ग्रहका जो अंश कलादि अन्तर है वही स्पष्ट गति होगी। जैसे हमने चैत्र शु० ८ बुधवार ता० २५ मार्चको ही सूर्य-चन्द्र- मंगलकी स्पष्ट गति जाननी है, तो चै० शु० ८ के स्पष्ट सूर्य मीनके १०-४५-५७ को अगले

दिन ६ गुरुवारके स्पष्ट सूर्य मीनके ११-४५-२३ में से हीन किया तो कलादि ५६-२६ यह चै० शु० ८ बुधवारको सूर्यकी स्पष्टगति हुई। इसी प्रकार अष्टमीके चन्द्रमा मिथुनके १०-४६ को नवमीके चन्द्र मिथुनके २२-४७ में से हीन किया तो अंशादि १२।१ या ७२१ कला चन्द्रमाकी स्पष्ट गति हुई। एवमेव मंगलकी गति ३६ कला आती है। इसी प्रकार सर्वत्र सब ग्रहोंकी सूक्ष्म गति समझें। मध्यमार्कोदय (प्रातः लोकल ६ बजे) से अपना इष्ट समय जितना अधिक या न्यून हो उतने समयका दैनिक गतिसे चालन देने पर तत्कालीन (इष्ट समयका) दृक् तुल्य सूक्ष्म निरयन-ग्रह तैयार हो जावेगा। बल्कि यह कार्य तो बहुत थोड़े प्रयासमें अंगुलियों पर गिननेसे ही हो जावेगा। इसको विद्वान् तो भलीभांति जानते ही हैं। केवल सर्वसाधारण जनताको समझानेके लिए ही दैनिक ग्रह और गति आदि जाननेकी यह युक्ति इतनी विस्तारसे लिखी गई है, अस्तु।

जो सज्जन यूरोपियन (अंग्रेजी) पञ्चाङ्गोंसे ग्रहोंका काम लेते हैं उन्हें पहले तो ५ घण्टे ३० मिनट का संस्कार देकर यहां का (भारतीय) बनाना पड़ता है, तदनन्तर एक अयनांश स्थिर करके वह घटाना पड़ता है तब निरयन ग्रह बनता है। दूसरी बात यह भी है कि Ephemeris, Nautical Almanac आदि यूरोपियन पञ्चाङ्ग बहुत देरसे अंग्रेजी वर्षारम्भ से प्रायः एक-दो मास पहले नवम्बर दिसम्बर तक भारतमें पहुंचते हैं, तथा अब तो वर्तमान महायुद्धके कारण इनका मिलना या समय पर भारतमें पहुंचना और भी कठिन होगया है। इन्हीं सब कठिनाइयोंको दूर करनेके लिए ही हम आपको ६ मास पहले अंग्रेजी पञ्चाङ्गोंके प्रतिस्पर्धी यह भारतीय दैनिक ग्रह भेंट कर रहे हैं। इन दैनिक ग्रहोंमें आपको सर्व प्रकारकी सुविधा मिलेगी। कोई भी वस्तु घटाने जोड़नेकी बाधा नहीं है और न उन यूरोपियन पञ्चाङ्गों जितना इस पर आपको अधिक मूल्य ही खर्चना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी न जानने वाले सभी देशबन्धु तथा प्राचीन ज्योतिर्विन्महानुभाव भी इसके द्वारा लाभ उठा सकेंगे।

आशा है "श्रीस्वाध्याय" के प्रेमी पाठक सहृदय विद्वान् महानुभाव हमारे इस परिश्रमसाध्य नवीन कार्यसे अवश्य ही प्रसन्न होंगे और कदाचित् कहीं मनुष्यधर्मानुसार कोई त्रुटि रह गई हो तो उसे सुधार कर हमें सूचित करनेकी कृपा करेंगे।

स्यादेव मेऽलसतया मतिमान्द्यतो वा
दोषः क्वचित्क्वचिदथापि न कापि शङ्का।
नैसर्गिकी खलु गुणीकरणप्रवीणा
शक्तिः सदा विजयते भुवि सज्जनानाम् ॥



दैनिक ग्रह— सं० १९९९ शकः १८६४ चैत्र शुक्ल पक्षः १ सन् १९४२ ई०

(गणितकर्ता—श्री पं० सखाराम पुरुषोत्तम जोशी, निम्बालकर गोठ लश्कर ग्वालियर)

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य मीन अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल वृषभ अं०	क०	अं० ता० मा०
१८३०	१	मङ्गल	२	४९	५	१	४१	मीन	२	५५	२	४२	१	८	१२	४७	१७
१८३१	२	बुध	३	४९	५	१	१७	,,	१५	४८	उ१	२३	२	१६	१३	२३	१८
१८३२	३	गुरु	४	४८	३६	०	५४	,,	२८	२६	५	२०	३	१५	१३	५८	१९
१८३३	३	शुक्र	५	४७	३३	०	३०	मेष	१०	५१	८	५८	४	४	१४	३४	२०
१८३४	४	शनि	६	४७	५२	०	६	,,	२३	२	१२	९	४	४०	१५	१०	२१
१८३५	५	रवि	७	४७	२७	उ०	१८	वृषभ	५	४	१२	४७	५	४	१५	४६	२२
१८३६	६	सोम	८	४६	५९	०	४१	,,	१६	५९	१६	४५	५	१५	१६	२१	२३
१८३७	७	मङ्गल	९	४६	४९	१	५	,,	२८	५२	१८	०	५	१२	१६	५७	२४
१८३८	८	बुध	१०	४५	५७	१	२९	मिथुन	१०	४६	१८	२८	४	५५	१७	३३	२५
१८३९	९	गुरु	११	४५	२३	१	५२	,,	२२	४७	१८	७	४	२६	१८	९	२६
१८४०	१०	शुक्र	१२	४४	४६	२	१६	कर्क	४	५८	१६	५५	३	४५	१८	४५	२७
१८४१	११	शनि	१३	४४	७	२	३९	,,	१७	२६	१४	५४	२	५१	१९	२१	२८
१८४२	१२	रवि	१४	४३	२६	३	३	सिंह	०	१२	१२	६	१	४९	१९	५७	२९
१८४३	१३	सोम	१५	४२	४२	३	२६	,,	१३	२१	८	३७	०	३८	२०	२३	३०
१८४४	१४	मङ्गल	१६	४१	५६	३	४९	,,	२६	५४	४	३५	उ०	३६	२१	९	३१
१८४५	१५	बुध	१७	४१	९	४	१३	कन्या	१०	४९	०	११	१	५०	२१	५६	१

ति	वार	बुध कुम्भ अं०	क०	गुरु वृषभ अं०	क०	शुक्र मकर अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० मार्च
१	मङ्गल	७	२	२०	५५	२०	३१	१	८	१९	५६	४	९	५	३८	१७
२	बुध	८	२२	२१	२	२१	१०	१	१३	१९	५२	४	११	५	३६	१८
३	गुरु	९	४४	२१	१०	२१	५१	१	१८	१९	४९	४	१३	५	३५	१९
३	शुक्र	११	७	२१	१७	२२	३३	१	१९	१९	४६	४	१५	५	३३	२०
४	शनि	१२	३१	२१	१५	२३	१६	१	२४	१९	४३	४	१७	५	३२	२१
५	रवि	१३	५७	२१	३३	२३	५९	१	३०	१९	३९	४	२०	५	३०	२२
६	सोम	१५	२५	२१	४१	२४	४४	१	३६	१९	३६	४	२२	५	२९	२३
७	मङ्गल	१६	५४	२१	४९	२५	३०	१	४१	१९	३३	४	२४	५	२७	२४
८	बुध	१८	२४	२१	५७	२६	१६	१	४७	१९	३०	४	२७	५	२५	२५
९	गुरु	१९	५६	२२	५	२७	४	१	५३	१९	२७	४	२९	५	२३	२६
१०	शुक्र	२१	३०	२२	१४	२७	५२	१	५९	१९	२४	४	३१	५	२२	२७
११	शनि	२३	४	२२	२२	२८	४१	२	४	१९	२०	४	३३	५	२०	२८
१२	रवि	२४	४०	२२	३१	कु०	२१	२	१०	१९	१७	४	३५	५	१९	२९
१३	सोम	२६	१८	२२	४०	१	१२	२	१६	१९	१४	४	३७	५	१७	३०
१४	मङ्गल	२७	५६	२२	४९	२	५	२	२२	१९	११	४	४०	५	१६	३१
१५	बुध	२९	३६	२२	५९	२	५७	२	२९	१९	१०	४	४२	५	१४	१

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मा.
१	मं.	१	२६	२२	४१	१	४३	१३	२३	०	२१	२२	७	४	१४	१२	४३	१	५५	१६	५३	०	११	१९	२०	१	२१	१	४८	१७
३	शु.	१	२६	२२	५९	१	५८	१२	१०	०	२०	२२	११	३	४८	१२	३४	१	५३	१७	१	०	११	१९	२१	१	२१	१	५०	२०
६	सो	१	२६	२३	१६	२	१०	१०	४६	०	२०	२२	१५	३	२१	१२	२१	१	५३	१७	५	०	११	१९	२२	१	२१	१	५२	२३
९	गु.	१	२७	२३	३२	२	१८	९	१८	०	१९	२२	१९	२	५६	१२	३	१	५३	१७	१०	०	११	१९	२३	१	२१	१	५४	२६
१२	र.	१	२७	२३	४७	२	२१	७	४३	०	१८	२२	२३	२	३१	११	३९	१	५२	१७	१५	०	११	१९	२४	२	२१	१	५६	२९
१५	बु.	१	२७	२४	०	द२	२२	५	७	०	१७	२२	२५	२	७	११	११	१	५१	१७	२१	०	११	१९	२८	१	२१	१	५८	१

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ वैशाख कृष्ण पक्षः २ मई १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य मीन अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल वृषभ अं०	क०	अं० ता० अप्रै०
१८४६	१	गुरु	१८	४०	१९	४	३६	कन्या	२५	३	४	१८	२	५९	२२	२२	२
१८४७	२	शुक्र	१९	३९	२७	४	५९	तुला	९	३३	८	३७	३	५७	२२	५८	३
१८४८	३	शनि	२०	३८	३३	५	२२	,,	२४	११	१२	२७	४	४१	२३	३४	४
१८४९	४	रवि	२१	३७	३३	५	४५	वृश्चक	८	५१	१५	३१	५	६	२४	१०	५
१८५०	५	सोम	२२	३६	४०	६	८	,,	२३	२६	१७	३५	५	१२	२४	४६	६
१८५१	७	मङ्गल	२३	३५	४०	६	३०	धनु	७	५१	१८	३०	४	५७	२५	२२	७
१८५२	८	बुध	२४	३४	४०	६	५३	,,	२२	२	१८	१३	४	२५	२५	५८	८
१८५३	९	गुरु	२५	३३	४०	७	१५	मकर	५	५७	१६	५१	३	३७	२६	३५	९
१८५४	१०	शुक्र	२६	३२	३२	७	३८	,,	१९	३७	१४	३१	२	३८	२७	११	१०
१८५५	११	शनि	२७	३१	२६	८	०	कुम्भ	३	१	११	२६	१	३१	२७	४७	११
१८५६	१२	रवि	२८	३०	१९	८	२२	,,	१६	१२	७	५०	०	२१	२८	२४	१२
१८५७	१३	सोम	२९	२९	९	८	४४	,,	२९	१०	३	५४	द०	५०	२९	०	१३
१८५८	१४	मङ्गल	मे.	२७	५८	९	६	मीन	११	५६	उ०	९	१	५६	२९	२७	१४
१८५९	३०	बुध	१	२६	५४	९	२७	,,	२४	३१	४	८	२	५६	मि	१३	१५

ति०	वार	बुध मीन अं०	क०	गुरु वृषभ अं०	क०	शुक्र कुम्भ अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० अप्रै०
१	गुरु	१	१८	२३	८	३	५०	२	३५	१९	९	४	४५	५	१२	२
२	शुक्र	३	१	२३	१७	४	४३	२	४१	१९	८	४	४७	५	१०	३
३	शनि	४	४५	२३	२७	५	३८	२	४८	१९	५	४	४९	५	९	४
४	रवि	६	३१	२३	३६	६	३३	२	५४	१९	२	४	५२	५	७	५
५	सोम	८	१८	२३	४६	७	२८	३	१	१८	५८	४	५६	५	६	६
७	मङ्गल	१०	७	२३	५६	८	२४	३	८	१८	५५	४	५९	५	४	७
८	बुध	११	५७	२४	६	९	२०	३	१४	१८	५२	५	४	५	३	८
९	गुरु	१३	४९	२४	१६	१०	१७	३	२१	१८	४९	५	७	५	१	९
१०	शुक्र	१५	४२	२४	२६	११	१४	३	२७	१८	४६	५	१०	५	०	१०
११	शनि	१७	३७	२४	३६	१२	१२	३	३४	१८	४३	५	१४	४	५९	११
१२	रवि	१९	३३	२४	४६	१३	१०	३	४१	१८	३९	५	१६	४	५७	१२
१३	सोम	२१	३१	२४	५६	१४	[illegible]	३	४८	१८	३६	५	१९	४	५५	१३
१४	मङ्गल	२३	३०	२५	६	१४	५२	३	५५	१८	३३	५	२३	४	५३	१४
३०	बुध	२५	३२	२५	१७	१५	८	४	२	१८	३०	५	२४	४	५२	१५

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं० ता० अ०
३	शा.	१	२७	२४	१२	२	१७	३	०	०	१७	२२	२८	१	४५	१०	३९	१	५१	१७	२५	०	११	१९	३०	१	२१	२	०	४
७	मं.	१	२७	२४	२२	२	७	उ०	४४	०	१७	२२	३१	१	२३	१०	२	१	५०	१७	३१	०	११	१९	३२	१	२१	२	३	७
१०	शु.	१	२७	२४	३२	१	५४	१	४२	०	१६	२२	३५	१	२	९	२२	१	५०	१७	३६	०	११	१९	३४	१	२१	२	५	१०
१३	सो	१	२७	२४	४०	१	३५	४	१४	०	१६	२२	३८	०	४२	८	३७	१	४९	१७	४१	०	११	१९	३६	१	२१	२	७	१३

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ वैशाख शुक्लपक्षः ३ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य मेष अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्र क्रांति उत्तर अं०	क०	चद्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल मिथुन अं०	क०	अंग्रेजी तारीख अप्रैल
१८६०	१	गुरु	२	२५	१६	९	४९	मेष	६	५४	७	५३	३	४६	०	४८	१६
१८६१	२	शुक्र	३	२४	११	१०	१०	,,	१९	९	११	१५	४	२६	१	२५	१७
१८६२	३	शनि	४	२२	५२	१०	३१	वृषभ	१	१५	१४	६	४	५२	२	१	१८
१८६३	४	रवि	५	२१	३१	१०	५२	,,	१३	१३	१६	१९	५	६	२	३७	१९
१८६४	५	सोम	६	२०	७	११	१३	,,	२५	७	१७	५०	५	६	३	१४	२०
१८६५	६	मङ्गल	७	१८	४२	११	३४	मिथुन	६	५८	१८	३४	४	५३	३	५०	२१
१८६६	७	बुध	८	१७	१४	११	५४	,,	१८	५१	१८	२९	४	२७	४	२७	२२
१८६७	७	गुरु	९	१५	४४	१२	१५	कर्क	०	४९	१७	३५	३	५०	५	३	२३
१८६८	८	शुक्र	१०	१४	१२	१२	३५	,,	१२	५८	१५	५२	३	२	५	३३	२४
१८६९	९	शनि	११	१७	३८	१२	५४	,,	२५	२२	१३	२३	२	४	६	१६	२५
१८७०	१०	रवि	१२	११	२	१३	१४	सिंह	८	६	१०	११	०	५९	६	५३	२६
१८७१	११	सोम	१३	९	२३	१३	३३	,,	२१	१५	६	२४	उ०	१२	७	३०	२७
१८७२	१२	मङ्गल	१४	७	४३	१३	५३	कन्या	४	५०	२	९	१	३	८	६	२८
१८७३	१३	बुध	१५	६	०	१४	१२	,,	१८	५४	द२	२०	२	३३	८	४३	२९
१८७४	१५	गुरु	१६	४	१६	१४	३०	तुला	३	२३	६	५०	३	३४	९	२०	३०

ति.	वार	बुध मीन अं०	क०	गुरु वृषभ अं०	क०	शुक्र कुम्भ अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० अप्रैल
१	गुरु	२७	३२	२५	२८	१६	७	४	१५	१८	२०	५	२६	४	५०	१६
२	शुक्र	२९	३५	२५	३९	१७	७	४	२२	१८	१७	५	२९	४	४९	१७
३	शनि	मे१	३९	२५	५०	१८	७	४	२९	१८	१४	५	३२	४	४८	१८
४	रवि	३	४४	२६	१	१९	७	४	३६	१८	१०	५	३५	४	४७	१९
५	सोम	५	५०	२६	१२	२०	८	४	४३	१८	७	५	३९	४	४५	२०
६	मङ्गल	७	५७	२६	२४	२१	९	४	५०	१८	४	५	४२	४	४४	२१
७	बुध	१०	५	२६	३५	२२	११	४	५७	१८	१	५	४५	४	४२	२२
७	गुरु	१२	१३	२६	४६	२३	१२	५	४	१७	५८	५	४८	४	४१	२३
८	शुक्र	१४	२२	२६	५७	२४	१४	५	११	१७	५५	५	५१	४	३९	२४
९	शनि	१६	३०	२७	९	२५	१६	५	१९	१७	५१	५	५४	४	३८	२५
१०	रवि	१८	३८	२७	२०	२६	१९	५	२६	१७	४८	५	५८	४	३७	२६
११	सोम	२०	४५	२७	३२	२७	२१	५	३३	१७	४५	६	१	४	३६	२७
१२	मङ्गल	२२	५१	२७	४३	२८	२४	५	४१	१७	४२	६	४	४	३४	२८
१३	बुध	२४	५६	२७	५५	२९	२७	५	४८	१७	३९	६	८	४	३३	२९
१५	गुरु	२६	५९	२८	७	मी.	३१	५	५६	१७	३६	६	११	४	३२	३०

ति	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. अ.
१	गु.	१	२७	२४	४४	१	१२	६	५३	०	१५	२२	४१	०	२४	७	४६	१	४६	१७	४६	०	११	१९	३८	१	२१	२	८	१६
४	र.	१	२७	२४	४९	०	४६	९	३५	०	१५	२२	४४	०	६	६	५७	१	४८	१७	५१	०	११	१९	४०	१	२१	२	१०	१९
७	बु.	१	२६	२४	५२	०	१६	१२	१७	०	१४	२२	४७	द०	११	६	२	१	४८	१७	५६	०	१०	१९	४२	१	२१	२	१२	२२
९	शा.	१	२६	२४	५३	उ०	१६	१४	५४	०	१४	२२	५०	०	२६	५	४	१	४७	१८	२	०	१०	१९	४४	१	२१	२	१३	२५
१२	मं.	१	२६	२४	५२	०	४८	१७	२१	०	१४	२२	५३	०	४१	४	३	१	४७	१८	७	०	१०	१९	४७	१	२१	२	१४	२८

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ प्र० ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ४ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य मेष अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र तुला रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति दक्षिण अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल मिथुन अं०	क०	अं० ता० मई
१८७५	१	शुक्र	१७	२	३०	१४	४९	तुला	१८	१२	११	१	४	२२	९	५६	१
१८७६	२	शनि	१८	०	४२	१५	७	वृश्चिक	३	१५	१४	३३	४	५३	१०	३३	२
१८७७	३	रवि	१८	५८	५२	१५	२५	,,	१८	२०	१७	७	५	४	११	९	३
१८७८	४	सोम	१९	५७	१	१५	४३	धनुः	३	१८	१८	३०	४	५४	११	४६	४
१८७९	५	मङ्गल	२०	५५	८	१६	०	,,	१८	१	१८	३६	४	२५	१२	२३	५
१८८०	६	बुध	२१	५२	१५	१६	१७	मकर	२	२३	१७	३०	३	३९	१२	५९	६
१८८१	७	गुरु	२२	५१	१९	१६	३४	,,	१६	२३	१५	२०	२	४१	१३	३६	७
१८८२	८	शुक्र	२३	४९	५२	१६	५१	,,	२९	५९	१२	२२	१	३५	१४	१३	८
१८८३	९	शनि	२४	४७	२४	१७	७	कुम्भ	१३	५४	८	५०	०	२६	१४	५०	९
१८८४	१०	रवि	२५	४५	२५	१७	२४	,,	२६	११	४	५७	द०	४३	१५	२६	१०
१८८५	११	सोम	२६	४३	२४	१७	३९	मीन	८	५३	०	५५	१	४८	१६	३	११
१८८६	१२	मङ्गल	२७	४१	२२	१७	५५	,,	२१	२२	उ३	५	२	४७	१६	४०	१२
१८८७	१३	बुध	२८	३९	२९	१८	१०	मेष	-३	४१	६	५४	३	३७	१७	१७	१३
१८८८	१४	गुरु	२९	३७	१४	१८	२५	,,	१५	५२	१०	२४	४	१६	१७	५३	१४
१८८९	३०	शुक्र	वृ०	३५	८	१८	४०	,,	२७	५६	१३	२५	४	४३	१८	३०	१५

ति०	वार	बुध मेष अं०	क०	गुरु वृषभ अं०	क०	शुक्र मीन अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० मई
१	शुक्र	२९	०	२८	१९	१	३५	६	३	१७	३२	६	१४	४	३१	१
२	शनि	वृ०	५९	२८	३१	२	३९	६	११	१७	२९	६	१७	४	३०	२
३	रवि	२	५६	२८	४३	३	४३	६	१८	१७	२६	६	२०	४	२९	३
४	सोम	४	५१	२८	५५	४	४७	६	२५	१७	२३	६	२४	४	२८	४
५	मङ्गल	६	४२	२९	७	५	५२	६	३३	१७	२०	६	२८	४	२७	५
६	बुध	८	३०	२९	२०	६	५६	६	४०	१७	१७	६	३१	४	२६	६
७	गुरु	१०	१५	२९	३२	८	२	६	४९	१७	१३	६	३५	४	२५	७
८	शुक्र	११	५७	२९	४५	९	७	६	५७	१७	१०	६	३८	४	२४	८
९	शनि	१३	३५	२९	५७	१०	१३	७	५	१७	७	६	४२	४	२३	९
१०	रवि	१५	१०	मि	१०	११	१८	७	१२	१७	४	६	४५	४	२२	१०
११	सोम	१६	४१	०	२२	१२	२४	७	२०	१७	१	६	४९	४	२१	११
१२	मङ्गल	१८	८	०	३५	१३	३०	७	२७	१६	५८	६	५२	४	२०	१२
१३	बुध	१९	३२	०	४७	१४	३६	७	३५	१६	५४	६	५६	४	१९	१३
१४	गुरु	२०	५१	१	०	१५	४२	७	४२	१६	५१	६	५९	४	१८	१४
३०	शुक्र	२२	७	१	१२	१६	४८	७	५०	१६	४८	७	३	४	१७	१५

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	अ०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मई
१	शु.	१	२५	२४	५०	१	१९	१९	३१	०	१३	२२	५६	०	५४	३	०	१	४७	१८	१२	०	१०	१९	४९	१	२१	२	१५	१
४	सो	१	२५	२४	४७	१	४५	२१	२२	०	१३	२२	५९	१	६	१	५५	१	४६	१८	१७	०	१०	१९	५१	१	२१	२	१७	४
७	गु.	१	२५	२४	४२	२	६	२२	५२	०	१३	२३	१	१	१७	०	४८	१	४६	१८	२३	०	१०	१९	५३	१	२१	२	१८	७
१०	र.	१	२४	२४	३५	२	२०	२३	५८	०	१२	२३	४	१	२७	उ०	२१	१	४६	१८	२८	०	१०	१९	५५	१	२०	२	१९	१०
१३	बु.	१	२४	२४	२७	२	२७	२४	४३	०	१२	२३	६	१	३६	१	३१	१	४६	१८	३३	०	१०	१९	५८	१	२०	२	१९	१३

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शक: १८६४ अधि० ज्येष्ठ शुक्लपक्ष: ५ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य वृषभ अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र वृषभ	अं०	क०	चंद्र क्रांति उत्तर अं०	क०	चंद्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल मिथुन अं०	क०	अंग्रेजी तारीख मई
१८९०	१	शनि	१	३३	०	१८	५४	वृषभ	९	५५	१५	४२	४	५८	१९	७	१६
१८९१	२	रवि	२	३०	५०	१९	८	,,	२१	४९	१७	३७	५	०	१९	४४	१७
१८९२	३	सोम	३	२८	४०	१९	२१	मिथुन	३	४१	१८	३६	४	४८	२०	२०	१८
१८९३	४	मङ्गल	४	२६	२७	१९	३५	,,	१५	३२	१८	४७	४	२४	२०	५७	१९
१८९४	५	बुध	५	२३	१४	१९	४८	,,	२७	२५	१८	८	३	४९	२१	३४	२०
१८९५	६	गुरु	६	२१	५८	२०	०	कर्क	९	२२	१६	४०	३	३	२२	११	२१
१८९६	७	शुक्र	७	१९	४१	२०	१३	,,	२१	३०	१४	२७	२	८	२२	४७	२२
१८९७	८	शनि	८	१७	२३	२०	२५	सिंह	३	५१	११	३३	१	७	२३	२४	२३
१८९८	९	रवि	९	१५	३	२०	३६	,,	१६	३१	८	१	उ०	०	२४	१	२४
१८९९	१०	सोम	१०	१२	४१	२०	४८	,,	२९	३५	४	१	१	९	२४	३८	२५
१९००	११	मङ्गल	११	१०	४८	२०	५८	कन्या	१३	६	द०	२०	२	१६	२५	१५	२६
१९०१	१२	बुध	१२	७	५३	२१	९	,,	२७	७	४	४८	३	१७	२५	५२	२७
१९०२	१३	गुरु	१३	५	२७	२१	१९	तुला	११	३७	९	९	४	८	२६	२९	२८
१९०३	१४	शुक्र	१४	३	०	२१	२९	,,	२६	३२	१३	४	४	४३	२७	६	२९
१९०४	१५	शनि	१५	०	३१	२१	३८	वृश्चिक	११	४४	१६	१०	५	०	२७	४२	३०

ति.	वार	बुध वृषभ अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मीन अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० मई
१	शनि	२३	१९	१	२५	१७	५४	७	५८	१६	४५	७	६	४	१७	१६
२	रवि	२४	२७	१	३८	१९	०	८	६	१६	४२	७	१०	४	१६	१७
३	सोम	२५	३१	१	५१	२०	७	८	१३	१६	३९	७	१३	४	१६	१८
४	मङ्गल	२६	३०	२	४	२१	१४	८	२१	१६	३५	७	१७	४	१५	१९
५	बुध	२७	२६	२	१७	२२	२१	८	२९	१६	३२	७	२०	४	१५	२०
६	गुरु	२८	१७	२	३०	२३	२८	८	३७	१६	२९	७	२४	४	१४	२१
७	शुक्र	२९	४	२	४३	२४	३५	८	४४	१६	२६	७	२७	४	१४	२२
८	शनि	२९	४६	२	५६	२५	४२	८	५२	१६	२३	७	३१	४	१३	२३
९	रवि	मि	२४	३	९	२६	५०	९	०	१६	२०	७	३४	४	१२	२४
१०	सोम	०	५७	३	२२	२७	५७	९	८	१६	१६	७	३८	४	१२	२५
११	मङ्गल	१	२६	३	३५	२९	५	९	१५	१६	१३	७	४१	४	११	२६
१२	बुध	१	५०	३	४९	मे०	१३	९	२३	१६	१०	७	४५	४	११	२७
१३	गुरु	२	१०	४	२	१	२१	९	३१	१६	७	७	४८	४	११	२८
१४	शुक्र	२	२५	४	१५	२	२९	९	३९	१६	४	७	५२	४	११	२९
१५	शनि	२	३५	४	२९	३	३७	९	४६	१६	१	७	५५	४	१०	३०

ति	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मा.
१	शा.	१	२४	२४	१७	२	२५	२५	९	०	१२	२३	८	१६
४	मं.	१	२३	२४	६	२	१५	२५	१६	०	११	२३	१०	१९
७	शु.	१	२३	२३	५३	१	५७	२५	९	०	११	२३	१२	२२
१०	सो	१	२२	२३	३९	१	३०	२४	४८	०	१०	२३	१३	२५
१३	गु.	१	२२	२३	२३	०	५५	२४	१६	०	१०	२३	१४	२८

ति	वार	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मा.
१	शा.	१	४४	२	४२	१	४५	१८	३८	०	१०	२०	०	१	२०	२	२०	१६
४	मं.	१	५१	३	५३	१	४५	१८	४३	०	१०	२०	२	१	२०	२	२१	१९
७	शु.	१	५७	५	५	१	४५	१८	४८	०	१०	२०	४	१	२०	२	२१	२२
१०	सो	२	१	६	१७	१	४५	१८	५३	०	१०	२०	६	१	२०	२	२२	२५
१३	गु.	२	५	७	२९	१	४४	१८	५७	०	१०	२०	८	१	२०	२	२२	२८

दैनिक ग्रह— सं० १९९९ शकः १८६४ ख्री० ज्येष्ठ कृष्णपक्षः ६ मई १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य वृषभ अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति दक्षिण अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल मिथुन अं०	क०	अं० ता० मई
१९०५	१	रवि	१५	५८	१	२१	४७	वृश्चिक	२७	३	१८	१०	४	५५	२८	१९	३१
१९०६	२	सोम	१६	५५	३१	२१	५६	धनुः	१२	१७	१८	५२	४	२९	२८	५६	जू१
१९०७	४	मङ्गल	१७	५२	५९	२२	४	,,	२७	१६	१८	१३	३	४५	२९	३३	२
१९०८	५	बुध	१८	५०	२७	२२	१२	मकर	११	५३	१६	२१	२	४७	क०	१०	३
१९०९	६	गुरु	१९	४७	५४	२२	२०	,,	२६	२	१३	३३	१	४०	०	५०	४
१९१०	७	शुक्र	२०	४५	२०	२२	२७	कुम्भ	९	४४	१०	४	०	३०	१	२४	५
१९११	८	शनि	२१	४२	४६	२२	३४	,,	२३	०	६	१०	द०	४०	२	१	६
१९१२	९	रवि	२२	४०	११	२२	४०	मीन	५	५४	२	५	१	४६	२	३८	७
१९१३	१०	सोम	२३	३७	३५	२२	४५	,,	१८	२०	उ१	५९	२	४६	३	१५	८
१९१४	११	मङ्गल	२४	३४	५९	२२	५२	मेष	०	४९	५	५३	३	३६	३	५२	९
१९१५	१२	बुध	२५	३२	२२	२२	५७	,,	१२	५९	९	२९	४	१५	४	२९	१०
१९१६	१३	गुरु	२६	२९	४५	२३	१	,,	२५	१	१२	४०	४	४३	५	६	११
१९१७	१४	शुक्र	२७	२७	४	२३	६	वृषभ	६	५७	१५	१७	४	५८	५	४३	१२
१९१८	३०	शनि	२८	२४	२९	२३	१०	,,	१८	५१	१७	१६	५	०	६	२०	१३

ति०	वार	बुध मिथुन अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मेष अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० मई
१	रवि	२	४०	४	४२	४	४५	९	५४	१५	५७	७	५९	४	१०	३१
२	सोम	२	४१	४	५६	५	५४	१०	२	१५	५४	८	२	४	१०	जू१
४	मङ्गल	व२	३७	५	९	७	२	१०	१०	१५	५१	८	६	४	१०	२
५	बुध	२	२८	५	२२	८	१०	१०	१७	१५	४८	८	९	४	९	३
६	गुरु	२	१७	५	३६	९	१९	१०	२५	१५	४४	८	१३	४	९	४
७	शुक्र	२	१	५	४९	१०	२८	१०	३३	१५	४१	८	१६	४	९	५
८	शनि	१	४०	६	२	११	२६	१०	४१	१५	३८	८	२०	४	९	६
९	रवि	१	१७	६	१६	१२	४५	१०	४८	१५	३५	८	२३	४	९	७
१०	सोम	०	५१	६	२९	१३	५४	१०	५६	१५	३२	८	२७	४	९	८
११	मङ्गल	वृ०	२२	६	४३	१५	३	११	४	१५	२९	८	३०	मा४	९	९
१२	बुध	२९	५१	६	५७	१६	१२	११	१२	१५	२५	८	३३	४	९	१०
१३	गुरु	२९	१९	७	१०	१७	२१	११	१९	१५	२२	८	३७	४	९	११
१४	शुक्र	२८	४६	७	२४	१८	३१	११	२७	१५	१९	८	४०	४	९	१२
३०	शनि	२८	१२	७	३८	१९	४०	११	३४	१५	१६	८	४३	४	९	१३

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मई
१	र.	१	२१	२३	६	०	१३	२३	३४	०	१०	२३	१६	२	८	८	४०	१	४४	१९	२	०	१०	२०	११	१	२०	२	२२	३१
६	बु.	१	२०	२३	०	द०	५३	२२	२९	०	९	२३	१६	२	१०	१०	१४	१	४४	१९	८	०	१०	२०	१३	१	२०	२	२२	जू५
९	र.	१	२०	२२	४१	१	४४	२१	३५	०	९	२३	१७	२	१०	११	२२	१	४४	१९	१२	०	१०	२०	१५	१	२०	२	२२	७
१२	बु.	१	१९	२२	२१	२	३४	२०	४१	०	९	२३	१७	२	१०	१२	२९	१	४४	१९	१६	०	१०	२०	१७	१	१९	२	२२	१०
३०	श.	१	१९	२१	५९	३	१९	१९	५०	०	९	२३	१८	२	९	१३	३५	१	४४	१९	२१	०	१०	२०	२०	१	१९	२	२२	१३

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शाके १८६४ शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ७ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य वृषभ अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल कर्क अं०	क०	अं० ता० जून
१९१९	१	रवि	२९	२१	४९	२३	१३	वृषभ	२९	४३	१८	३०	४	४८	६	५७	१४
१९२०	२	सोम	मि.	१९	९	२३	१६	मिथुन	११	३४	१८	५५	४	२५	७	३४	१५
१९२१	३	मङ्गल	१	१६	२९	२३	१९	,,	२३	३७	१८	३१	३	५०	८	११	१६
१९२२	३	बुध	२	१३	४७	२३	२१	कर्क	५	२३	१७	१८	३	४	८	४८	१७
१९२३	४	गुरु	३	११	५	२३	२३	,,	१७	२५	१५	१८	२	१०	९	२५	१८
१९२४	५	शुक्र	४	८	२३	२३	२५	,,	२९	३६	१२	३६	१	१०	१०	२	१९
१९२५	६	शनि	५	५	३९	२३	२६	सिंह	११	५९	९	१७	०	४	१०	४०	२०
१९२६	७	रवि	६	२	५५	२३	२६	,,	२४	३९	५	२९	उ१	४	११	१७	२१
१९२७	८	सोम	७	०	०	२३	२७	कन्या	७	३९	१	२०	२	९	११	५४	२२
१९२८	९	मङ्गल	७	५७	२५	२३	२६	,,	२१	५	द३	१	३	१०	१२	३१	२३
१९२९	११	बुध	८	५४	१९	२३	२६	तुला	४	५८	७	२०	४	१	१३	८	२४
१९३०	१२	गुरु	९	५१	५२	२३	२५	,,	१९	१९	११	२२	४	४०	१३	४५	२५
१९३१	१३	शुक्र	१०	४९	४	२३	२३	वृश्चि.	४	५	१४	५०	५	१	१४	२२	२६
१९३२	१४	शनि	११	४६	१६	२३	२२	,,	१९	११	१७	२३	५	२	१४	५९	२७
१९३३	१५	रवि	१२	४३	२८	२३	१९	धन	४	२७	१८	४५	४	४१	१५	३७	२८

ति	वार	बुध वक्रीवृषभ अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मेष अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० जून
१	रवि	२७	३९	७	५१	२०	४९	११	४२	१५	१३	८	४६	४	९	१४
२	सोम	२७	६	८	५	२१	५९	११	४९	१५	१०	८	५०	४	९	१५
३	मङ्गल	२६	३४	८	१८	२३	८	११	५७	१५	६	८	५३	४	१०	१६
३	बुध	२६	४	८	३२	२४	१८	१२	४	१५	३	८	५६	४	१०	१७
४	गुरु	२५	३७	८	४६	२५	२८	१२	१२	१५	०	८	५९	४	१०	१८
५	शुक्र	२५	१३	८	५९	२६	३८	१२	१९	१४	५७	९	३	४	१०	१९
६	शनि	२४	५२	९	१३	२७	४७	१२	२७	१४	५४	९	६	४	११	२०
७	रवि	२४	३४	९	२७	२८	५७	१२	३४	१४	५१	९	९	४	११	२१
८	सोम	२४	२०	९	४१	वृ०	७	१२	४१	१४	४७	९	१२	४	११	२२
९	मङ्गल	२४	१०	९	५४	१	१७	१२	४९	१४	४४	९	१६	४	१२	२३
११	बुध	२४	५	१०	८	२	२७	१२	५८	१४	४१	९	१९	४	१२	२४
१२	गुरु	२४	४	१०	२२	३	३७	१३	५	१४	३८	९	२२	४	१३	२५
१३	शुक्र	२४	८	१०	३६	४	४७	१३	१२	१४	३५	९	२५	४	१४	२६
१४	शनि	२४	१७	१०	४९	५	५८	१३	२०	१४	३२	९	२८	४	१४	२७
१५	रवि	२४	३०	१०	३	७	८	१३	२७	१४	२८	९	३१	४	१५	२८

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. जू.
३	मं.	१	१९	२	२२	३	५४	१९	८	०	८	२३	१८	२	७	१४	३८	१	४४	१९	२५	०	१०	२०	२२	१	१९	२	२२	१६
५	शु.	१	१९	२	२१	४	१८	१८	३८	०	८	२३	१७	२	४	१५	३८	१	४४	१९	२८	०	१०	२०	२४	१	१९	२	२१	१९
८	सो	१	१९	२	२९	४	३०	१८	२२	०	८	२३	१७	२	१	१६	३६	१	४४	१९	३२	०	१०	२०	२६	१	१९	२	२१	२२
१२	गु.	१	१९	२	२०	४	२८	१८	२१	०	७	२३	१६	१	५७	१७	३०	१	४४	१९	३६	०	१०	२०	२८	१	१९	२	२०	२५
१५	र.	१	१९	२	१९	४	१७	१८	३६	०	७	२३	१५	१	५२	१८	२१	१	४४	१९	४०	०	१०	२०	३१	२	१९	२	१९	२८

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ आषाढ़ कृष्ण पक्षः ८ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य मिथुन अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल कर्क अं०	क०	अं० ता० जू०
१९३४	१	सोम	१३	४०	४०	२३	१७	धनु	१९	४३	१८	४५	४	१	१६	१४	२९
१९३५	२	मङ्गल	१४	३७	५१	२३	१४	मकर	४	४८	१७	२५	३	४	१६	५१	३०
१९३६	३	बुध	१५	३५	२	२३	१०	,,	१९	३२	१४	५५	१	५६	१७	२८	१
१९३७	४	गुरु	१६	३२	१४	२३	६	कुम्भ	३	५१	११	३५	०	४२	१८	६	२
१९३८	५	शुक्र	१७	२९	२५	२३	२	,,	१७	४१	७	४२	द०	३२	१८	४३	३
१९३९	६	शनि	१८	२६	५७	२२	५७	मीन	१	३	३	३३	१	४२	१९	२०	४
१९४०	७	रवि	१९	२३	४९	२२	५२	,,	१४	०	उ०	३८	२	४४	१९	५७	५
१९४१	८	सोम	२०	२१	२	२२	४७	,,	२६	३६	४	४१	३	३७	२०	३५	६
१९४२	९	मङ्गल	२१	१८	१४	२२	४१	मेष	८	५५	८	२५	४	१८	२१	१२	७
१९४३	१०	बुध	२२	१५	२७	२२	३५	,,	२१	७	११	४५	४	४७	२१	४९	८
१९४४	११	गुरु	२३	१२	४०	२२	२८	वृषभ	२	५९	१४	३३	५	४	२२	२६	९
१९४५	१२	शुक्र	२४	९	५४	२२	२१	,,	१४	५३	१६	४४	५	६	२३	४	१०
१९४६	१३	शनि	२५	७	८	२२	१४	,,	२६	४३	१८	१२	४	५६	२३	४१	११
१९४७	१४	रवि	२६	४	२२	२२	६	मिथुन	८	३६	१८	५२	४	३३	२४	१८	१२
१९४८	३०	सोम	२७	१	३७	२१	५७	,,	२०	३०	१८	४३	३	५८	२४	५६	१३

ति०	वार	बुध वृषभ अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र वृषभ अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० जू०
१	रवि	२४	४९	११	१७	८	१८	१३	३४	१४	२५	९	३४	४	१६	२९
२	सोम	२५	१२	११	३१	९	२९	१३	४०	१४	२२	९	३७	४	१७	३०
३	मङ्गल	२५	४०	११	४४	१०	३९	१३	४६	१४	१९	९	४०	४	१७	१
४	बुध	२६	१३	११	५८	११	५०	१३	५३	१४	१६	९	४३	४	१८	२
५	गुरु	२६	५०	१२	११	१३	०	१४	०	१४	१३	९	४६	४	१८	३
६	शुक्र	२७	३२	१२	२५	१४	११	१४	७	१४	९	९	४९	४	१९	४
७	शनि	२८	१९	१२	३८	१५	२२	१४	१३	१४	६	९	५२	४	२०	५
८	सोम	२९	११	१२	५२	१६	३२	१४	२०	१४	३	९	५५	४	२१	६
९	मङ्गल	मि	७	१३	६	१७	४३	१४	२७	१३	५९	९	५८	४	२२	७
१०	बुध	१	७	१३	२०	१८	५४	१४	३४	१३	५६	१०	१	४	२३	८
११	गुरु	२	१२	१३	३३	२०	५	१४	४०	१३	५३	१०	४	४	२४	९
१२	शुक्र	३	२२	१३	४७	२१	१६	१४	४७	१३	५०	१०	६	४	२४	१०
१३	शनि	४	३५	१४	०	२२	२७	१४	५४	१३	४७	१०	९	४	२५	११
१४	रवि	५	५३	१४	१४	२३	३८	१५	०	१३	४४	१०	१२	४	२६	१२
३०	सोम	७	१६	१४	२७	२४	४९	१५	७	१३	४०	१०	१४	४	२७	१३

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. जु०
३	बु.	१	१९	२	१८	३	५६	१९	३	०	७	२३	१४	१	४७	१९	८	१	४४	१९	४७	०	१०	२०	३१	१	१९	२	१८	१
६	श.	१	१९	२	१७	३	२७	१९	३९	०	७	२३	१३	१	४१	१९	५१	१	४४	१९	४७	०	१०	२०	३३	१	१९	२	१७	४
९	मं.	१	१८	२	१६	२	५४	२०	२२	०	६	२३	११	१	३४	२०	३०	१	४५	१९	५०	०	१०	२०	३५	१	१८	२	१६	७
१२	शु.	१	१८	२	१५	२	१६	२१	७	०	६	२३	१०	१	२७	२१	४	१	४५	१९	५३	०	१०	२०	३७	१	१८	२	१५	१०
३०	सो.	१	१८	२	१४	१	३७	२१	५०	०	६	२३	८	१	२०	२१	३३	१	४५	१९	५६	०	१०	२०	३८	१	१८	२	१४	१३

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ आषाढ़ शुक्लपक्षः ९ सन १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य मिथुन अं०	क०	वि	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्र क्रांति उत्तर अं०	क०	चंद्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल कर्क अं०	क०	अंग्रेजी तारीख जुलाई
१९४९	१	मङ्गल	२७	५८	४१	२१	४९	कर्क	३	२८	१७	४४	३	१२	२५	३३	१४
१९५०	२	बुध	२८	५६	६	२१	४०	,,	१५	३२	१५	५६	२	१७	२६	११	१५
१९५१	३	गुरु	२९	५३	२२	२१	३१	,,	२७	४४	१३	२५	१	१६	२६	४८	१६
१९५२	४	शुक्र	क०	५१	३	२१	२१	सिंह	१०	५	१०	२५	०	९	२७	२६	१७
१९५३	५	शनि	१	४७	५३	२१	११	,,	२२	३७	६	३५	उ०	५९	२८	३	१८
१९५४	६	रवि	२	४५	९	२१	०	कन्या	५	२५	२	३४	२	५	२८	४१	१९
१९५५	७	सोम	३	४२	५६	२०	५०	,,	१८	२९	द१	४०	३	७	२९	१८	२०
१९५६	८	मङ्गल	४	३९	३२	२०	३९	तुला	१	५४	५	५५	३	५९	२९	५६	२१
१९५७	९	बुध	५	३६	५९	२०	२७	,,	१५	४१	९	५८	४	४०	सिं.	३	२२
१९५८	१०	गुरु	६	३४	१६	२०	१५	,,	२९	५१	१३	३३	५	५	१	११	२३
१९५९	११	शुक्र	७	३१	३३	२०	३	वृश्चि.	१४	२२	१६	२५	५	११	१	४८	२४
१९६०	१२	शनि	८	२८	५१	१९	५१	,,	२९	१०	१८	१६	४	५७	२	२६	२५
१९६१	१३	रवि	९	२६	९	१९	३८	धनु	१४	१०	१८	५३	४	२३	३	३	२६
१९६२	१५	सोम	१०	२३	२७	१९	२५	,,	२९	११	१८	१०	३	३१	३	४१	२७

ति.	वार	बुध मिथुन अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र वृषभ अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० जुलाई
१	मङ्गल	८	४२	१४	४१	२६	१	१५	१३	१३	३७	१०	१७	४	२९	१४
२	बुध	१०	१२	१४	५४	२७	१२	१५	१९	१३	३४	१०	१९	४	३०	१५
३	गुरु	११	४६	१५	८	२८	२३	१५	२५	१३	३१	१०	२२	४	३१	१६
४	शुक्र	१३	२४	१५	२१	२९	३५	१५	३२	१३	२७	१०	२४	४	३२	१७
५	शनि	१५	६	१५	३५	मि.	४६	१५	३६	१३	२४	१०	२७	४	३३	१८
६	रवि	१६	५१	१५	४८	१	५८	१५	४४	१३	३१	१०	३०	४	३४	१९
७	सोम	१८	३९	१६	१	३	१०	१५	५०	१३	१८	१०	३२	४	३५	२०
८	मङ्गल	२०	३१	१६	१५	४	२१	१५	५६	१३	१५	१०	३५	४	३७	२१
९	बुध	२२	२५	१६	२८	५	३३	१६	२	१३	१२	१०	३७	४	३८	२२
१०	गुरु	२४	२२	१६	४१	६	४५	१६	८	१३	९	१०	३९	४	४०	२३
११	शुक्र	२६	२१	१६	५४	७	५७	१६	१४	१३	६	१०	४१	४	४१	२४
१२	शनि	२८	२२	१७	८	९.	८	१६	२०	१३	२	१०	४४	४	४३	२५
१३	रवि	क०	२५	१७	२१	१०	२०	१६	२५	१२	५९	१०	४६	४	४४	२६
१५	सोम	२	५९	१७	३४	११	३२	१६	३१	१२	५६	१०	४८	४	४६	२७

ति	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. जु.
३	गु.	१	१८	२	१२	०	५७	२२	२५	०	५	२३	६	१	१२	२१	५७	१	४५	१९	५९	०	१०	२०	४०	१	१८	२	१२	१६
६	र.	१	१८	२	११	उ०	१८	२२	४७	०	५	२३	४	१	४	२२	१६	१	४५	२०	१	०	१०	२०	४१	१	१८	२	११	१९
९	बु.	१	१८	२	९	०	१८	२२	५१	०	५	२३	१	०	५६	२२	२९	१	४५	२०	४	०	१०	२०	४२	१	१८	२	९	२२
१२	श.	१	१८	२	८	०	४९	२२	३४	०	५	२२	५९	०	४८	२२	३७	१	४५	२०	६	०	१०	२०	४४	१	१८	२	८	२५

दैनिक ग्रह—सं० १९९३ शक: १८५८ श्रा० श्रावणकृष्णपक्ष: १० सन १९३६ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य कर्क अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति दक्षिण अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल सिंह अं०	क०	अं० ता० जु०
१९६३	१	मङ्गल	११	२०	४६	१९	११	मकर	१४	६	१६	१२	२	२४	४	१९	२८
१९६४	२	बुध	१२	१८	६	१८	५८	,,	२८	४६	१३	११	१	९	४	५६	२९
१९६५	३	गुरु	१३	१५	२७	१८	४४	कुम्भ	१३	४	९	२७	द०	९	५	३४	३०
१९६६	४	शुक्र	१४	१२	४९	१८	२९	,,	२६	५८	५	१७	१	२४	६	१२	३१
१९६७	५	शनि	१५	१०	२	१८	१४	मीन	१०	२५	१	०	२	३३	६	५०	१अ
१९६८	६	रवि	१६	७	३५	१७	५९	,,	२३	२७	उ३	१३	३	३१	७	२७	२
१९६९	७	सोम	१७	५	०	१७	४४	मेष	६	७	७	९	४	१७	८	५	३
१९७०	८	मङ्गल	१८	२	२७	१७	२९	,,	१८	२९	१०	४०	४	५०	८	४३	४
१९७१	९	बुध	१८	५९	५४	१७	१३	वृषभ	०	३६	१३	४१	५	९	९	२१	५
१९७२	१०	गुरु	१९	५७	२३	१६	५७	,,	१२	३४	१६	४	५	१५	९	५८	६
१९७३	११	शुक्र	२०	५४	५३	१६	४०	,,	२४	२७	१७	४६	५	७	१०	३६	७
१९७४	१२	शनि	२१	५२	२४	१६	२४	मिथुन	६	१८	१८	४१	४	४६	११	१४	८
१९७५	१३	रवि	२२	४९	५६	१६	७	,,	१८	१२	१८	४७	४	१२	११	५२	९
१९७६	१४	सोम	२३	४७	३०	१५	४९	कर्क	०	११	१८	३	३	२८	१२	३०	१०
१९७७	१४	मङ्गल	२४	४५	३४	१५	३२	,,	१२	१७	१६	२९	२	३३	१३	८	११
१९७८	३०	बुध	२५	४२	४१	१५	३०	,,	२४	३२	१४	९	१	३१	१३	४६	१२

ति०	वार	बुध कर्क अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मिथुन अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० जु०
१	मङ्गल	४	३४	१७	४७	१२	४४	१६	३७	१२	५३	१०	४९	४	४७	२८
२	बुध	६	४०	१८	०	१३	५६	१६	४२	१२	५०	१०	५०	४	४८	२९
३	गुरु	८	४६	१८	१३	१५	८	१६	४८	१२	४७	१०	५२	४	४९	३०
४	शुक्र	१०	५२	१८	२६	१६	२०	१६	५३	१२	४३	१०	५४	४	५१	३१
५	शनि	१२	५८	१८	३९	१७	३२	१६	५८	१२	४०	१०	५६	४	५२	१अ
६	रवि	१५	४	१८	५२	१८	४४	१७	४	१२	३७	१०	५८	४	५४	२
७	सोम	१७	९	१९	४	१९	५७	१७	९	१२	३४	११	०	४	५५	३
८	मङ्गल	१९	१३	१९	१७	२१	९	१७	१४	१२	३१	११	१	४	५७	४
९	बुध	२१	१६	१९	३०	२२	२१	१७	१९	१३	२८	११	३	४	५९	५
१०	गुरु	२३	१८	१९	४३	२३	३४	१७	२४	१२	२५	११	५	५	०	६
११	शुक्र	२५	१९	१९	५५	२४	४६	१७	२९	१२	२१	११	७	५	२	७
१२	शनि	२७	१८	२०	८	२५	५९	१७	३४	१२	१८	११	८	५	४	८
१३	रवि	२९	१६	२०	२०	२७	११	१७	३९	१२	१५	११	१०	५	६	९
१४	सोम	सिं१	१३	२०	३३	२८	२४	१७	४३	१२	११	११	१२	५	८	१०
१४	मङ्गल	३	८	२०	४५	२९	३६	१७	४८	१२	८	११	१४	.५	१०	११
३०	बुध	५	२	२०	५७	क.	४९	१७	५२	१२	५	११	१६	५	१२	१२

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. जु०
१	मं.	१	१८	२	६	१	१४	२१	५२	०	४	२२	५६	०	४०	२२	३९	१	४५	२०	९	०	१०	२०	४५	१	१९	२	६	२८
४	शु.	१	१८	२	४	१	३२	२०	२१	०	४	२२	५३	०	३१	२२	३६	१	४५	२०	११	०	१०	२०	४६	१	१९	२	४	३१
८	मं.	१	१८	२	१	१	४४	१८	४९	०	४	२२	४९	०	२०	२२	५	१	४६	२०	१३	०	१०	२०	४७	१	१९	२	१	४
११	शु.	१	१८	१	५९	१	४६	१७	२	०	३	२२	४५	०	१२	२१	४२	१	४७	२०	१५	०	१०	२०	४८	१	१९	१	५९	७
१४	सो.	१	१८	१	५७	१	४२	१५	४	०	३	२२	४३	०	३	२१	१३	१	४७	२०	१७	०	१०	२०	४९	१	१९	१	५७	१०

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ श्रावण शुक्लपक्षः ११ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य कर्क अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्र क्रांति उत्तर अं०	क०	चंद्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल सिंह अं०	क०	अंग्रेजी तारीख अगस्त
१८७९	१	गुरु	२६	४०	१८	१५	१४	सिंह	६	५८	११	८	०	२४	१४	२४	१३
१८८०	२	शुक्र	२७	३७	५६	१४	५६	,,	१९	३६	७	३४	उ०	४६	१५	२	१४
१८८१	३	शनि	२८	३५	२२	१४	३९	कन्या	२	२६	३	३५	१	५५	१५	४०	१५
१८८२	४	रवि	२९	३३	१६	१४	१	,,	१५	३०	द०	३७	२	५९	१६	१९	१६
१८८३	५	सोम	सिं.	३०	५८	१३	४२	,,	२८	४९	४	५२	३	५४	१६	५६	१७
१८८४	७	मङ्गल	१	२८	४०	१३	२३	तुला	१२	२२	८	५६	४	३९	१७	३४	१८
१८८५	८	बुध	२	२६	४०	१३	४	,,	२६	१७	१२	३६	५	६	१८	१२	१९
१८८६	९	गुरु	३	२४	९	१२	४४	वृश्चि.	१०	१५	१५	३७	५	१७	१८	५०	२०
१८८७	१०	शुक्र	४	२१	२४	१२	२५	,,	२४	३२	१७	४४	५	९	१९	२८	२१
१८८८	११	शनि	५	१९	४१	१२	५	धनु	९	०	१८	४५	४	४१	२०	६	२२
१८८९	१२	रवि	६	१७	२९	११	४४	,,	२३	३५	१८	३२	३	५५	२०	४५	२३
१८९०	१३	सोम	७	१५	२९	११	२४	मकर	८	१२	१७	६	२	५३	२१	२३	२४
१८९१	१४	मङ्गल	८	१३	९	११	४	,,	२२	४४	१४	३२	१	४१	२२	१	२५
१८९२	१५	बुध	९	११	१	१०	४३	कुम्भ	७	६	११	६	०	२३	२२	३९	२६

ति.	वार	बुध सिंह अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र कर्क अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० अगस्त
१	गुरु	८	४५	२१	९	२	२	१७	५६	१२	२	११	१८	५	१४	१३
२	शुक्र	१०	३५	१३	२२	३	१५	१८	१	११	५९	११	२०	५	१६	१४
३	शनि	१२	३४	२१	३४	४	२८	१८	५	११	५६	११	२१	५	१७	१५
४	रवि	१४	९	२१	४६	५	४१	१८	९	११	५२	११	२२	५	१९	१६
५	सोम	१५	५४	२१	५८	६	५४	१८	१३	११	४९	११	२३	५	२१	१७
७	मङ्गल	१७	३८	२२	१०	८	७	१८	१७	११	४६	११	२५	५	२३	१८
८	बुध	१९	२०	२२	२२	९	२०	१८	२१	११	४३	११	२६	५	२५	१९
९	गुरु	२१	१	२२	३४	१०	३३	१८	२५	११	४०	११	२७	५	२७	२०
१०	शुक्र	२२	४०	२२	४६	११	४६	१८	२९	११	३७	११	२८	५	२९	२१
११	शनि	२४	१८	२२	५८	१२	५९	१८	३२	११	३३	११	२९	५	३०	२२
१२	रवि	२५	५५	२३	९	१४	१३	१८	३६	११	३०	११	३०	५	३२	२३
१३	सोम	२७	३०	२३	२१	१५	२६	१८	३९	११	२७	११	३१	५	३४	२४
१४	मङ्गल	२९	२४	२३	३२	१६	३९	१८	४२	११	२४	११	३२	५	३६	२५
१५	बुध	क०	३६	२३	४४	१७	५२	१८	४५	११	२१	११	३३	५	३८	२६

ति	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. अ.
१	गु.	१	१७	१	५५	१	३३	१२	५८	०	३	२२	३९	०	५	२०	३९	१	४८	२०	१९	०	१०	२०	५०	१	१७	१	५५	१३
४	र.	१	१७	१	५२	१	१९	१०	४७	०	२	२२	३६	०	१३	२०	०	१	४८	२०	२०	०	१०	२०	५१	१	१७	१	५२	१६
८	बु.	१	१७	१	५०	१	३	८	३४	०	२	२२	३२	०	२१	१९	१५	१	४८	२०	२१	०	१०	२०	५१	१	१७	१	५०	१९
११	श.	१	१७	१	४७	०	४३	६	२०	०	२	२२	२८	०	२९	१८	२६	१	४९	२०	२२	०	१०	२०	५२	१	१७	१	४७	२२
१४	मं.	१	१७	१	४५	०	४२	४	७	०	२	२२	२४	०	३६	१७	३१	१	४९	२०	२३	०	१०	२०	५२	१	१७	१	४५	२५

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ भाद्रपद कृष्णपक्षः १२ सन १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य कर्क			सूर्य क्रांति उत्तर		चन्द्र			चं० क्रान्ति दक्षिण		चं० शर दक्षिण		मङ्गल सिंह		अं० ता० अग
			अं०	क०	वि०	अं०	क०	रा०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
	१	गुरु	१०	८	५५	१०	२२	कुम्भ	२१	२२	७	५	०	५५	२३	१८	२७
१९९३	२	शुक्र	११	६	५०	१०	१	मीन	४	५९	२	४६	२	८	२३	५६	२८
१९९४	३	शनि	१२	४	४७	९	४०	,,	१८	२४	उ१	३३	३	१२	२४	३४	२९
१९९५	४	रवि	१३	२	४५	९	१९	मेष	१	२९	५	४१	४	४	२५	१२	३०
१९९६	५	सोम	१४	०	४५	८	५८	,,	१४	१०	९	२६	४	४२	२५	५१	३१
१९९७	६	मङ्गल	१४	५८	४७	८	३६	,,	२६	३४	१२	४१	५	७	२६	२९	१से
१९९८	७	बुध	१५	५६	४१	८	१४	वृषभ	८	४३	१५	२०	५	२७	२७	७	२
१९९९	८	गुरु	१६	५४	५७	७	५२	,,	२०	४३	१७	१६	५	१३	२७	४६	३
२०००	९	शुक्र	१७	५३	५	७	३०	मिथुन	२	३६	१८	२७	४	५६	२८	२४	४
२००१	१०	शनि	१८	५१	१५	७	८	,,	१४	२८	१८	४९	४	२६	२९	३	५
२००२	११	रवि	१९	४९	२५	६	४६	,,	२६	२३	१८	२१	३	४४	२९	४१	६
२००३	१२	सोम	२०	४७	४१	६	२४	कर्क	८	२६	१७	३	२	५२	कं०	२०	७
२००४	१३	मङ्गल	२१	४५	५७	६	१	,,	२०	३९	१४	५७	१	५२	०	५८	८
२००५	१४	बुध	२२	४४	१४	५	३९	सिंह	३	६	१२	८	०	४५	१	३७	९
२००६	३०	गुरु	२३	४२	३४	५	१६	,,	१५	४८	८	४१	उ०	२५	२	१६	१०

ति०	वार	बुध कन्या		गुरु मिथुन		शुक्र कर्क		शनि वृषभ		राहु सिंह		हर्शल वृषभ		नेपच्यून कन्या		अं० ता० अग
		अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
१	गुरु	२	७	२३	५५	१९	६	१८	४८	११	१८	११	३४	५	४१	२७
२	शुक्र	३	३७	२४	६	२०	१९	१८	५१	११	१४	११	३५	५	४३	२८
३	शनि	५	६	२४	१७	२१	३३	१८	५४	११	११	११	३५	५	४५	२९
४	रवि	६	३३	२४	२८	२२	४६	१८	५७	११	८	११	३६	५	४७	३०
५	सोम	७	५८	२४	३९	२४	०	१९	०	११	५	११	३६	५	४९	३१
६	मङ्गल	९	२२	२४	५०	२५	११	१९	३	११	२	११	३६	५	५१	१से
७	बुध	१०	४५	२५	१	२६	२४	१९	५	१०	५९	११	३६	५	५३	२
८	गुरु	१२	६	२५	१२	२७	३८	१९	८	१०	५६	११	३७	५	५५	३
९	शुक्र	१३	२६	२५	२२	२८	५४	१९	१०	१०	५२	११	३७	५	५७	४
१०	शनि	१४	४५	२५	३३	सिं	८	१९	१२	१०	४९	११	३७	५	५९	५
११	रवि	१६	१	२५	४३	१	२२	१९	१४	१०	४६	११	३७	६	१	६
१२	सोम	१७	१६	२५	५४	२	३६	१९	१६	१०	४२	११	३८	६	३	७
१३	मङ्गल	१८	२९	२६	४	३	५०	१९	१८	१०	३९	११	३८	६	६	८
१४	बुध	१९	४१	२६	१४	५	४	१९	२२	१०	३६	११	३८	६	८	९
३०	गुरु	२०	५०	२६	२४	६	१८	१९	२३	१०	३३	११	३८	६	१०	१०

ति.	वार	मङ्गल शर उ०		मङ्गल क्रान्ति उ०		बुध शर उ०		बुध क्रान्ति उ०		गुरु (:र द०		गुरु क्रान्ति उ०		शुक्र शर द०		शुक्र क्रान्ति उ०		शनि शर द०		शनि क्रान्ति उ०		हर्शल शर द०		हर्शल क्रान्ति उ०		नेपच्यून शर उ०		नेपच्यून क्रान्ति उ०		अं. ता. अ०
		अं०	क०	अं०	अ०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
२	शु.	१	१७	१	४०	०	२	१	५६	०	१	२२	२०	०	४३	१६	३३	१	४९	२०	२४	०	१०	२०	५३	१	१७	१	४२	२८
५	सो	१	१७	१	३९	०	२६	द०	१२	०	१	२२	१६	०	४९	१५	८	१	५०	२०	२५	०	१०	२०	५३	१	१७	१	४०	३१
९	शु.	१	१७	१	३६	द१	०	२	५६	०	०	२२	११	०	५७	१३	५९	१	५०	२०	२६	०	१०	२०	५३	१	१७	१	३६	से४
१२	सो	१	१७	१	३४	१	२६	४	५२	उ०	०	२२	७	१	३	१२	४८	१	५१	२०	२६	०	१०	२०	५३	१	१७	१	३४	७
३०	गु.	१	१७	१	३१	१	५२	६	४२	०	०	२२	२	१	८	११	३३	१	५१	२०	२६	०	१०	२०	५३	१	१७	१	३१	१०

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शक: १८६४ भाद्रपद शुक्लपक्ष: १३ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य सिंह अं०	सूर्य सिंह क०	सूर्य सिंह वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	सूर्य क्रांति उत्तर क०	चन्द्र रा०	चन्द्र अं०	चन्द्र क०	चं० क्रांति उत्तर अं०	चं० क्रांति उत्तर क०	चन्द्र शर उत्तर अं०	चन्द्र शर उत्तर क०	मङ्गल कन्या अं०	मङ्गल कन्या क०	अं० ता० सि.
२००७	१	शुक्र	२४	४०	५५	४	४३	सिंह	२८	४६	४	४४	१	३५	२	५४	११
२००८	२	शनि	२५	३९	१८	४	३१	कन्या	१२	०	०	३०	२	४२	३	३३	१२
२००९	३	रवि	२६	३७	४३	४	८	,,	२५	२८	द३	४९	३	४१	४	१२	१३
२०१०	४	सोम	२७	३६	१०	३	४५	तुला	९	१०	८	१	४	२८	४	५१	१४
२०११	५	मङ्गल	२८	३४	३८	३	२२	,,	२३	३	११	५०	५	०	५	२९	१५
२०१२	६	बुध	२९	३३	८	२	५९	वृश्चि.	७	४	१५	२	५	१५	६	८	१६
२०१३	७	गुरु	कं०	३१	३९	२	३५	,,	२१	१२	१७	२२	५	१०	६	४७	१७
२०१४	८	शुक्र	१	३०	३९	२	१२	धनु	५	२३	१८	३९	४	४७	७	३६	१८
२०१५	९	शनि	२	२८	५२	१	४९	,,	१९	३७	१८	४५	४	७	८	४	१९
२०१६	११	रवि	३	२७	३२	१	२६	मकर	३	५०	१७	४०	३	१२	८	४३	२०
२०१७	१२	सोम	४	२६	१	१	३	,,	१७	५९	१५	३०	२	४	९	२२	२१
२०१८	१३	मङ्गल	५	२४	४१	०	३९	कुम्भ	२	४	१२	२४	०	५०	१०	१	२२
२०१९	१४	बुध	६	२३	२१	०	१६	,,	१६	०	८	३७	द०	२६	१०	४०	२३
२०२०	१५	गुरु	७	२२	६	द०	७	,,	२९	४४	४	२६	१	४०	११	१९	२४

ति	वार	बुध कन्या अं०	बुध कन्या क०	गुरु मिथुन अं०	गुरु मिथुन क०	शुक्र सिंह अं०	शुक्र सिंह क०	शनि वृषभ अं०	शनि वृषभ क०	राहु सिंह अं०	राहु सिंह क०	हर्शल वृषभ अं०	हर्शल वृषभ क०	नेपच्यून कन्या अं०	नेपच्यून कन्या क०	अं० ता० सि.
१	शुक्र	२०	५०	२६	३४	७	३२	१९	२५	१०	३०	११	३८	६	१२	११
२	शनि	२१	५८	२६	४४	८	४६	१९	२६	१०	२७	११	३८	६	१५	१२
३	रवि	२३	३	२६	५४	९	०	१९	२७	१०	२३	११	३८	६	१७	१३
४	सोम	२४	६	२७	४	११	१४	१९	२९	१०	२०	११	३८	६	१९	१४
५	मङ्गल	२५	७	२७	१३	१२	२८	१९	२९	१०	१७	११	३८	६	२१	१५
६	बुध	२६	६	२७	२३	१३	४३	१९	३०	१०	१४	११	३७	६	२४	१६
७	गुरु	२७	२	२७	३२	१४	५७	१९	३१	१०	११	११	३७	६	२६	१७
८	शुक्र	२७	५४	२७	४१	१६	११	१९	३२	१०	८	११	३७	६	२८	१८
९	शनि	२८	४४	२७	५०	१७	२५	१९	३२	१०	४	११	३६	६	३०	१९
११	रवि	२९	३०	२७	५९	१८	४०	१९	३३	१०	१	११	३६	६	३३	२०
१२	सोम	तु०	१३	२८	८	१९	५४	१९	३३	९	५८	११	३५	६	३५	२१
१३	मङ्गल	०	५१	२८	१७	२१	८	१९	३३	९	५५	११	३५	६	३७	२२
१४	बुध	१	२५	२८	२५	२२	२३	१९	३३	९	५२	११	३४	६	३९	२३
१५	गुरु	१	५५	२८	३४	२३	३७	१९	३४	९	४९	११	३४	६	४२	२४

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	मङ्गल शर उ० क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	मङ्गल क्रान्ति उ० क०	बुध शर द० अं०	बुध शर द० क०	बुध क्रान्ति द० अं०	बुध क्रान्ति द० क०	गुरु शर उ० अं०	गुरु शर उ० क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	गुरु क्रान्ति उ० क०	शुक्र शर द० अं०	शुक्र शर द० क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	शुक्र क्रान्ति उ० क०	शनि शर द० अं०	शनि शर द० क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	शनि क्रान्ति उ० क०	हर्शल शर द० अं०	हर्शल शर द० क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	हर्शल क्रान्ति उ० क०	नेपच्यून शर उ० अं०	नेपच्यून शर उ० क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	नेपच्यून क्रान्ति उ० क०	अं० ता० सि.
३	र.	१	११	२०	४६	४	४	७	२८	०	३४	१६	३५	८	२६	०	१३	१	२२	२२	१	०	६	२१	४१	१	२०	०	४२	१३
६	बु.	१	८	२१	४	४	६	७	७	०	३४	१६	२४	८	७	१	२५	१	२२	२२	१	०	६	२१	४१	१	२०	०	३९	१६
९	श.	१	४	२१	१८	३	३४	६	१०	०	३५	१६	१४	७	४३	२	१३	१	२२	२२	१	०	६	२१	४१	१	२०	०	३६	१९
१३	मं.	०	५९	२१	३१	३	२६	४	३७	०	३५	१६	४	७	१३	२	५८	१	२३	२२	१	०	६	२१	४०	१	२०	०	३४	२२

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ आश्विन कृष्ण पक्षः २४ सप्त १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य कन्या अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चं० शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल कन्या अं०	क०	अं० ता० सि०
२०२१	१	शुक्र	८	२०	५१	०	३१	मीन	१३	१४	०	६	२	४७	११	५८	२५
२०२२	२	शनि	९	१९	३८	०	५४	,,	२६	२८	उ४	१०	३	४३	१२	३७	२६
२०२३	३	रवि	१०	१८	२८	१	१९	मेष	९	२५	८	८	४	२६	१३	१६	२७
२०२४	४	सोम	११	१७	१९	१	४१	,,	२२	४	११	३८	४	५६	१३	५६	२८
२०२५	५	मङ्गल	१२	१६	१९	२	४	वृषभ	४	२८	१४	३३	५	११	१४	३५	२९
२०२६	६	बुध	१३	१४	४९	२	२८	,,	१६	३४	१६	४६	५	१०	१५	१४	३०
२०२७	७	गुरु	१४	१५	७	२	५१	,,	२८	३६	१८	१४	४	५७	१५	५३	१
२०२८	८	शुक्र	१५	१३	७	३	१४	मिथुन	१०	९	१८	५३	४	३१	१६	३२	२
२०२९	९	शनि	१६	१२	१०	३	३८	,,	२२	२१	१८	४२	३	५४	१७	११	३
२०३०	१०	रवि	१७	११	२५	४	१	कर्क	४	१६	१७	४१	३	६	१७	५०	४
२०३१	१०	सोम	१८	१०	२२	४	२४	,,	१६	१९	१५	५२	२	९	१८	३०	५
२०३२	११	मङ्गल	१९	९	३२	४	४७	,,	२८	३५	१३	१७	१	६	१९	९	६
२०३३	१२	बुध	२०	८	३४	५	१०	सिंह	११	९	१०	२	उ०	२	१९	४९	७
२०३४	१३	गुरु	२१	७	५८	५	३३	,,	२४	३	६	१४	१	११	२०	२८	८
२०३५	१४	शुक्र	२२	७	१४	५	५६	कन्या	७	१८	२	१	२	१९	२१	८	९
२०३६	३०	शनि	२३	६	३३	६	१९	,,	२०	५५	द२	२४	३	२०	२१	४१	१०

ति०	वार	बुध तुला अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र सिंह अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० सि.
१	शुक्र	२	२०	२८	४२	२४	५२	१९	३४	९	४६	११	३३	६	१२	२५
२	शनि	२	४०	२८	५०	२६	६	१९	३४	९	४३	११	३२	६	१५	२६
३	रवि	२	५७	२८	५८	२७	२१	१९	३४	९	४०	११	३१	६	१७	२७
४	सोम	३	२	२९	६	२८	३५	१९	३३	९	३६	११	३०	६	१९	२८
५	मङ्गल	३	३	२९	१४	२९	५०	१९	३३	९	३२	११	२९	६	२१	२९
६	बुध	२	५७	२९	२२	क१	५	१९	३३	९	२९	११	२८	६	२४	३०
७	गुरु	२	४४	२९	२९	२	१९	१९	३२	९	२६	११	२७	६	२६	१
८	शुक्र	२	२३	२९	३७	३	३४	१९	३२	९	२३	११	२६	६	२८	२
९	शनि	१	५५	२९	४४	४	४९	१९	३१	९	२०	११	२५	६	३०	३
१०	रवि	१	१९	२९	५१	६	४	१९	३०	९	१७	११	२४	६	३३	४
१०	सोम	कं०	३५	२९	५८	७	१८	१९	२९	९	१४	११	२३	६	३५	५
११	मङ्गल	२९	४४	क.	४	८	३३	१९	२८	९	११	११	२२	६	३७	६
१२	बुध	२८	४६	०	११	९	४८	१९	२७	९	७	११	२१	६	३९	७
१३	गुरु	२७	४३	०	१७	११	३	१९	२५	९	४	११	२०	६	४२	८
१४	शुक्र	२६	३५	०	२४	१२	१८	१९	२४	९	१	११	१९	६	४४	९
३०	शनि	२५	२५	०	३०	१३	३३	१९	२२	८	५८	११	१८	६	४६	१०

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. सि
१	शु.	०	५५	२१	४३	२	४१	२	३९	०	३६	१५	५४	६	४१	३	३९	१	२३	२२	१	०	६	२१	४०	१	२०	०	३१	२५
४	र.	०	५०	२१	५०	१	४४	०	३५	०	३६	१५	४४	६	७	४	१३	१	२३	२२	१	०	६	२१	४०	१	२०	०	२८	२८
७	गु.	०	४५	२२	६	०	४४	उ१	११	०	३७	१५	३४	५	३१	४	४१	१	२३	२२	१	०	६	२१	४०	१	२०	०	२६	१
१०	र.	०	४०	२२	१६	उ०	१२	२	१८	०	३७	१५	२४	४	५६	५	२	१	२३	२२	१	०	६	२१	३९	१	२०	०	२३	४
१	बु.	०	३४	२२	२६	०	५८	२	३८	०	३८	१५	१५	४	२१	५	१५	१	२४	२२	१	०	६	२१	३९	१	२०	०	२१	७
३०	र.	०	२९	२२	३५	१	३०	२	१४	०	३८	१५	६	३	४६	५	२१	१	२४	२२	०	०	६	२१	३८	१	२०	०	१८	१०

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शाकः १८६४ आश्विन शुक्लपक्षः १५ सन १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य कन्या अं०	क०	वि	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्रक्रांति दक्षिण अं०	क०	चंद्र शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल कन्या अं०	क०	अंग्रेजी तारीख आ०
२०३७	१	रवि	२४	५	५३	६	४२	तुला	४	५०	६	४७	४	११	२२	२७	११
२०३८	२	सोम	२५	५	४३	७	५	„	१९	१	१०	५२	४	४७	२३	६	१२
२०३९	४	मङ्गल	२६	४	४०	७	२७	वृश्चिक	३	२१	१४	२२	५	६	२३	४६	१३
२०४०	५	बुध	२७	४	४०	७	५०	„	१७	४५	१७	१	५	५	२४	२५	१४
२०४१	६	गुरु	२८	४	२	८	१२	धनु	२	८	१८	३६	४	४६	२५	५	१५
२०४२	७	शुक्र	२९	३	२	८	३४	„	१६	२६	१८	५९	४	९	२५	४५	१६
२०४३	८	शनि	तु०	२	३५	८	५६	मकर	०	३६	१८	१०	३	१६	२६	२४	१७
२०४४	९	रवि	१	२	८	९	१८	„	१४	३६	१६	१५	२	१३	२७	४	१८
२०४५	१०	सोम	२	१	४३	९	४०	„	२८	२७	१३	२४	१	३	२७	४४	१९
२०४६	११	मङ्गल	३	१	२०	१०	२	कुम्भ	१२	६	९	४९	द०	११	२८	२४	२०
२०४७	१२	बुध	४	०	५८	१०	२४	„	२५	३६	५	४७	१	२२	२९	४	२१
२०४८	१३	गुरु	५	०	३८	१०	४५	मीन	८	५६	१	३१	२	२८	२९	४४	२२
२०४९	१४	शुक्र	६	०	२०	११	६	„	२२	३	उ२	४६	३	२५	तु०	२४	२३
२०५०	१५	शनि	७	०	४	११	२७	मेष	४	५९	६	५१	४	१०	१	४	२४

ति.	वार	बुध कन्या अं०	क०	गुरु कर्क अं०	क०	शुक्र कन्या अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० अक्टूबर
१	रवि	२४	१४	०	३६	१४	४८	१९	२०	८	५५	११	१५	७	१९	११
२	सोम	२३	४	०	४२	१६	३	१९	१८	८	५२	११	१४	७	२१	१२
४	मङ्गल	२१	५६	०	४८	१७	१८	१९	१७	८	४८	११	१२	७	२३	१३
५	बुध	२०	५३	०	५३	१८	३३	१९	१५	८	४५	११	११	७	२६	१४
६	गुरु	१९	५६	०	५९	१९	४८	१९	१३	८	४२	११	९	७	२८	१५
७	शुक्र	१९	८	१	४	२१	३	१९	११	८	३९	११	७	७	३०	१६
८	शनि	१८	३०	१	९	२२	१८	१९	९	८	३६	११	६	७	३२	१७
९	रवि	१८	२	१	१४	२३	३३	१९	६	८	३३	११	४	७	३४	१८
१०	सोम	१७	४५	१	१९	२४	४८	१९	४	८	२९	११	२	७	३६	१९
११	मङ्गल	१७	३९	१	२३	२६	३	१९	१	८	२६	११	०	७	३८	२०
१२	बुध	१७	४४	१	२८	२७	१८	१८	५९	८	२३	१०	५८	७	४०	२१
१३	गुरु	१८	०	१	३२	२८	३३	१८	५६	८	२०	१०	५६	७	४२	२२
१४	शुक्र	१८	२६	१	३६	२९	४८	१८	५३	८	१७	१०	५४	७	४४	२३
१५	शनि	१९	२	१	४०	तु१	३	१८	५०	८	१४	१०	५२	७	४६	२४

ति	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर ल० अं०	क०	बुध क्रान्ति उ० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति ल० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. अ.
४	मं.	०	२२	२२	४४	१	५०	१	११	०	३९	१४	५६	३	१३	५	२१	१	२४	२२	०	०	६	२१	३७	१	२०	०	१६	१३
७	शु.	०	१६	२२	५३	२	०	द०	१९	०	३९	१४	५८	२	४२	५	१३	१	२४	२२	०	०	६	२१	३७	१	२०	०	१३	१६
१०	सो	०	९	२३	२	२	०	२	८	०	४०	१४	३९	२	११	४	५९	१	२४	२२	०	०	६	२१	३६	१	२०	०	१०	१९
१३	गु.	०	२	२३	१०	१	५३	४	९	०	४०	१४	३१	१	४३	४	३९	१	२४	२१	५९	०	६	२१	३५	१	२०	०	८	२२

दैनिक ग्रह— सं० १९९९ शकः १८६४ कार्तिक कृष्णपक्षः १९ सन १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य तुला अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति उत्तर अं०	क०	चं० शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल तुला अं०	क०	अं० ता० अ.
२०५१	१	रवि	७	५९	५०	११	४८	मेष	१७	४२	१०	३३	४	४२	१	४४	२५
२०५२	२	सोम	८	५९	३८	१२	९	वृषभ	०	१३	१३	४४	५	०	२	२४	२६
२०५३	३	मङ्गल	९	५९	२८	१२	३०	”	१२	३०	१६	१५	५	३	३	४	२७
२०५४	४	बुध	१०	५९	२०	१२	५०	”	२४	३६	१८	०	४	५३	३	४४	२८
२०५५	५	गुरु	११	५९	१४	१३	१०	मिथुन	६	३३	१८	५७	४	३०	४	२४	२९
२०५६	६	शुक्र	१२	५९	११	१३	३०	”	१८	२४	१९	३	३	५५	५	५	३०
२०५७	७	शनि	१३	५९	९	१३	५०	कर्क	०	१४	१८	२०	३	१०	५	४५	३१
२०५८	८	रवि	१४	५९	१०	१४	९	”	१२	६	१६	४७	२	१७	६	२५	न१
२०५९	९	सोम	१५	५९	१३	१४	२९	”	२४	७	१४	३०	१	१७	७	५	२
२०६०	१०	मङ्गल	१६	५९	१८	१४	४८	सिंह	६	२२	११	३१	०	१३	७	४६	३
२०६१	११	बुध	१७	५९	२५	१५	७	”	१८	५६	७	५६	०	५४	८	२६	४
२०६२	१२	गुरु	१८	५९	३४	१५	२५	कन्या	१	५३	३	५३	२	०	९	६	५
२०६३	१३	शुक्र	१९	५९	४५	१५	४४	”	१५	१६	द३	३०	३	१	९	४७	६
२०६४	१४	शनि	२०	५९	५८	१६	२	”	२९	७	४	५९	३	५४	१०	२७	७
२०६५	३०	रवि	२२	०	१३	१६	१९	तुला	११	२२	९	१९	४	३४	११	८	८

ति०	वार	बुध कन्या अं०	क०	गुरु कर्क अं०	क०	शुक्र तुला अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० अ०
१	रवि	१९	४६	१	४३	२	१८	१८	४७	८	१०	१०	५०	७	४८	२५
२	सोम	२०	३९	१	४७	३	३४	१८	४४	८	७	१०	४८	७	५०	२६
३	मङ्गल	२१	३८	१	५०	४	४९	१८	४१	८	४	१०	४६	७	५२	२७
४	बुध	२२	४४	१	५३	६	४	१८	३८	८	०	१०	४४	७	५४	२८
५	गुरु	२३	५५	१	५६	७	१९	१८	३४	७	५७	१०	४२	७	५६	२९
६	शुक्र	२५	११	१	५९	८	३५	१८	३१	७	५४	१०	४०	७	५८	३०
७	शनि	२६	३०	२	२	९	५०	१८	२७	७	५१	१०	३८	८	०	३१
८	रवि	२७	५३	२	४	११	५	१८	२३	७	४८	१०	३६	८	२	न१
९	सोम	२९	१९	२	६	१२	२०	१८	२०	७	४५	१०	३४	८	४	२
१०	मङ्गल	तु०	४७	२	८	१३	३६	१८	१६	७	४२	१०	३१	८	५	३
११	बुध	२	१७	२	१०	१४	५१	१८	१२	७	३८	१०	२९	८	७	४
१२	गुरु	३	४९	२	११	१६	६	१८	८	७	३५	१०	२७	८	९	५
१३	शुक्र	५	२२	२	१३	१७	२१	१८	४	७	३२	१०	२५	८	११	६
१४	शनि	६	५८	२	१४	१८	३७	१८	०	७	२९	१०	२२	८	१२	७
३०	रवि	८	३१	२	१५	१९	५२	१७	५६	७	२६	१०	२०	८	१४	८

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	अ०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति द० अं०	क०	अं. ता. अ.
१	र.	०	६	२३	१८	१	४२	६	१४	०	४१	१४	२३	१	१६	४	१३	१	२५	२१	५९	०	६	२१	३५	१	२०	०	६	२५
४	बु.	०	१३	२३	२६	१	२७	८	२०	०	४२	१४	१६	०	५०	३	४२	१	२५	२१	५९	०	६	२१	३४	१	२०	०	३	२८
७	श.	०	२१	२३	२५	१	१०	१०	२४	०	४२	१४	९	०	२६	३	५	१	२५	२१	५९	०	६	२१	३३	१	२०	०	१	३१
८	र.	०	२४	२३	३७	१	४	११	४	०	४२	१४	७	०	१९	२	५२	१	२५	२१	५८	०	६	२१	३२	१	२१	०	०	न१
११	बु.	०	३३	२३	४५	०	४४	१३	२	०	४३	१४	०	उ०	३	२	१०	१	२५	२१	५८	०	६	२१	३१	१	२१	०	२	४
१४	श.	०	४१	२३	५२	०	२५	१४	५५	०	४४	१३	५४	०	२३	१	२३	१	२५	२१	५८	०	६	२१	३०	१	२१	०	४	७

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ कार्तिक शुक्लपक्षः १७ नव १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य तुला अं०	क०	वि	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्रक्रांति दक्षिण अं०	क०	चंद्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल तुला अं०	क०	अंग्रेजी तारीख नवम्बर
२०६६	१	सोम	२३	०	४०	१६	३७	तुला	२७	५७	१३	१३	४	५७	११	४८	९
२०६७	२	मङ्गल	२४	०	४८	१६	५४	वृश्चिक	१२	४५	१६	२०	५	०	१२	२९	१०
२०६८	३	बुध	२५	१	१८	१७	११	„	२७	३७	१८	२४	४	४४	१३	९	११
२०६९	४	गुरु	२६	१	३०	१७	२८	धनु	१२	२४	१९	१२	४	८	१३	५०	१२
२०७०	५	शुक्र	२७	१	५३	१७	४४	„	२३	५९	१८	४३	३	१७	१४	३१	१३
२०७१	६	शनि	२८	२	१८	१८	०	मकर	११	१९	१७	२	२	१४	१५	११	१४
२०७२	८	रवि	२९	२	४४	१८	१६	„	२५	२०	१४	२०	१	४	१५	५२	१५
२०७३	९	सोम	वृ०	३	११	१८	३२	कुम्भ	९	३	१०	५३	द०	८	१६	३३	१६
२०७४	१०	मङ्गल	१	३	३९	१८	४७	„	२२	३०	६	५६	१	१८	१७	१४	१७
२०७५	११	बुध	२	३	३९	१९	१	मीन	५	४१	२	४४	२	२३	१७	५५	१८
२०७६	१२	गुरु	३	४	४०	१९	१६	„	१८	४०	उ१	३३	३	१९	१८	३६	१९
२०७७	१३	शुक्र	४	५	१३	१९	३०	मेष	१	२७	५	४१	४	४	१९	१७	२०
२०७८	१४	शनि	५	५	४३	१९	४४	„	१४	३	९	३०	४	३६	१९	५८	२१
२०७९	१५	रवि	६	६	२१	१९	५७	„	२६	३०	१२	५२	४	५५	२०	३९	२२

ति.	वार	बुध तुला अं०	क०	गुरु कर्क अं०	क०	शुक्र तुला अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेजी ता० नवम्बर
१	सोम	१०	६	२	१६	२१	७	१७	५२	७	२३	१०	१८	८	१६	९
२	मङ्गल	११	४२	२	१६	२२	१३	१७	४८	७	२०	१०	१५	८	१८	१०
३	बुध	१३	१८	२	१७	२३	३८	१७	४३	७	१७	१०	१३	८	१९	११
४	गुरु	१४	५५	२	१७	२४	५४	१७	३९	७	१४	१०	१०	८	२१	१२
५	शुक्र	१६	११	२	१७	२६	९	१७	३५	७	१०	१०	८	८	२३	१३
६	शनि	१८	८	२	१७	२७	२५	१७	३०	७	७	१०	५	८	२४	१४
८	रवि	१९	४४	२	१६	२८	४०	१७	२६	७	४	१०	३	८	२६	१५
९	सोम	२१	२१	२	१६	२९	५५	१७	२१	७	०	१०	०	८	२७	१६
१०	मङ्गल	२२	५७	२	१५	वृ१	१०	१७	१७	६	५७	९	५८	८	२९	१७
११	बुध	२४	३३	२	१४	२	२६	१७	१२	६	५४	९	५५	८	३०	१८
१२	गुरु	२६	९	२	१३	३	४१	१७	८	६	५१	९	५३	८	३२	१९
१३	शुक्र	२७	४५	२	१२	४	५७	१७	३	६	४८	९	५१	८	३३	२०
१४	शनि	२९	१	२	१०	६	१२	१६	५८	६	४५	९	४९	८	३५	२१
१५	रवि	वृ०	५७	२	८	७	२८	१६	५३	६	४१	९	४६	८	३८	२२

ति	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति द० अं०	क०	अं. ता न..
२	मं.	०	५१	२३	५९	०	४	१६	४१	०	४४	१३	४८	०	४२	०	३३	१	२५	२१	५७	०	६	२१	२९	१	२१	०	६	१०
५	शु.	१	०	२४	६	द०	१६	१८	१९	०	४५	१३	४२	०	५८	०	२१	१	२५	२१	५७	०	६	२१	२८	१	२१	०	८	१३
९	सो	१	१०	२४	११	०	३५	१९	४९	०	४६	१३	३७	१	१४	१	१७	१	२५	२१	५७	०	६	२१	२७	१	२१	०	१०	१६
१२	गु.	१	१९	२४	१६	०	५४	२१	११	०	४६	१३	३३	१	२८	२	१७	१	२५	२१	५६	०	६	२१	२६	१	२१	०	१२	१९
१५	र.	१	२९	२४	२०	१	१२	२२	२३	०	४७	१३	२९	१	४०	३	१८	१	२५	२१	५६	०	६	२१	२५	१	२१	०	१३	२२

दैनिक ग्रह— सं० १९९९ शकः १८६४ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः २५ नव १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य वृश्चिक अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति उत्तर अं०	क०	चं० शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल तुला अं०	क०	अं० ता० नव
२०८०	१	सोम	७	६	५८	२०	१६	वृषभ	८	४८	१५	३८	४	५९	२१	२०	२३
२०८१	२	मङ्गल	८	७	३६	२०	३३	,,	२०	५६	१७	४१	४	५०	२२	१	२४
२०८२	३	बुध	९	८	१७	२०	३५	मिथुन	२	५६	१८	५५	४	२८	२२	४२	२५
२०८३	३	गुरु	१०	८	५६	२०	४७	,,	१४	५०	१९	१९	३	५५	२३	२३	२६
२०८४	४	शुक्र	११	९	३८	२०	५८	,,	२६	३९	१८	५३	३	११	२४	५	२७
२०८५	५	शनि	१२	१०	३२	२१	९	कर्क	८	२७	१७	३५	२	१९	२४	४६	२८
२०८६	६	रवि	१३	११	८	२१	२०	,,	२०	१८	१५	३४	१	२१	२५	२७	२९
२०८७	७	सोम	१४	११	५४	२१	३०	सिंह	२	१६	१२	५०	०	१८	२६	९	३०
२०८८	८	मङ्गल	१५	१२	४३	२१	४०	,,	१४	२७	९	३१	०	४६	२६	५०	१
२०८९	९	बुध	१६	१३	२२	२१	५०	,,	२६	५६	५	४२	१	५०	२७	३२	२
२०९०	१०	गुरु	१७	१४	२४	२१	५९	कन्या	९	४९	१	३१	२	५०	२८	१३	३
२०९१	११	शुक्र	१८	१५	१६	२२	७	,,	२३	९	द२	५३	३	४४	२८	५५	४
२०९२	१२	शनि	१९	१६	१०	२२	१६	तुला	६	५९	७	१८	४	२६	२९	३६	५
२०९३	१३	रवि	२०	१७	१०	२२	२३	,,	२१	१९	११	२८	४	५३	वृ०	१८	६
२०९४	१४	सोम	२१	१८	२	२२	३१	वृश्चि	६	५	१५	३	५	२	०	५९	७
२०९५	३०	मङ्गल	२२	१८	४९	२२	३८	,,	२१	८	१७	४२	४	५०	१	४१	८

ति०	वार	बुध वृश्चिक अं०	क०	गुरु कर्क अं०	क०	शुक्र वृश्चिक अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० नव
१	सोम	२	३२	२	६	८	४३	१६	४८	६	३८	९	४४	८	३९	२३
२	मङ्गल	४	७	२	४	९	५८	१६	४३	६	३५	९	४१	८	३९	२४
३	बुध	५	४२	२	२	११	१३	१६	३८	६	३२	९	३९	८	४०	२५
३	गुरु	७	१७	१	५९	१२	२९	१६	३३	६	२९	९	३६	८	४२	२६
४	शुक्र	८	५२	१	५७	१३	४४	१६	२९	६	२६	९	३४	८	४३	२७
५	शनि	१०	२६	१	५४	१५	०	१६	२४	६	२२	९	३१	८	४४	२८
६	रवि	१२	१	१	५१	१६	१५	१६	१९	६	१९	९	२९	८	४५	२९
७	सोम	१३	३५	१	४७	१७	३१	१६	१४	६	१६	९	२६	८	४७	३०
८	मङ्गल	१५	१०	१	४४	१८	४६	१६	९	६	१३	९	२४	८	४८	१
९	बुध	१६	४४	१	४०	२०	२	१६	४	६	१०	९	२१	८	४९	२
१०	गुरु	१८	१८	१	३६	२१	१७	१५	५९	६	७	९	१९	८	५०	३
११	शुक्र	१९	५२	१	३२	२२	३३	१५	५४	६	३	९	१६	८	५१	४
१२	शनि	२१	२७	१	२८	२३	४८	१५	४९	६	०	९	१४	८	५२	५
१३	रवि	२३	१	१	२४	२५	१३	१५	४४	५	५७	९	११	८	५३	६
१४	सोम	२४	३५	१	१९	२६	१८	१५	३९	५	५३	९	९	८	५४	७
३०	मङ्गल	२६	९	१	१४	२७	३४	१५	३४	५	५०	९	६	८	५५	८

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति उ० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर उ० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति द० अं०	क०	अं. ता. नौ.
३	बु.	१	३८	२४	२३	१	२९	२३	२५	०	४८	१३	२६	१	५१	४	२१	१	२५	२१	५५	०	६	२१	२३	१	२१	०	१५	२५
५	श.	१	४७	२४	२५	१	४३	२४	१६	०	४८	१३	२३	२	१	५	२६	१	२५	२१	५५	०	६	२१	२२	१	२२	०	१६	२८
८	मं.	१	५४	२४	२५	१	५६	२४	५६	०	४९	१३	२१	२	९	६	३२	१	२५	२१	५५	०	६	२१	२१	१	२२	०	१८	१
११	शु.	२	१	२४	२५	२	७	२५	२५	०	५०	१३	२०	२	१६	७	३८	१	२५	२१	५४	०	६	२१	२०	१	२२	०	१९	४
१४	सा	२	८	२४	२३	२	१४	२५	४०	०	५१	१३	१९	२	२१	८	४५	१	२५	२१	५४	०	६	२१	१९	१	२२	०	२०	७

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः १९ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य वृश्चिक अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल वृश्चिक अं०	क०	अं० ता० दि०
२०९६	२	बुध	२३	१९	५९	२२	४४	धनु	६	२१	१९	९	४	१८	२	२२	९
२०९७	३	गुरु	२४	२०	५९	२२	५०	,,	२१	३१	१९	१४	३	२७	३	४	१०
२०९८	४	शुक्र	२५	२१	५७	२२	५६	मकर	६	२८	१७	५७	२	२३	३	४६	११
२०९९	५	शनि	२६	२२	५८	२३	१	,,	२१	६	१५	३०	१	१०	४	२८	१२
२१००	६	रवि	२७	२३	५९	२३	६	कुम्भ	५	२०	१२	९	द०	५	५	१०	१३
२१०१	७	सोम	२८	२५	१	२३	१०	,,	१९	१०	८	१३	१	१८	५	५२	१४
२१०२	८	मङ्गल	२९	२६	३	२३	१३	मीन	२	३७	३	५८	२	२४	६	३४	१५
२१०३	९	बुध	ध०	२७	६	२३	२०	,,	१५	४२	उ०	२१	३	२१	७	१६	१६
२१०४	१०	गुरु	१	२८	९	२३	२२	,,	२८	३०	४	३३	४	७	७	५८	१७
२१०५	११	शुक्र	२	२९	१३	२३	२४	मेष	११	४	८	२९	४	४०	८	४०	१८
२१०६	१२	शनि	३	३०	१३	२३	२५	,,	२३	२६	११	५८	४	५९	९	२२	१९
२१०७	१३	रवि	४	३१	२१	२३	२६	वृषभ	५	३९	१४	५५	५	४	१०	४	२०
२१०८	१४.	सोम	५	३२	२६	२३	२७	,,	१७	४४	१७	११	४	५५	१०	४६	२१
२१०९	१५	मङ्गल	६	३३	३१	२३	२७	,,	२९	४३	१८	४२	४	३४	११	२८	२२

ति	वार	बुध वृश्चिक अं०	क०	गुरु कर्क अं०	क०	शुक्र वृश्चिक अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० दि०
२	बुध	२७	४३	१	९	२८	४९	१५	३०	५	४७	९	४	८	५५	९
३	गुरु	२९	१७	व१	४	ध.	५	१५	२५	५	४४	९	१	८	५६	१०
४	शुक्र	ध.	५२	०	५९	१	२०	१५	२०	५	४१	८	५९	८	५७	११
५	शनि	२	२६	०	५३	२	३६	१५	१५	५	३८	८	५६	८	५८	१२
६	रवि	४	०	०	४८	३	५१	१५	११	५	३४	८	५४	८	५९	१३
७	सोम	५	३५	०	४२	५	७	१५	६	५	३१	८	५१	९	०	१४
८	मङ्गल	७	१०	०	३६	६	२२	१५	१	५	२८	८	४९	९	१	१५
९	बुध	८	४४	०	३०	७	३८	१४	५६	५	२५	८	४७	९	२	१६
१०	गुरु	१०	१९	०	२३	८	५३	१४	५२	५	२२	८	४४	९	३	१७
११	शुक्र	११	५३	०	१६	१०	९	१४	४७	५	१९	८	४२	९	३	१८
१२	शनि	१३	२८	०	११	११	२४	१४	४३	५	१५	८	४०	९	४	१९
१३	रवि	१५	३	मि.	४	१२	४०	१४	३८	१	१२	८	३७	९	४	२०
१४	सोम	१६	३८	२९	५८	१३	५५	१४	३४	५	९	८	३५	९	५	२१
१५	मङ्गल	१८	१३	२९	५१	१५	१०	१४	३०	५	६	८	३३	९	५	२२

ति.	वार	मङ्गल शर उ० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. दि.
३	गु.	०	८	१९	८	१	३६	२४	४९	०	१२	२१	३१	०	२२	२३	३८	१	५६	१९	४८	०	९	२०	२५	१	२०	०	२८	१०
६	र.	०	६	१९	३९	१	४९	२५	१४	०	१३	२१	३४	०	२९	२३	५३	१	५६	१९	४६	०	९	२०	२३	१	२०	०	२७	१३
९	बु.	०	४	२०	८	१	५९	२५	२५	०	१३	२१	३८	०	३६	२४	२	१	५५	१९	४४	०	९	२०	२२	१	२०	०	२७	१६
१२	श.	०	२	२०	३५	२	७	२५	२४	०	१४	२१	४१	०	४३	२४	५	१	५५	१९	४२	०	९	२०	२०	१	२०	०	२६	१९
१५	मं.	०	०	२१	५	२	१२	२५	१०	०	१४	२१	४५	०	४९	२४	०	१	५४	१९	४१	०	९	२०	१९	१	२०	०	२६	२२

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ पौष कृष्णपक्षः २० सन् १९४३ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य			सूर्य क्रांति दक्षिण		चन्द्र			चं० क्रांति उत्तर		चं० शर दक्षिण		मङ्गल वृश्चिक		अं० ता० दि०
			अं०	क०	वि०	अं०	क०	रा०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
२११०	१	बुध	७	३४	३६	२३	२७	मिथुन	११	३७	१९	२२	४	०	१२	१०	२३
२१११	२	गुरु	८	३५	४२	२३	२६	,,	२३	२८	१९	११	३	१७	१२	५२	२४
२११२	३	शुक्र	९	३६	४९	२३	२५	कर्क	५	१७	१८	१०	२	२४	१३	३५	२५
२११३	४	शनि	१०	३७	४६	२३	२४	,,	१७	६	१६	२२	१	२५	१४	१७	२६
२११४	५	रवि	११	३९	६	२३	२२	,,	२८	५९	१३	५१	०	२२	१४	५९	२७
२११५	६	सोम	१२	४०	११	२३	१९	सिंह	१०	५९	१०	४४	उ०	२३	१५	४२	२८
२११६	७	मङ्गल	१३	४१	१९	२३	१७	,,	२३	१०	७	७	१	४६	१६	२४	२९
२११७	८	बुध	१४	४२	२८	२३	१३	कन्या	५	३६	३	७	२	४७	१७	७	३०
२११८	९	गुरु	१५	४३	३७	२३	१०	,,	१८	२४	द१	७	३	४०	१७	४९	३१
२११९	१०	शुक्र	१६	४४	४७	२३	५	तुला	१	३६	५	२५	४	२४	१८	३२	ज१
२१२०	११	शनि	१७	४५	५७	२३	१	,,	१५	१७	९	३६	४	५५	१९	१४	२
२१२१	१२	रवि	१८	४७	७	२२	५६	,,	२९	२७	१३	२४	५	९	१९	५७	३
२१२२	१३	सोम	१९	४८	१८	२२	५०	वृश्चि.	१४	४	१६	३०	५	३	२०	४०	४
२१२३	१४	मङ्गल	२०	४९	२९	२२	४४	,,	२९	५	१८	३५	४	३८	२१	२२	५
२१२४	३०	बुध	२१	५०	४०	२२	३७	धनु	१४	५९	१९	२३	३	५२	२२	१२	६

ति०	वार	बुध धनु		गुरु मिथुन		शुक्र धनु		शनि वृषभ		राहु सिंह		हर्शल वृषभ		नेपच्यून कन्या		अं० ता० दि०
		अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
१	बुध	१९	४७	२९	४४	१६	२५	१४	२६	५	०	८	३१	९	५	२३
२	गुरु	२१	२२	२९	३७	१७	४१	१४	२९	४	५६	८	२९	९	६	२४
३	शुक्र	२२	५६	२९	२९	१८	५६	१४	२१	४	५३	८	२७	९	६	२५
४	शनि	२४	३०	२९	२२	२०	१२	१४	१३	४	५०	८	२५	९	६	२६
५	रवि	२६	४	२९	१५	२१	२७	१४	९	४	४७	८	२३	९	६	२७
६	सोम	२७	३७	२९	७	२२	४३	१४	५	४	४४	८	२१	९	६	२८
७	मङ्गल	२९	९	२९	०	२३	५९	१४	१	४	४१	८	१९	९	७	२९
८	बुध	म०	४०	२८	५२	२५	१४	१३	५७	४	३७	८	१७	९	७	३०
९	गुरु	२	११	२८	४४	२६	२९	१३	५३	४	३४	८	१५	९	७	३१
१०	शुक्र	३	४०	२८	३७	२७	४५	१३	४९	४	३१	८	१३	९	७	ज१
११	शनि	५	८	२८	२९	२९	०	१३	४६	४	२८	८	१२	९	७	२
१२	रवि	६	३३	२८	२१	म०	१५	१३	४२	४	२४	८	१०	९	७	३
१३	सोम	७	५७	२८	१३	१	३०	१३	३९	४	२१	८	८	व९	७	४
१४	मङ्गल	९	१७	२८	६	२	४६	१३	३५	४	१८	८	६	९	७	५
३०	बुध	१०	३५	२७	५८	४	१	१३	३२	४	१५	८	५	९	७	६

ति.	वार	मङ्गल शर द०		मङ्गल क्रान्ति द०		बुध शर उ०		बुध क्रान्ति द०		गुरु शर उ०		गुरु क्रान्ति उ०		शुक्र शर द०		शुक्र क्रान्ति द०		शनि शर द०		शनि क्रान्ति उ०		हर्शल शर द०		हर्शल क्रान्ति उ०		नेपच्यून शर उ०		नेपच्यून क्रान्ति उ०		अं. ता. दि.
		अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	अं०	क०	
३	शु.	०	२	२१	४६	२	१२	२४	४१	०	१५	२१	४९	०	५५	२३	४९	१	५४	१९	३९	०	९	२०	१८	१	२०	०	२६	२५
६	सो	०	३	२१	४८	२	८	२३	५९	०	१५	२१	५३	१	१	२३	३२	१	५३	१९	३८	०	९	२०	१७	१	२१	०	२५	२८
९	गु.	०	५	२२	९	१	५९	२३	४	०	१६	२१	५७	१	६	२३	१	१	५३	१९	३६	०	९	२०	१५	१	२१	०	२५	३१
१०	शु.	०	६	२२	१६	१	५४	२२	४३	०	१६	२१	५८	१	८	२२	५८	१	५२	१९	३६	०	९	२०	१५	१	२१	०	२५	१
१३	सो.	०	८	२२	३४	१	३६	२१	३२	०	१६	२२	३	१	१२	२२	२५	१	५२	१९	३५	०	९	२०	१४	१	२१	०	२५	४

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शक: १८६४ पौष शुक्लपक्ष: २१ सन् १९४३ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य धन अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल वृश्चिक अं०	क०	अं० ता० ज०
२१२५	१	गुरु	२२	५१	५०	२२	३०	धनु	२९	२७	१८	४६	२	४९	२२	४८	७
२१२६	२	शुक्र	२३	५३	१	२२	२३	मकर	१४	४८	१६	४९	१	३५	२३	३१	८
२१२७	३	शनि	२४	५४	११	२२	१५	,,	२९	४३	१३	४४	०	१५	२४	१४	९
२१२८	४	रवि	२५	५५	२१	२२	७	कुम्भ	१४	१४	९	५२	द१	४	२४	५७	१०
२१२९	५	सोम	२६	५६	३१	२१	५८	,,	२८	१८	५	३४	२	१६	२५	४०	११
२१३०	६	मङ्गल	२७	५७	४०	२१	४९	मीन	११	५५	१	७	३	१९	२६	२३	१२
२१३१	८	बुध	२८	५८	४०	२१	४०	,,	२५	६	उ३	१५	४	९	२७	६	१३
२१३२	९	गुरु	२९	५९	५५	२१	३०	मेष	७	५५	७	२०	४	४५	२७	४९	१४
२१३३	१०	शुक्र	म१	१	२	२१	१९	,,	२०	५५	१०	५९	५	६	२८	३२	१५
२१३४	१०	शनि	२	२	८	२१	८	वृषभ	२	४१	१४	६	५	१३	२९	१५	१६
२१३५	११	रवि	३	३	१४	२०	५७	,,	१४	४५	१६	३४	५	६	२९	५८	१७
२१३६	१२	सोम	४	४	१९	२०	४६	,,	२६	४३	१८	१८	४	४५	ध०	४२	१८
२१३७	१३	मङ्गल	५	५	२२	२०	३४	मिथुन	८	३५	१९	१४	४	१२	१	२५	१९
२१३८	१४	बुध	६	६	२६	२०	२१	,,	२०	२५	१९	१९	३	२९	२	८	२०
२१३९	१५	गुरु	७	७	२८	२०	८	कर्क	२	१५	१८	३२	२	३७	२	५१	२१

ति	वार	बुध मकर अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मकर अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० ज०
१	गुरु	११	४८	२७	५०	५	१६	१३	२९	४	१५	८	३	९	७	७
२	शुक्र	१२	५७	२७	४२	६	३१	१३	२६	४	१२	८	१	९	७	८
३	शनि	१४	१	२७	३४	७	४६	१३	२३	४	९	८	०	९	७	९
४	रवि	१४	५९	२७	२५	९	२	१३	२०	४	५	७	५९	९	७	१०
५	सोम	१५	५१	२७	१७	१०	१७	१३	१७	४	२	७	५७	९	६	११
६	मङ्गल	१६	३४	२७	९	११	३२	१३	१४	३	५९	७	५६	९	६	१२
८	बुध	१७	९	२७	१	१२	४७	१३	११	३	५६	७	५४	९	६	१३
९	गुरु	१७	३४	२६	५३	१४	३	१३	९	३	५३	७	५३	९	५	१४
१०	शुक्र	१७	४९	२६	४५	१५	१८	१३	६	३	५०	७	५२	९	५	१५
१०	शनि	१७	५३	२६	३७	१६	३३	१३	४	३	४६	७	५१	९	५	१६
११	रवि	१७	४६	२६	२९	१७	४८	१३	१	३	४३	७	४९	९	४	१७
१२	सोम	१७	२७	२६	२१	१९	४	१२	५९	३	४०	७	४८	९	४	१८
१३	मङ्गल	१६	५६	२६	१३	२०	१९	१२	५७	३	३७	७	४७	९	३	१९
१४	बुध	१६	१४	२६	५	२१	३४	१२	५५	३	३४	७	४६	९	३	२०
१५	गुरु	१५	२१	२५	५७	२२	४९	१२	५३	३	३१	७	४५	९	२	२१

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. ज.
१	गु.	०	१०	२२	५१	१	१०	२०	१३	०	१७	२२	७	१	१६	२१	४६	१	५१	१९	३४	०	९	२०	१३	१	२१	०	२५	७
४	र.	०	१२	२३	६	०	३५	१८	५१	०	१७	२२	११	१	२०	२१	२	१	५०	१९	३३	०	९	२०	१२	१	२१	०	२६	१०
८	बु.	०	१४	२३	१८	उ०	१०	१७	३३	०	१८	२२	१५	१	२४	२०	१२	१	५०	१९	३२	०	९	२०	११	१	२१	०	२६	१३
१०	श.	०	१६	२३	२९	१	२	१६	३१	०	१८	२२	१९	१	२७	१९	१६	१	४९	१९	३२	०	९	२०	११	१	२२	०	२७	१६
१३	मं.	०	१८	२३	३८	१	५७	१५	५४	०	१८	२२	२३	१	२९	१८	१६	१	४८	१९	३१	०	९	२०	१०	१	२२	०	२७	१९

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ माघ कृष्णपक्षः २२ जन १९४३ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य मकर अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति उत्तर अं०	क०	चं० शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल धनु अं०	क०	अं० ता० ज०
२१४०	१	शुक्र	८	८	३०	१९	५५	कर्क	१४	६	१६	५७	१	३७	३	३५	२२
२१४१	२	शनि	९	९	३२	१९	४२	,,	२६	१	१४	३७	०	३३	४	१९	२३
२१४२	३	रवि	१०	१०	३२	१९	२८	सिंह	८	२	११	३९	उ०	३३	५	१	२४
२१४३	४	सोम	११	११	३२	१९	१४	,,	२०	१०	८	९	१	३९	५	४५	२५
२१४४	५	मङ्गल	१२	१२	३१	१८	५९	कन्या	२	२९	४	१६	२	४१	६	२८	२६
२१४५	६	बुध	१३	१३	३०	१८	४४	,,	१५	२	०	९	३	३६	७	१२	२७
२१४६	७	गुरु	१४	१३	२८	१८	२९	,,	२७	५२	द४	४	४	२२	७	५५	२८
२१४७	८	शुक्र	१५	१५	२६	१८	१३	तुला	११	१	८	१२	४	५६	८	३९	२९
२१४८	९	शनि	१६	१६	२२	१७	५७	,,	२४	३३	१२	२	५	१४	९	२२	३०
२१४९	१०	रवि	१७	१७	१८	१७	४१	वृश्चि.	८	२९	१५	१९	५	१५	१०	६	३१
२१५०	११	सोम	१८	१८	१४	१७	२४	,,	२२	४९	१७	४६	४	५६	१०	५०	फ१
२१५१	१२	मङ्गल	१९	१९	८	१७	७	धनु	७	३१	१९	९	४	१८	११	३३	२
२१५२	१३	बुध	२०	२०	२	१६	५०	,,	२२	२८	१९	१३	३	२२	१२	१७	३
२१५३	१४	गुरु	२१	२०	५५	१६	३३	मकर	७	३४	१७	५४	२	११	१३	१	४

ति०	वार	बुध मकर अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मकर अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० ज०
१	शुक्र	१४	२०	२५	४९	२४	५	१२	५२	३	२७	७	४५	९	२	२२
२	शनि	१३	१३	२५	४१	२५	२०	१२	५०	३	२४	७	४४	९	१	२३
३	रवि	१२	०	२५	३३	२६	३५	१२	४७	३	२१	७	४३	९	०	२४
४	सोम	१०	४४	२५	२६	२७	५०	१२	४७	३	१८	७	४२	९	०	२५
५	मङ्गल	९	२८	२५	१८	२९	५	१२	४५	३	१५	७	४१	८	५९	२६
६	बुध	८	१४	२५	११	कुं०	२०	१२	४४	३	१२	७	४०	८	५८	२७
७	गुरु	७	३	२५	४	१	३५	१२	४३	३	८	७	४०	८	५७	२८
८	शुक्र	५	५७	२४	५७	२	५०	१२	४२	३	५	७	३९	८	५७	२९
९	शनि	४	५८	२४	५०	४	५	१२	४२	३	२	७	३९	८	५६	३०
१०	रवि	४	८	२४	४३	५	२०	१२	४१	२	५९	७	३८	८	५५	३१
११	सोम	३	२५	२४	३६	६	३५	१२	४१	२	५५	७	३८	८	५४	फ१
१२	मङ्गल	२	५१	२४	२९	७	५०	१२	४०	२	५२	७	३८	८	५३	२
१३	बुध	२	२६	२४	२३	९	५	१२	३९	२	४९	७	३७	८	५२	३
१४	गुरु	२	९	२४	१६	१०	२०	१२	३९	२	४६	७	३७	८	५१	४

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर उ० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. ज०
१	शु.	०	२०	२३	४४	२	४७	१५	४५	०	१९	२२	२६	१	३१	१७	११	१	४७	१९	३१	०	९	२०	१०	१	२२	०	२८	२२
४	सो	०	२२	२३	४९	३	२२	१६	४	०	१९	२२	२९	१	३२	१६	१	१	४६	१९	३१	०	९	२०	९	१	२२	०	२९	२५
७	गु.	०	२५	२३	५१	३	३५	१६	४०	०	१९	२२	३२	१	३३	१४	४८	१	४६	१९	३१	०	९	२०	९	१	२२	०	३०	२८
१०	र.	०	२७	२३	५१	३	२७	१७	२२	०	२०	२२	३६	१	३३	१३	३१	१	४५	१९	३१	०	९	२०	९	१	२२	०	३१	३१
११	सो.	०	२७	२३	५१	३	२१	१७	३५	०	२०	२२	३७	१	३२	१३	४	१	४५	१९	३१	०	९	२०	८	१	२२	०	३१	फ१
१४	गु.	०	३०	२३	४८	२	५५	१८	१५	०	२०	२२	३९	१	३१	११	४३	१	४४	१९	३२	०	८	२०	८	१	२३	०	३३	४

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शक: १८६४ माघ शुक्लपक्ष: २३ सन् १९४३ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य मकर अं०	क०	वि	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चंद्रक्रांति दक्षिण अं०	क०	चंद्र शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल धनु अं०	क०	अंग्रेज़ी तारीख फरवरी
२१५४	१	शुक्र	२२	२१	४७	१६	१५	मकर	२२	४०	१५	२०	०	५२	१३	४५	५
२१५५	२	शनि	२३	२२	३७	१५	५७	कुम्भ	७	३५	११	४६	द०	३१	१४	२९	६
२१५६	३	रवि	२४	२३	२६	१५	३९	,,	२२	१३	७	३२	१	५०	१५	५७	७
२१५७	४	सोम	२५	२४	१४	१५	२०	मीन	६	२८	२	५९	३	०	१६	४१	८
२१५८	५	मङ्गल	२६	२५	१	१५	१	,,	२०	१६	उ१	३४	३	५८	१७	२५	९
२१५९	६	बुध	२७	२५	४६	१४	४२	मेष	३	३८	५	५२	४	४०	१८	९	१०
२१६०	७	गुरु	२८	२५	२९	१४	२३	,,	१६	३४	९	४९	५	७	१८	५३	११
२१६१	८	शुक्र	२९	२७	११	१४	३	,,	२९	८	१३	११	५	१८	१९	३७	१२
२१६२	९	शनि	कुं०	२७	५१	१३	४३	वृषभ	११	२५	१५	५३	५	१४	२०	२१	१३
२१६३	१०	रवि	१	२८	२९	१३	२३	,,	२३	२८	१७	५१	४	५६	२१	५	१४
२१६४	११	सोम	२	२९	६	१३	३	मिथुन	५	२२	१९	०	४	२६	२१	४९	१५
२१६५	१२	मङ्गल	३	२९	४१	१२	४२	,,	१७	५१	१९	२०	३	४५	२२	३४	१६
२१६६	१३	बुध	४	३०	१४	१२	२२	,,	२९	०	१८	४८	२	५३	२३	१७	१७
२१६७	१३	गुरु	५	३०	४६	१२	१	कर्क	१०	५१	१७	२६	१	५५	२४	२	१८
२१६८	१४	शुक्र	६	३१	१६	११	४०	,,	२२	४८	१५	१९	०	५१	२४	४६	१९
२१६९	१५	शनि	७	३१	४४	११	१८	सिंह	४	५१	१९	२९	उ०	१६	२५	३०	२०

ति.	वार	बुध मकर अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र कुम्भ अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अंग्रेज़ी ता० फरवरी
१	शुक्र	२	०	२४	१०	११	३५	१२	३८	२	४३	७	३७	व८	५०	५
२	शनि	१	५९	२४	३	१२	५०	१२	३८	२	४०	७	३७	८	४९	६
३	रवि	२	५	२३	५७	१४	४	१२	३८	२	३६	७	३७	८	४८	७
४	सोम	२	१८	२३	५१	१५	१९	१२	३९	२	३३	७	३७	८	४७	८
५	मङ्गल	२	३८	२३	४५	१६	३४	१२	३९	२	३०	७	३७	८	४६	९
६	बुध	३	३	२३	४०	१७	४९	१२	३९	२	२७	९	३७	८	४५	१०
७	गुरु	३	३४	२३	३४	१९	३	१२	३९	२	२४	७	३८	८	४३	११
८	शुक्र	४	१०	२३	२९	२०	१८	१२	४०	२	२१	७	३८	८	४२	१२
९	शनि	४	५०	२३	२४	२१	३३	१२	४०	२	१७	७	३८	८	४१	१३
१०	रवि	५	३४	२३	१९	२२	४७	१२	४१	२	१४	७	३८	८	४०	१४
११	सोम	६	२२	२३	१४	२४	२	१२	४३	२	११	७	३९	८	३८	१५
१२	मङ्गल	७	१४	२३	९	२५	१६	१२	४४	२	८	७	३९	८	३७	१६
१३	बुध	८	९	२३	५	२६	३१	१२	४५	२	५	७	४०	८	३६	१७
१३	गुरु	९	७	२३	०	२७	४५	१२	४६	२	२	७	४०	८	३५	१८
१४	शुक्र	१०	७	२२	५६	२९	०	१२	४८	१	५८	७	४१	८	३३	१९
१५	शनि	११	११	२२	५२	मी.	१४	१२	४९	१	५५	७	४१	८	३२	२०

ति	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर ज० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. फ.
३	र.	०	३२	२३	४३	२	२२	१८	४८	०	२०	२२	४२	१	२९	१०	१९	१	४३	१९	३३	०	८	२०	८	१	२३	०	३४	७
६	बु.	०	३४	२३	३६	१	४७	१९	१२	०	२१	२२	४५	१	२७	८	२३	१	४२	१९	३४	०	८	२०	८	१	२३	०	३५	१०
९	श.	०	३६	२३	२७	१	१२	१९	२६	०	२१	२२	४७	१	२४	७	२४	१	४२	१९	३५	०	८	२०	८	१	२३	०	३७	१३
१२	मं.	०	३९	२३	१६	०	३९	१९	२९	०	२१	२२	४९	१	२०	५	५४	१	४१	१९	३६	०	८	२०	९	१	२३	०	३९	१६
१४	श.	०	४१	२३	३	०	७	१९	२१	०	२२	२२	५१	१	१६	४	२३	१	४०	१९	३७	०	८	२०	९	१	२३	०	४०	१९

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शक: १८६४ फाल्गुन कृष्ण पक्ष: २४ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य कुम्भ अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति उत्तर अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल धन अं०	क०	अं० ता० फ०
२१७०	१	रवि	८	३२	११	१०	५७	सिंह	१७	४	९	५	१	२३	२६	१५	२१
२१७१	२	सोम	९	३२	३६	१०	३४	,,	२९	२८	५	१५	२	२७	२६	५९	२२
२१७२	३	मङ्गल	१०	३३	०	१०	११	कन्या	१२	४	१	८	३	२४	२७	४४	२३
२१७३	४	बुध	११	३३	२२	९	५२	,,	२४	५२	द३	६	४	१३	२८	२८	२४
२१७४	५	गुरु	१२	३३	४३	९	३०	तुला	७	५५	७	१५	४	४९	२९	१३	२५
२१७५	६	शुक्र	१३	३४	२	९	७	,,	२१	१३	११	८	५	११	२९	५७	२६
२१७६	७	शनि	१४	३४	२०	८	४५	वृश्चि.	४	४६	१४	३१	५	१६	म०	४२	२७
२१७७	८	रवि	१५	३४	३६	८	२३	,,	१८	३६	१७	१०	५	४	१	२६	२८
२१७८	१०	सोम	१६	३४	५१	८	०	धनु	२	४२	१८	५०	४	३२	२	११	मा१
२१७९	११	मङ्गल	१७	३५	४	७	३७	,,	१७	३	१९	२१	३	४४	२	५५	२
२१८०	१२	बुध	१८	३५	१६	७	१४	मकर	१	३६	१८	३५	२	४०	३	४०	३
२१८१	१३	गुरु	१९	३५	२७	६	५१	,,	१६	१६	१६	३४	१	२७	४	२५	४
२१८२	१४	शुक्र	२०	३५	३५	६	२८	कुम्भ	०	५९	१३	२८	०	६	५	९	५
२१८३	३०	शनि	२१	३५	५३	६	५	,,	१५	३८	९	३०	द१	१५	५	१४	६

ति०	वार	बुध मकर अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मीन अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० फ०
१	रवि	१२	१६	२२	४९	१	२८	१२	५१	१	५२	७	४२	८	३१	२१
२	सोम	१३	२४	२२	४५	२	४३	१२	५२	१	४९	७	४३	८	२९	२२
३	मङ्गल	१४	३४	२२	४२	३	५७	१२	५४	१	४६	७	४४	८	२८	२३
४	बुध	१५	४६	२२	३९	५	११	१२	५६	१	४३	७	४५	८	२६	२४
५	गुरु	१६	५९	२२	३६	६	२५	१२	५८	१	३९	७	४६	८	२५	२४
६	शुक्र	१८	१५	२२	३३	७	४१	१३	०	१	३६	७	४७	८	२३	२५
७	शनि	१९	३१	२२	३१	८	५४	१३	३	१	३३	७	४८	८	२२	२६
८	रवि	२०	५०	२२	२८	१०	८	१३	५	१	३०	७	४९	८	२०	२७
१०	सोम	२२	१०	२२	२६	११	२२	१३	७	१	२७	७	५०	८	१९	२८
११	मङ्गल	२३	३२	२२	२४	१२	३६	१३	१०	१	२४	७	५१	८	१७	मा१
१२	बुध	२४	५४	२२	२२	१३	५०	१३	१२	१	२१	७	५२	८	१६	२
१३	गुरु	२६	१९	२२	२१	१५	४	१३	१५	१	१७	७	५३	८	१४	३
१४	शुक्र	२७	४४	२२	२०	१६	१८	१३	१८	१	१४	७	५४	८	१३	४
३०	शनि	२९	११	२२	१९	१७	३२	१३	२१	१	११	७	५५	८	११	५ ६

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर द० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति द० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. फ०
३	सो	०	४३	२२	४७	०	२१	१९	२	०	२२	२२	५२	१	१२	२	५०	१	३९	१९	३९	०	८	२०	९	१	२३	०	४२	२२
५	गु.	०	४६	२२	२९	०	४७	१८	३१	०	२२	२२	५४	१	७	१	१६	१	३९	१९	४१	०	८	२०	१०	१	२३	०	४४	२५
८	र.	०	४८	२२	१०	१	१०	१७	२९	०	२२	२२	५५	१	१	उ०	१७	१	३८	१९	४३	०	८	२०	११	१	२३	०	४६	२८
१०	सो.	०	४९	२२	३	१	१७	१७	३२	०	२२	२२	५५	०	५९	०	४९	१	३८	१९	४३	०	८	२०	११	१	२३	०	४७	मा१
१३	गु.	०	५१	२१	४०	१	३५	१६	३३	०	२२	२२	५६	०	५३	२	२२	१	३७	१९	४५	०	८	२०	१२	१	२४	०	४९	४

दैनिक ग्रह—सं० १९९९ शकः १८६४ फाल्गुन शुक्लपक्षः २५ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति.	वार	सूर्य कुम्भ अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रांति दक्षिण अं०	क०	चन्द्र शर दक्षिण अं०	क०	मङ्गल मकर अं०	क०	अं० ता० मा०
२१८४	१	रवि	२२	३५	४८	५	४२	मीन	०	६	५	२	२	२९	६	२४	७
२१८५	२	सोम	२३	३५	५१	५	१९	,,	१४	१७	०	२३	३	३३	६	३९	८
२१८६	३	मङ्गल	२४	३५	५२	४	५५	,,	२८	७	उ४	१०	४	२२	७	१३	९
२१८७	४	बुध	२५	३५	५२	४	३२	मेष	११	३३	८	२३	४	५६	८	८	१०
२१८८	५	गुरु	२६	३५	४९	४	८	,,	२४	३५	१२	४	५	१२	८	५३	११
२१८९	६	शुक्र	२७	३५	४४	३	४५	वृषभ	७	१४	१५	५	५	१३	९	३८	१२
२१९०	७	शनि	२८	३५	३६	३	२९	,,	१९	३४	१७	२१	५	०	१०	२३	१३
२१९१	८	रवि	२९	३५	२७	२	५८	मिथुन	१	३९	१८	४८	४	३३	११	८	१४
२१९२	९	सोम	मी	३५	१५	२	३४	,,	१३	३४	१९	२३	३	५५	११	५३	१५
२१९३	१०	मङ्गल	१	३५	१	२	१०	,,	२५	२३	१९	७	३	७	१२	३८	१६
२१९४	११	बुध	२	३४	४५	१	४७	कर्क	७	१२	१८	०	२	११	१३	२३	१७
२१९५	१२	गुरु	३	३४	२७	१	२३	,,	१९	५	१६	५	१	९	१४	८	१८
२१९६	१३	शुक्र	४	३४	६	०	५९	सिंह	१	७	१३	२७	०	४	१४	५३	१९
२१९७	१४	शनि	५	३३	४३	०	३६	,,	१३	१९	१०	११	उ१	३	१५	३८	२०
२१९८	१५	रवि	६	३३	१९	०	१२	,,	२५	४६	६	२५	२	७	१६	२३	२१

ति	वार	बुध कुम्भ अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मीन अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० मा०
१	रवि	०	३९	२२	१६	१८	४६	१३	२४	१	७	७	५६	८	९	७
२	सोम	२	८	२२	१५	२०	०	१३	२७	१	४	८	१	८	८	८
३	मङ्गल	३	३८	२२	१४	२१	१४	१३	३०	१	१	८	२	८	७	९
४	बुध	५	१०	२२	१४	२२	२८	१३	३४	०	५८	८	३	८	५	१०
५	गुरु	६	४३	२२	१३	२३	४१	१३	३७	०	५५	८	४	८	४	११
६	शुक्र	८	१७	२२	१३	२४	५५	१३	४१	०	५२	८	६	८	२	१२
७	शनि	९	५३	२२	१३	२६	९	१३	४५	०	४८	८	७	८	०	१३
८	रवि	११	२९	२२	१४	२७	२२	१३	४८	०	४५	८	८	७	५९	१४
९	सोम	१३	७	२२	१४	२८	३६	१३	५२	०	४२	८	११	७	५७	१५
१०	मङ्गल	१४	४६	२२	१४	२९	४९	१३	५६	०	३९	८	१३	७	५५	१६
११	बुध	१६	२६	२२	१५	मे१	२	१४	०	०	३६	८	१५	७	५३	१७
१२	गुरु	१८	७	२२	१६	२	१६	१४	४	०	३३	८	१७	७	५२	१८
१३	शुक्र	१९	५०	२२	१८	३	२९	१४	९	०	२९	८	१९	७	५०	१९
१४	शनि	२१	३३	२२	१९	४	४२	१४	१३	०	२६	८	२१	७	४८	२०
१५	रवि	२३	१८	२२	२१	५	५५	१४	१७	०	२३	८	२३	७	४६	२१

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. सि.
१	र.	०	५३	२१	१६	१	५०	१५	२३	०	२३	२२	५७	०	४६	३	५६	१	३६	१९	४८	०	८	२०	१३	१	२४	०	५१	७
४	बु.	०	५६	२०	५०	२	२	१४	२	०	२३	२२	५७	०	३९	५	२८	१	३५	१९	५०	०	८	२०	१३	१	२४	०	५३	१०
७	श.	१	५८	२०	२१	२	१०	१२	२९	०	२३	२२	५८	०	३१	७	०	१	३५	१९	५२	०	८	२०	१४	१	२४	०	५५	१३
१०	मं.	१	०	१९	५१	२	१४	१०	४५	०	२३	२२	५८	०	२३	८	३०	१	३४	१९	५५	०	८	२०	१६	१	२४	०	५७	१६
१३	श.	१	३	१९	१९	२	१५	८	५०	०	२३	२२	५८	०	१४	९	५९	१	३३	१९	५८	०	८	२०	१७	१	२४	०	५८	१९

दैनिक ग्रह— सं० १९९९ शकः १८६४ चैत्र कृष्णपक्षः २६ सन् १९४२ ई०

अहर्गण	ति०	वार	सूर्य मीन अं०	क०	वि०	सूर्य क्रांति उत्तर अं०	क०	चन्द्र रा०	अं०	क०	चं० क्रान्ति उत्तर अं०	क०	चं० शर उत्तर अं०	क०	मङ्गल मकर अं०	क०	अं० ता० मा.
२१९९	१	सोम	७	३२	५२	०	१२	कन्या	८	२८	२	१७	३	७	१७	८	२२
२२००	२	मङ्गल	८	३२	२३	०	३६	,,	२१	२५	द२	१	३	५८	१८	३८	२३
२२०१	३	बुध	९	३१	५२	१	२३	तुला	४	३७	६	१७	४	३७	१९	२३	२४
२२०२	४	गुरु	१०	३१	१९	१	४६	,,	१८	३	१०	२१	५	२	२०	८	२५
२२०३	५	शुक्र	११	३०	४४	२	१०	वृश्चि	१	४०	१३	५५	५	१०	२०	५४	२६
२२०४	६	शनि	१२	३०	८	२	३३	,,	१५	२८	१६	४६	५	१	२१	३९	२७
२२०५	७	रवि	१३	२९	३०	२	५७	,,	२९	२४	१८	४१	४	३३	२२	२४	२८
२२०६	८	सोम	१४	२८	५०	३	२०	धनु	१३	२७	१९	२८	३	५०	२३	९	२९
२२०७	९	मङ्गल	१५	२७	५८	३	४४	,,	२७	३६	१९	३	२	५२	२३	५४	३०
२२०८	१०	बुध	१६	२७	१५	३	४९	मकर	११	४९	१७	२५	१	४३	२४	३९	३१
२२०९	११	गुरु	१७	२७	३०	४	७	,,	२६	५	१४	४१	०	२८	२५	२४	अ१
२२१०	१२	शुक्र	१८	२५	४३	४	३०	कुम्भ	१०	२१	११	४	द०	४९	२६	९	२
२२११	१४	शनि	१९	२४	५४	४	५३	,,	२४	३३	६	४९	२	३	२६	५५	३
२२१२	३०	रवि	२०	२४	३	५	१६	मीन	८	३८	२	१५	३	८	२७	४०	४

ति०	वार	बुध कुम्भ अं०	क०	गुरु मिथुन अं०	क०	शुक्र मेष अं०	क०	शनि वृषभ अं०	क०	राहु सिंह अं०	क०	हर्शल वृषभ अं०	क०	नेपच्यून कन्या अं०	क०	अं० ता० मार्च
१	सोम	२५	४	२२	२३	७	८	१४	२२	०	२०	८	२५	७	४५	२२
२	मङ्गल	२६	५२	२२	२५	८	५१	१४	२६	०	१७	८	२७	७	४३	२३
३	बुध	२८	४१	२२	२७	९	३४	१४	३१	०	१४	८	२९	७	४२	२४
४	गुरु	मी	४१	२२	२९	१०	४७	१४	३६	०	१०	८	३१	७	४०	२५
५	शुक्र	२	२२	२२	३२	१२	०	१४	४०	०	७	८	३४	७	३९	२६
६	शनि	४	१५	२२	३४	१३	१२	१४	४५	०	४	८	३६	७	३७	२७
७	रवि	६	९	२२	३७	१४	२५	१४	५०	क०	०	८	३८	७	३५	२८
८	सोम	८	४	२२	४०	१५	३८	१४	५५	२९	५८	८	४१	७	३३	२९
९	मङ्गल	१०	४	२२	४४	१६	५०	१५	०	२९	५५	८	४३	७	३२	३०
१०	बुध	११	५८	२२	४७	१८	३	१५	५	२९	५१	८	४६	७	३०	३१
११	गुरु	१३	५७	२२	५१	१९	१५	१५	१०	२९	४८	८	४८	७	२८	अ१
१२	शुक्र	१५	५७	२२	५५	२०	२८	१५	१५	२९	४५	८	५१	७	२६	२
१४	शनि	१७	५९	२२	५९	२१	४०	१५	२१	२९	४२	८	५३	७	२५	३
३०	रवि	२०	१	२३	३	२२	५३	१५	२६	२९	३९	८	५६	७	२३	४

ति.	वार	मङ्गल शर द० अं०	क०	मङ्गल क्रान्ति द० अं०	क०	बुध शर द० अं०	क०	बुध क्रान्ति द० अं०	क०	गुरु शर उ० अं०	क०	गुरु क्रान्ति उ० अं०	क०	शुक्र शर द० अं०	क०	शुक्र क्रान्ति उ० अं०	क०	शनि शर द० अं०	क०	शनि क्रान्ति उ० अं०	क०	हर्शल शर द० अं०	क०	हर्शल क्रान्ति उ० अं०	क०	नेपच्यून शर उ० अं०	क०	नेपच्यून क्रान्ति उ० अं०	क०	अं. ता. मा.
१	सो	१	५	१८	४६	२	११	६	४५	०	२३	२२	५७	०	५	११	२५	१	३३	२०	१	०	८	२०	१८	१	२४	१	०	२२
४	गु	१	७	१८	११	२	३	४	२९	०	२३	२२	५६	उ०	४	१२	४९	१	३२	२०	४	०	८	२०	१९	१	२४	१	२	२५
७	र.	१	९	१७	३४	१	५०	२	३	०	२४	२२	५६	०	१३	१४	१०	१	३१	२०	७	०	८	२०	२१	१	२४	१	४	२८
१०	बु.	१	११	१६	५६	१	३३	उ०	३२	०	२४	२२	५५	०	२३	१५	२८	१	३१	२०	१०	०	८	२०	२२	१	२४	१	६	३१
११	गु.	१	१२	१६	४२	१	२६	१	२५	०	२४	२२	५४	०	२६	१५	५४	१	३०	२०	११	०	८	२०	२३	१	२४	१	७	१
३०	र	१	१४	१६	२	१	३	४	१०	०	२४	२२	५३	०	३५	१७	९	१	३०	२०	१४	०	८	२०	२४	१	२४	१	९	५

त्रैमासिक ग्रहयोग प्रतियोग चमत्कार

[ले०—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन, पंजाब]

त्रैमासिक "श्रीस्वाध्याय" के इन पृष्ठोंमें प्रति तीन मासमें होने वाले ग्रहोंके योग Conjunction प्रति योग (Opposition) और उनका परिणाम देनेका निश्चय किया है। तदनुसार यहां आश्विन शु० १० ता० ३० सेप्टेम्बर १९४१ से पौष शु० ६ ता० २७ दिसम्बर १९४१ तकके ग्रहयोग प्रतियोग और उनका परिणाम नीचे दे रहे हैं। आगामी अंक में हम प्रत्येक ग्रहका केन्द्रयोग, त्रिकोणयोग एवं षडष्टक द्विर्द्वादशादि सब सूक्ष्म दृष्टियां Aspects भी देने का प्रयत्न करेंगे।

चन्द्र युति (चन्द्र ग्रहसमागम)

शशिनि फलमुदक्स्थे यद्ग्रहस्योपदिष्टं
भवति तदपसव्ये सर्वमेव प्रतापम्
इति शशिसमवायः कीर्तिता भग्रहाणां
न खलु भवति युद्धं साकमिन्दोर्ग्रहर्क्षैः॥

आश्विन शुक्ल १५ रविवार मं०चं० युतिः, चन्द्र उत्तरमें
कार्तिक कृष्ण ४ रविवार श०चं० युतिः, चन्द्र दक्षिणमें
" " " " हर्शल चन्द्र युतिः चं० "
" " ६ शनिवार गुरु चन्द्र युतिः चं० "
" " १३ शनिवार नेपच्यून चन्द्र युति चं० "
कार्तिक शुक्ल १ मङ्गलवार बुधचन्द्र युति, चन्द्र उत्तरमें
" " ३ गुरुवार शु० चं० युतिः "
" " १३ शनिवार मं० चं० युतिः "
मार्ग० कृष्ण १ बुधवार श० चं० युतिः, चन्द्र दक्षिणमें
" " " " हर्शल चन्द्र युतिः "
" " ३ शुक्रवार गु० चं० युतिः "
" " ११ शनिवार नेपच्यून चं० युतिः "
" " १३ सोमवार बु० चं० युतिः चंद्र उत्तरमें
मार्ग०शुक्ल ४ शनिवार शु० चं० युतिः "
" " १० शुक्रवार मं० चं० युतिःचंद्र दक्षिणमें
" " १४ मङ्गलवार श०चं० युतिः "
" " " " हर्शल चन्द्र युतिः "
पौष कृष्ण १ गुरुवार गु० चं० युतिः "
पौष कृष्ण ८ शुक्रवार नेपच्यून चं० युतिः चं०द०में
" " ३० गुरुवार बु० चं० युतिः चंद्र उत्तर में
पौष शुक्ल ३ रविवार शु० चं० युतिः "
" " ८ शुक्रवार मं० चं० युतिः चंद्र दक्षिण में

तीन मासका जो यह चन्द्रग्रहसमागम (युति) ऊपर दिया गया उसका फल इस प्रकार है —

चन्द्र मङ्गल युतिका फल—वैद्य, डाक्टर, सलाहकार, इञ्जीनियर, लोहकार, स्वर्णकार, अग्निजीवि, रसायन पदार्थ क्रय विक्रय करने वालों और सैन्य-संचालकों, शासकों और प्रवास करने वालों के लिए यह योग शुभ कारक होता है।

चन्द्र बुध युतिका फल—लिखने पढ़नेका कार्य करने वालों, (पत्रकार, वकील, बैरिस्टर, छात्र, अध्यापक, लेखक आदि) प्रेस (छापाखाना) के सञ्चालकों और भ्रमण करने वालोंके लिए यह योग शुभ दायक होता है।

चन्द्र गुरु युतिका फल—धर्मोपदेशक, बुद्धिजीवि, नेता, सज्जन, महात्मा, व्यापारीवर्ग, वैद्य और आर्य प्रकृतिके लोगोंपर इस योगका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

चन्द्र शुक्र युतिका फल—विवाहादि मङ्गलकार्य, मैत्रीकरण, नाटक, सिनेमा; सङ्गीत आदि आमोद प्रमोद उपहार गृह, वस्त्रव्यवसाय और क्रय विक्रय पर इस योगका अच्छा प्रभाव पड़ता है।

चन्द्र शनि युतिका फल श्रमजीवी, कृषकवर्ग, भूमि या पार्थिवतत्त्व (जमीन मकान आदि) का कार्य करनेवाले अथवा इनका क्रय-विक्रय करने वाले, आतङ्क प्रिय व्यक्ति, जमीदार और जौहरी मोती नीलम आदिका व्यापार करनेवालों पर इस योगका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

चन्द्र हर्शल युतिका फल–रसायनशास्त्रज्ञ, विद्युच्छास्त्रज्ञ, भूगर्भ शास्त्रज्ञ और तत्त्वज्ञों पर इस योगका उत्तम प्रभाव होता है।

चन्द्र नेपच्यून युतिका फल—नाटक, सङ्गीत, मन्त्र-तन्त्र और जादू विद्या जाननेवालों पर इस योगका उत्तम प्रभाव पड़ता है।

अनुभव द्वारा देखा गया है कि उपर्युक्त चन्द्र ग्रह समागम (युति) का फल चन्द्रमाके उदकस्थ होने (उत्तर में निकलने) पर होता है। यदि चन्द्रमा दक्षिण में निकले तो सब फल विपरीत होता है।

ग्रहोंका प्रतियोग और उसका परिणाम

कार्तिक कृष्ण ४ गुरुवारको शनि शुक्रका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—संसारके उद्योग व्यवसाय में गहरा धक्का लगे, साम्पत्तिक स्थिति खराब रहे, देशमें भयङ्कर स्थिति उत्पन्न हो, स्त्रियोंको पीड़ा हो।

कार्तिक कृष्ण ५ शुक्रवारको सूर्यमंगलका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—पृथ्वी मण्डलपर भयानक सङ्कटापन्न स्थिति उत्पन्न हो। घनघोर युद्ध, मारकाट, दुष्काल, ज्वालामुखी स्फोट, भूकम्पादि उपद्रवोंके द्वारा जन-धनकी विशेष हानि हो। राज परिवार या उच्चवर्गमें अचानक मृत्यु और अत्याचार, षड्यंत्र, विषशस्त्रादि प्रयोगकी संख्या बढ़ेगी। महिलासमाज, वैद्य, डाक्टर, रसायनशास्त्रज्ञ, लोहेका काम करने वाले, शस्त्र बनानेवाले, अग्निसे उपजीविका करनेवाले (सुनार लुहार भट्टा लगानेवाले आदि) इंजीनियर इन सबको सन्ताप या अपघात हो। अधिकतर उपर्युक्त अनिष्टफल इंगलैंड-डेन्मार्क-जर्मनी-पोलैंड-जापान-सीरिया आस्ट्रिया-चीन-तिब्बत-बर्मिङ्गहम-ओल्डहम--लीस्टर-ब्लेकबर्न-फ्लारेन्स-नेपल्स-मार्सेलीज-सेरागोसा-अएटवर्प-जोहन्सवर्ग-कोपनहेगन-मिडलटन आदि २ स्थानोंमें होगा। भारतमें सीमाप्रान्त-पंजाब-सिन्ध आसाम-बंगाल--द्रविड़-विदेह-आन्ध्र--ट्रावन्कोर-दण्ड-कारण्य-चौल और शोण नर्मदा भीमरथी नदियोंके पश्चिम प्रदेशोंमें भी इस प्रतियोगका कुछ अनिष्ट फल होगा। जिनके जन्मलग्न या जन्म राशिसे षष्ठ-अष्टम-व्यय स्थानमें मीन या कन्या राशि होगी उन प्राणियोंको विशेष कष्टोंका सामना करना पड़ेगा। इस प्रतियोग के समय मंगल वक्री है अतः यह संसारके लिए महान् अनिष्टकारी सिद्ध होगा।

कार्तिक शु० १० बुधवारको गुरु शुक्रका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—देशके वाणिज्य व्यवसाय और लोकोपयोगी संस्थाओंकी स्थिति डावांडोल हो जावे। नये २ कर (टैक्स) लागू हों। प्रजामें असन्तोष। ब्रह्मदेश, महाराष्ट्र, काठियावाड़, कोल्हापुरमें आतङ्क वृद्धि।

मार्गशीर्ष कृष्ण १३ सोमवारको सूर्यशनिका प्रतियोग होगा। उसका फल यह है—व्यापारी वर्ग, मजदूर वर्ग, और कार्यकर्ताओंमें परस्पर भयङ्कर वैमनस्य उत्पन्न हो। राजपरिवार या अधिकारी वर्ग में मृत्यु हो। शनि वक्री है अतः यह समय अत्यन्त अनिष्टकर रहेगा। प्रत्येक राष्ट्रकी परिस्थिति अशान्त रहेगी। इस प्रतियोगका परिणाम आयरलैंड-रशिया-बल्गेरिया-नार्वे-ट्रान्सवाल-ब्रह्मदेश-दिल्ली-बम्बई-उड़ी-सा-आसाम प्रान्तमें अधिक दिखाई देगा।

मार्ग. शु० ३ शुक्रवारको सूर्य हर्शल (वरुण) का प्रतियोग होगा; इसका फल यह है—संसारमें सांस-र्गिकरोग (छूतकी बीमारी प्लेग आदि) का भय। व्यवस्थापक सभाओं एवं राज्य-कर्मचारियों और प्रजापक्षके नेताओंमें परस्पर तीव्र मतभेद हो। देश के हित चिन्तकों पर संकटके बादल मंडराने लगें। सारे संसारमें अन्याय, अवर्षण, दुष्काल, महर्घता और गुप्त अत्याचारकी वृद्धि हो।

मार्गशीर्ष शुक्ल ११ शनिवारको बुध शनिका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—रेलवे म्यूनिसि-पालिटी और मजदूर वर्गमें असन्तोषकी वृद्धि हो।

पौष कृ० ४ सोमवारको सूर्य गुरुका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—सर्वत्र व्यापार और साम्पत्तिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़े। देशका स्वास्थ्य उत्तम न रहे। गौतमी-विन्ध्यपर्वत मध्यदेश दिल्ली-बम्बई उड़ीसा-आसाम-ब्रह्मदेश तथा संयुक्त राज्य अमेरिका-बेल्जियम-इजिप्ट (मिश्र) वेल्स-आर्मीनिया-आस्ट्रेलिया-हंगरी-स्पेन और अरबस्थान पर इस प्रतियोगका बुरा प्रभाव पड़ेगा।

पौष कृष्ण १० शनिवारको बुध गुरुका प्रतियोग होगा। इसका फल यह है—समाज सुधारक और प्राचीनमत वादियोंमें तीव्र मतभेद हो। राष्ट्र नायकों में वादविवाद या वैमनस्य वृद्धि हो।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

आश्विन शु० १० मंगलवार ता० ३० सितम्बरको विजयादशमी, अपराजितापूजन, शमीवृक्षपूजन, ❀
आश्विन शु० ११ बुधवार ता० १ अक्टूबरको पापाङ्कुशा ११ व्रत [❀सीमोल्लंघन, दशहरा, बौद्धजयन्ती
" १२ गुरुवार ता० २ " प्रदोषव्रत
आश्विन शु० १४ शनिवार ता० ४ अक्टूबरको शरद् १५ सत्यव्रत, कोजागर व्रत।
" १५ रविवार ता० ५ अक्टूबरको कार्तिक स्नानारम्भ, आकाश दीप दान।
कार्तिक कृष्ण ३ बुधवार ता० ८ अक्टूबरको श्रीगणेश ४ करक (करवा) चौथ व्रत, सोलन (शिमला) में+
का० कृ० ८ सोमवार ता० १३ अक्टूबरको अहोई ८ अशोक ८ राधा ८
" ११ गुरुवार ता० १६ " रमा ११ व्रत स्मार्तों का
" १२ शुक्रवार ता० १७ " तुला सक्रान्ति पुण्यकाल २४।४३ तक, गोवत्स १२*
" १३ शनिवार ता० १८ अक्टूबर शनिप्रदोष व्रत, धन १३, धन्वन्तरी जयन्ती
" १४ रविवार ता० १९ अक्टूबरको श्रीहनुमज्जयन्ती, नरक १४, रूप १४।
" ३० सोमवार ता० २० अक्टूबरको दीपमालिका, श्रीमहालक्ष्मीपूजन सोमवती ३०
का० शु० १ मंगलवार ता० २१ " चन्द्रदर्शन, अन्नकूट, गोवर्द्धनपूजन; वर्ष्ठिकाकर्षण (रस्साकशी)
" २ बुधवार ता० २२ अक्टूबरको यमद्वितीया, भ्रातृक्किा २, दवात कलमपूजन
" ५ शनिवार ता० २५ " सौभाग्य ५ [+चन्द्रोदय स्टेण्डर्ड टाईम घं० ८ मि० ३।
" ८ सोमवार ता० २७ " गौपा ८ [*निम्बार्क सम्प्रदायका ११ व्रत
" ९ मंगलवार ता० २८ " अक्षया ९ परिक्रमा ९
" ११ गुरुवार ता० ३० " प्रबोधनी ११ व्रत, चातुर्मास व्रत समाप्ति,भीष्मपञ्चकारम्भ
" १३ शनिवार ता० १ नवम्बर शनि प्रदोष व्रत
" १४ रविवार ता० २ नवम्बर वैकुण्ठ १४
" १५ सोमवार ता० ३ " ढुकरी १५ सत्यव्रत, मेला पुष्करराज, ऋणमोजनकपाल‡
मार्ग. कृष्ण ३ शुक्रवार ता० ७ " श्रीगणेश ४ व्रत [‡मोचन, भीष्मपञ्चकनिवृत्तिः
" " ७ मंगलवार ता० ११ " श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती
" " ११ शनिवार ता० १५ " उत्पन्ना ११ व्रत
" " १२ रविवार ता० १६ " प्रदोषव्रत, मल्ल १२, वृश्चिक संक्रान्ति पुण्य काल ४।२७ तक
" " १४ मंगलवार ता० १८ " अमावस्या
मार्ग. शु० ६ सोमवार ता० २४ " चम्पा ६
मार्ग. शु० ११ शनिवार ता० २९ नवम्बर मोक्षदा ११ व्रत, श्रीगीता जयन्ती
" " १३ सोमवार ता० १ दिसम्बर सोमप्रदोष व्रत।
" " १४ मङ्गलवार ता० २ " पिशाच मोचन श्राद्ध
" " १५ बुधवार ता० ३ " श्रीदत्त जयन्ती, सत्यव्रत।
पौष कृष्ण ४ रविवार ता० ७ " श्रीगणेश ४ व्रत।
" " ११ " ता० १४ " सफला ११ व्रत।
" " १२ सोमवार ता० १५ " धनुः संक्रान्ति पुण्यकाल मध्यान्होत्तर।
" " १३ मङ्गलवार ता० १६ " भौम प्रदोषव्रत
" " ३० गुरुवार ता० १८ " अमावस्या
पौष शु० १ शुक्रवार ता० १९ " चन्द्र दर्शन [सम्पादक]

छुट्टियां हाईकोर्ट पञ्जाब और यू० पी०

दशहरा ता० २७ से ३० सितम्बर मङ्गलवार तक।
जुमातुलविदा ता० १७ अक्टूबर शुक्रवार।
दीपमाला, सोमवती ३० ता० २० अक्टूबर सोमवार।
यम द्वितीया ता० २२ अक्टूबर बुधवार।
ईदउलफितर ता० २३ अक्टूबर गुरुवार।
देवोत्थान (प्रबोधनी ११) ता० ३० अक्टूबर गुरु०
टुकरी पूर्णमासी ता० ३ नवम्बर सोमवार
जन्मदिन गुरुगोविन्दसिंह ता० २५ दिसम्बर गुरुवार
क्रिसमिसडे ता० २४ दिसम्बर बुधवार से ३१ दिसम्बर बुधवार तक।

विशेष सूचना—इस वर्ष पञ्जाबके प्रायः सभी पञ्चाङ्ग और जन्त्रियोंमें तथा भारतके अन्य कुछ पञ्चाङ्गोंमें भी कार्तिक शु० २ बुधवार ता० २२ अक्टूबरको चन्द्रदर्शन और गुरुवारको ईदउलफितर लिखा हुआ है। इस कारण सरकारी गजट और कई केलेण्डरों में भी ईद की छुट्टी (तातील) २३ अक्टूबर गुरुवारको लिखी गई है। किन्तु वास्तवमें यहां चन्द्रदर्शन प्रतिपदा मङ्गलवार ता० २१ अक्टूबर को ही हो जावेगा, एतदर्थ यवनलोग अपनी ईदका उत्सव भी ता० २२ अक्टूबरको ही मनावेंगे। अधिकारी वर्ग को चाहिए कि वे अब २३ की अपेक्षा २२ अक्टूबरको ही ईद की छुट्टी की घोषणा करदें। (सम्पादक)

त्रैमासिक मुहूर्तादि विचार

सं० १९९८ आश्विन शु० १० मङ्गलवार ता० ३० सेप्टेम्बर १९४१ से पौष शु० ६ शनिवार ता० २७ दिसम्बर १९४१ तक विवाह, द्विरागमन, वधूप्रवेश गर्भाधान, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, सीमन्त, पुंसवन, सूतिकास्नान, रोगीस्नान, उपनयन, नामकरण, चूड़ाकरण (मुण्डन) विद्यारम्भ अक्षरारम्भादिके सापवाद शुद्ध मुहूर्त।

इन तीन मासोंमें दक्षिणायन सूर्य होनेके कारण उपनयन, मुण्डन, विद्यारम्भ, अक्षरारम्भ नहीं हो सकता। इनके अतिरिक्त जो जो शुभ कार्य होसकते हैं उनके मुहूर्त नीचे लिखे जाते हैं।

शुद्ध विवाह मुहूर्त—

मार्गशीर्ष शु० २ गुरुवार ता० २० नवम्बर १९४१ को मूला नक्षत्र ।।।।ऽ गु. ऽ नृ. ।।।। लग्न तुला (अर्धरात्रोत्तर स्टेण्डर्ड टायम ४। १९ से ६। ४१ तक)

मार्ग शुक्ल ३ शुक्रवार ता० २१ नवम्बर मूला- ।।।। ऽ गु. ।।।। दिवा लग्नमकर (दुपहर स्टेण्डर्ड टाइम ११। १ से १२। ४३ तक) चन्द्रदान आवश्यक है।

मार्ग शु० १५ बुधवार ता० ३ दिसम्बर रोहिणी ।। ऽ चं. ।ऽ बु. रो. ।ऽ।। लग्न तुला (अर्धरात्रोत्तर स्टे० टा० ३। २३ से ५। ४५ तक)

अन्य आवश्यक मुहूर्त—

आश्विन शु० ११ बुधवार ता० १ अक्टूबर १९४१ को मध्यान्होत्तर (भद्राके अनन्तर) बालकका नाम करण, दोलारोहण, निष्क्रमण, औषधि प्रयोग चिकित्सारम्भ और नूतनवस्त्रभूषणादि धारणमुहूर्त।

आश्विन शु० १२ गुरुवार ता० २ अक्टूबरको नामकरण और इसी दिन त्रयोदशी में अन्नप्राशन तथा नवान्न भोजन भी शुभ है।

आश्विन शु० १५ रविवार ता० ५ अक्टूबर को सूतिकास्नान मुहूर्त।

कार्तिक कृ० २ मङ्गलवार ता० ७ अक्टूबर को सूतिकास्नान।

का० कृ० ९ मङ्गलवार ता० १४ अक्टूबर को रोग विमुक्त स्नान।

का० कृ० १ मङ्गलवार ता० २१ अक्टूबर को सूतिका स्नान।

का० शु० २ बुधवार ता० २२ अक्टूबरको पुरातनगृह प्रवेश।

का० शु० ३ गुरुवार ता० २३ अक्टूबरको नामकरण, अन्नप्राशन, पुरातनगृहप्रवेश, भूम्युपवेशन, कटिसूत्रबन्धन, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जलपूजा, सूतिकास्नान, भैषज्य, नूतन वस्त्रादि धारण।

कार्तिक शु० ८ सोमवार ता० २७ अक्टूबरको भद्रोत्तर पुरातनगृहप्रवेश, धान्यछेदन।

का० शु० १० बुधवार ता० २६ अक्टूबरको नामकरण, अन्नप्राशन, भूम्युपवेशन, कटिसूत्रबन्धन, निष्क्रमण, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त।

मार्ग० कृ० २ गुरुवार ता० ६ नवम्बरको गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, सूतिकास्नान, नामकरण, भूम्युपवेशन, कटिसूत्रबन्धन, नृपदर्शन, नूतनगृह प्रवेश।

मार्ग कृ० ४ शनिवार ता० ८ नवम्बर को रोगविमुक्त स्नान।

मार्ग कृ० ६ सोमवार ता० १० नवम्बर को नामकरण, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जलपूजा, नूतनगृह प्रवेश और अन्नप्राशन।

मार्ग शु० ३ शुक्रवार ता० २१ नवम्बर को वधूप्रवेश, द्विरागमन।

मार्ग शु० ५ रविवार ता० २३ नवम्बर को गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, सूतिका स्नान।

मार्ग शु० ६ सोमवार ता० २४ नवम्बर को गर्भाधान, द्विरागमन, पुरातनगृह प्रवेश।

मार्ग शु० ८ बुधवार ता० २६ नवम्बर को द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश।

मार्ग शु० ६ गुरुवार ता० २७ नवम्बर को अर्धरात्रोत्तर, द्विरागमन, वधू प्रवेश।

मार्ग शु० १० शुक्रवार ता० २८ नवम्बरको गृहारम्भ, गृहप्रवेश, नामकरण, अन्नप्राशन, भूम्युपवेशन, कटिसूत्रबन्धन, निष्क्रमण, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन।

मार्ग० शु० १५ बुधवार ता० ३ दिसम्बरको अत्यावश्यके गृहारम्भः, वधूप्रवेश, द्विरागमन।

पौष कृ० १ गुरुवार ता० ४ दिसम्बर को वधूप्रवेश, द्विरागमन, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, भूम्युपवेशन, कटिसूत्रबन्धन और गृहारम्भ।

पौष कृ० २ शुक्रवार ता० ५ दिसम्बर को द्विरागमन, अन्नप्राशन और अत्यन्त आवश्यकतामें गृहारम्भ, वाप्यारम्भ, कूपारम्भ।

पौष कृ० ३ शनिवार ता० ६ दिसम्बरको द्विरागमन, वधूप्रवेश।

पौष कृष्ण ४ सोमवार ता० ८ दिसम्बरको द्विरागमन, वधूप्रवेश, नामकरण, सूतिका पथ्यौषधिसेवन, भूम्युपवेशन, निष्क्रमण।

पौष शु० १ शुक्रवार ता० १६ दिसम्बर को पुंसवन सीमन्तोन्नयन।

विशेषः—कार्तिक कृ० ६ मंगलवार ता० १४ अक्टूबर, मार्ग० कृ० ६–७ सोम-मंगल ता० १०-११ नवम्बर और पौष कृष्ण ४ सोमवार ता० ८ दिसम्बर को पुष्य नक्षत्र है। इस नक्षत्रमें प्रत्येक व्यक्तिको यथा शक्ति सुवर्ण संग्रह अवश्य करना चाहिए।

—:※:—

दीपावली

[पृष्ठ ५७ का शेष]

विजयलक्ष्मी एवं आनन्दलक्ष्मीकी ओर प्रवृत्त होने का उपदेश प्रतिवर्ष देकर चली जाती है। परन्तु हम लोग इस उपदेशकी ओर कभी भी ध्यान न देकर केवल मिठाईसे पेटोंको ठसाठस भरने आतिशबाजी चलाने (अपने अमूल्य जीवनको सांसारिक विषयाग्नि में हवन करने) अच्छे २ वस्त्राभरण पहनने एवं द्यूत (जुआ) आदि कुव्यसनोंमें पड़नेके लिये ही दीपावली का स्वागत करते रहते हैं। वस्तुतः योगक्रिया द्वारा अमृतपान करनेका अभ्यास करना ही सच्चा मिष्टान्न भक्षण, सांसारिक भोगोंको संयमाग्निमें जलाना ही सच्ची आतिशबाजी; सर्वत्र आत्मस्वरूपदृष्टि ही सच्चे भूषण वस्त्र, एवं संसारबन्धनों पर विजय पानेकी क्रीड़ा ही सच्ची द्यूत क्रीड़ा है। इस दृष्टिकोणसे जो दीपावली मनाता है, वही सच्ची लक्ष्मी पूजा है। उसी पर महालक्ष्मी प्रसन्न होकर उसे आनन्द प्रदान करती है। शिवमस्तु।

त्रैमासिक राशिफल

अर्थात्

आश्विन शुक्ल १ से कार्तिक कृष्णा ३० (ता० २२ सितम्बर सन् १९४१ से २० अक्टूबर सन् १९४१ ई०) पर्यन्त १२ राशियों का फलादेश

[ले०—श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी तथा श्री पं० सखाराम जोशी]

मेष विद्या, बुद्धि, सम्मान, साहाय्य और निश्चयात्मक बातों में वृद्धि, अनेक प्रकारके कार्यारम्भमें व्यग्रता, बुद्धि श्रेष्ठ, लोक प्रीति, सन्तति योग, पराक्रम वृद्धि, हेतु पूर्णता, अधिकार वृद्धि, नये आविष्कारोंकी कल्पना और उस सम्बन्धमें प्रयत्न, शुभ कार्योंमें व्यय, स्थलान्तर प्रवास योग, शत्रु पीड़ा, शारीरिक कष्ट, हानि और प्रतिष्ठाका भय, द्रव्यद्रष्ट्या सामान्य, मानसिक चिन्ताएँ। इस मासमें सन्तति व सम्बन्धियोंके लिए समय बहुत अच्छा है। आशाप्रद बातोंमें वृद्धि होगी।

वृषभ निरुद्योग, आलस्य, महत्वाकांक्षाओंका अभाव, बुद्धिचञ्चल, उद्योग धन्दा, शरीर सुख, द्रव्य लाभ, कुटुम्ब वृद्धि, परिस्थितिमें परिवर्तन, व्यवसायमें परिश्रम अधिक करना पड़े, पुराने मित्रोंका मिलन व उनसे लाभ आदि २।

मिथुन आत्मोन्नतिमें वृद्धि, व्यय अधिक, नौकर का लाभ, द्रव्य सञ्चयमें कमी, शत्रुका पराजय, व्यापार व्यवसायमें विशेष महत्वपूर्ण मान, भाग्य वृद्धि, सन्ततिका उत्कर्ष, मानसिक चिन्ता, स्थलान्तर तथा दूर दूरका प्रवास, मासके उत्तरार्धमें आपसी लोगोंसे अनबन, लाभ व्यय बराबर।

कर्क इस मास में अनेक प्रकारकी चिन्ताएँ उत्पन्न होंगी। मस्तक-भ्रमण, पित्तविकार, नेत्र पीड़ा, मनस्ताप, प्रतिष्ठामें बाधा आवे इस कारण अपनी वृत्ति शान्त व विवेक बुद्धि रखनेका प्रयत्न करें। किसी भी लड़ाई झगड़ेमें नहीं पड़ना चाहिए। कुटुम्बमें लड़ाई झगड़ा व ऋणयोगकी सम्भावना है। कार्य हानि।

सिंह अचानक प्रसन्नता, मानवृद्धि, नौकर-चाकरोंका सुख, स्थावर सम्पत्ति प्राप्ति, मित्र कुटुम्बियोंका सुख, प्रत्येक कार्यमें यश, चिन्ताओं से मुक्ति, बड़े बड़े लोगोंका सहयोग प्राप्त हो। तीसरे सप्ताहमें कुछ शारीरिक कष्ट और विश्वासघातकी सम्भावना है।

कन्या कुछ शारीरिक कष्ट, स्त्री पीड़ा, परिस्थितिमें परिवर्तन, राजकीय कार्योंमें यश व लाभ, सर्वप्रकारका सौख्य, मित्रोंका भाग्योदय, स्थावर सम्पत्ति प्राप्ति, कफ वृद्धि, उष्णविकार, शिरमें पीड़ा।

तुला यह मास आशाप्रद उत्साहवर्द्धक रहेगा। नौकरी व्यवसायकी दृष्टिसे भी यह मास बहुत उत्तम है। बड़े २ कार्यों तथा नवीन कार्योंमें यश, सङ्कट निवृत्ति, द्रव्य सम्बन्धी अनुकूलता, प्रापञ्चिक कष्ट, मानसिक अशान्ति। सार्वजनिक कार्योंमें यश, जनता व विद्वान् लोगोंसे सम्मान प्राप्ति। पहले और तीसरे सप्ताहमें लाभ विशेष होगा।

वृश्चिक सङ्कटग्रस्त स्थिति, चिन्ताजनक योग, कार्योंमें अपयश, लोकमत प्रतिकूल रहे, अविश्वास कारक बातें उत्पन्न हों, शारीरिक व मानसिक स्थितिमें बिगाड़, ऋणग्रस्तता, राजसङ्कट, मान हानि,। इस मास में बहुत सावधान रहना चाहिए।

धनुः नये विचार व नई कल्पनाएँ उत्पन्न हों, शुभ कार्यमें व्यय, क्रय-विक्रयसे लाभ, स्थावर सम्बन्धी शुभ फल, वाहनसौख्य, नया मकान

आदि बनाना, सम्माननीय पुरुषोंसे मित्रता, सन्तति कष्ट, मानसिक चिन्ता, हानि। पश्चिम दिशामें गमन।

मकर इस मासमें हितकर कार्य होंगे। परंतु पहले २ उसमें कई प्रकार की बाधाएँ आवेंगी जिससे मन सन्ताप हो, स्त्री सन्तान व कौटुम्बिक जनोंसे मतभेद। शरीर सुख साधारण। मनमें अशान्ति। साम्पत्तिकयोग व्यवसाय धन्दा समान रहेगा, लाभ अल्प, गृहस्वामी या किरायेदार से झगड़ा, कानमें पीड़ा। ५-१०-१४ दिन अशुभ हैं।

कुम्भ चित्त शान्त, उत्साह वृद्धि, आनन्द-उत्कर्ष, सन्तान सुख, कार्य सिद्धि, द्रव्यलाभ, समाजमें योग्यता वृद्धि, विवादमें जय, राजकार्यमें यश, बड़े लोगोंसे मित्रता।

मीन हरिजन सेवा, मान हानि, प्रत्येक कार्यमें निराशा, लाभके उद्देश्यसे किये गये कार्यमें लाभ न हो। लोकापवाद, सन्ततिको क्लेश, शारीरिक व मानसिक कष्ट। यह मास बड़ी सावधानी का है। इसमें भी शु० ५-६ और कृ० १-१०-१२ ये दिन बहुत खराब हैं।

कार्तिक शुक्ल १ से मार्गशीर्ष कृष्णा ३० (ता० २१ अक्टूबर से १८ नवम्बर १६४१ ई०) पर्यन्त १२ राशियों का फलादेश

मेष स्वास्थ्य अच्छा न रहे, सेवकोंसे सहायता, इच्छित कार्यमें विलम्ब, सन्तति कष्ट, व्यय अधिक, आयमें न्यूनता। यह मास छापाखाना (प्रेस) व यान्त्रिक (मशीनरी) का कार्य करनेवालों के लिए बहुत खराब है।

वृषभ मासके प्रारम्भमें सङ्कट, मनस्ताप, सन्तति सम्बन्धी तथा कौटुम्बिक चिन्ता व रोग भय। गुप्त शत्रु अधिक हो, मानसिक दुर्बलता, मासके उत्तरार्धमें (मार्ग० कृष्णमें) लोक मान्यता, ऐश्वर्य, समाजसेवा, व्यवसायमें उत्कर्ष, कौटुम्बिक सुख।

मिथुन व्यावहारिक एवं मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति, व्यापार व्यवसायादि द्रव्योपार्जनके कार्योंमें उत्कर्ष, प्रचलित कार्योंमें श्रेष्ठता, मनस्तोष, अल्प परिश्रमसे कार्य सिद्धि, अनेक कार्योंसे लाभ। आप्तजनों (सम्बन्धियों) को सहायता देना। स्वदेश और विदेशमें सम्मान प्राप्ति। अपने कार्यमें यश व प्रभुत्व मिले।

कर्क आर्थिक स्थिति सोचनीय, लेखन कार्यमें यश। घरके वृद्धपुरुषों या स्वामियों (आफिसरों) से अनबन। शुक्ल पक्षकी २-६-१०-१२ और कृष्ण पक्षकी ४-६ तिथियों को कार्य करने से यश प्राप्ति होगी।

सिंह अपने कार्य में यश, समाजमें प्रसिद्धि, मानसिक वृत्ति उत्तम। प्रवास, लाञ्छन (दोषारोपण) भय। ऋणग्रस्तता। अकस्मात् संकट, परदेशवास, नीचजनों से अपमान।

कन्या शरीरारोग्य, इच्छित फल प्राप्ति, वस्त्र भूषणादि लाभ, सज्जन मैत्री, सन्तति कौटुम्बिक सौख्य, धार्मिक वैदिक कार्यमें प्रवृत्ति। साम्पत्तिक उत्कर्ष, शुभ कार्यमें व्यय, चिन्ता नाश, कुटुम्ब वृद्धि, सेवकों से सुख, स्त्री सौख्य, क्रयविक्रय में लाभ।

तुला मासके पूर्वार्ध (कार्तिक शुक्ल) में कष्ट, स्वास्थ्य अच्छा न रहे, व्यवसायमें बाधा, केवल राज्य पक्षमें काल अनुकूल है। खानपान में गड़बड़ी के कारण शारीरिक कष्ट।

वृश्चिक शारीरिक कष्ट, बुद्धिभ्रम, साम्पत्तिक स्थिति मध्यम, वाहन सुख, सन्तति पीड़ा, भाग्योदयकारक बातें, प्रवास, तीर्थ यात्रा व साधु सन्त सज्जनोंके दर्शनोंका लाभ, ऐश्वर्य वृद्धि, यशःप्राप्ति।

धनुः अपयश, आर्थिक कष्ट, मासके पूर्वार्द्ध (कार्तिक शुक्ल) में शरीर कष्ट, मनस्ताप, सन्तति तथा सम्बन्धियोंको पीड़ा, मासके

उत्तरार्ध (मार्ग० कृष्ण) में अल्प लाभ, मातुल, सौख्य अन्तिम ५ दिन में द्रव्यलाभ।

मकर उत्साही वृत्ति, मानसिक उत्कर्ष, स्वास्थ्य उत्तम, उद्योग व्यापार व्यवसायमें उन्नति। नये कार्य में पूर्ण लाभ। राजकीय अधिकारी वर्गों से मैत्री, राज्यकार्यमें यश, आर्थिक स्थिति उत्तम।

कुम्भ अकल्पित प्रवास, साधु सन्तों के दर्शनों में समय व्यतीत हो, बुद्धि तीव्र, इच्छित कार्यों में सफलता।

मीन शुभ कार्य व क्रय विक्रय से लाभ व यश प्राप्ति, वाहन सौख्य, नये गृह निर्माण या भूमि आदि में व्यय, सन्ततिकष्ट, नया कार्य आरम्भ। स्थलान्तर गमन से लाभ, प्रतिष्ठा वृद्धि।

मार्गशीर्ष शुक्ल १ से पौष कृष्णा ३० (ता० १९ नवम्बर से १८ दिसम्बर १९४१ ई०) पर्यन्त १२ राशियों का फलादेश

मेष शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न रहे, चित्तमें उदासीनता व आलस्य, व्यय अधिक, मासके पूर्वार्द्ध (मार्ग शुक्लपक्षमें) शारीरिक मानसिक व साम्पत्ति कष्ट अधिक हों। अपमान भय, प्रवास योग।

वृषभ शारीरिक कष्ट, हितवर्द्धक कार्य, मानसिक चिन्ता, शत्रु वृद्धि, व्यवसाय एवं आर्थिक दृष्ट्या शुभ योग। नवीन कार्यमें प्रवृत्ति। प्रचलित कार्य मासके पूर्वार्धमें साधारण रहे।

मिथुन भाग्य वृद्धि, अकस्मात् लाभ, कार्य प्रणालीमें उन्नति, बन्धुकष्ट, स्वजाति, एवं आप्तजनों से वैमनस्य, साम्पत्तिक स्थितिमें सुधार। साधु महात्माओंके दर्शन, स्वास्थ्य मध्यम।

कर्क मनस्ताप, चिन्ता, उदासीनता, मनोवृत्ति चञ्चल, वृथा कालापव्यय। अधिकारियों (आफिसरों) या घरके बड़े लोगोंसे लड़ाई झगड़ा। व्यवसाय नौकरी की ओर से सावधान रहना चाहिए, स्वजातीय शत्रु उत्पन्न होंगे। स्वास्थ्य मध्यम।

सिंह यश, सम्मान, लाभ, आत्मोन्नति, निश्चिन्तता। कुछ आर्थिक कष्ट। प्रापञ्चिक सौख्य, सन्ततिसुख, उद्योग व्यवसाय धन्दा उत्तम। कार्यसिद्धि, मित्र वियोग, कुटुम्ब सौख्य।

कन्या आर्थिक हानि, शरीर कष्ट, कौटुम्बिक कष्ट, उद्योग धन्देमें परिवर्तन, मानसिक कष्ट। राज्यपक्ष प्रतिकूल। स्त्री कष्ट, धर्मकृत्यमें बाधा। पौष कृष्णपक्ष अनुकूल रहेगा— शरीर तथा कौटुम्बिक सौख्य और राज्यपक्ष अनुकूल होगा। शु० ४-८ कृ० ३-५-६-११-१४ शुभ दिन हैं।

तुला आर्थिक लाभ, शत्रुओंसे मैत्री, अकारण व्यर्थ व्यय, भाग्योदय, चित्तमें अशांति, श्रीमान् लोगोंसे मैत्री व लाभ। शु० ५-११-१४, कृ० ५-८-११-१२ तिथियां शुभ हैं।

वृश्चिक कुटुम्ब सुख सामान्य, द्रव्यकी कमी, कार्य व्यवसाय व नौकरी आदिमें अकारण लड़ाई झगड़ा हो। आलस्य वृद्धि, सन्तति पीड़ा, स्त्री कष्ट, खेदकारक वार्ता। स्त्री द्वारा व्यय। खांसी व चोट लगने का भय।

धनुः सुख समाधान, साम्पत्तिक लाभ, नये कार्योंमें बाधा, स्वास्थ्य मध्यम, विवादमें जय। चित्त वृत्तिको शान्त रखकर क्रय-विक्रयके कार्य बहुत सावधानी से करना। स्थलान्तर गमन। शु० ८-१३ कृ० ७-३० तिथियां अशुभ हैं।

मकर इच्छित कार्यमें विलम्बसे सिद्धि, व्यय अधिक, नौकरोंसे लड़ाई झगड़ा, मित्रोंसे अनबन, अपयश, स्वास्थ्य उत्तम, सन्ततिका उत्कर्ष। नये कार्यसे प्रसन्नता। शु० ५-१०-१५ कृ०-६-१० तिथियां शुभ हैं।

युद्धमें आश्चर्यजनक परिवर्तनोंकी सम्भावना

[लेखकः—श्री पं०सूर्यनारायणजी व्यास, भारतीभवन, उज्जैन]

—:※※※※※:—

अभी कुछ समय पूर्व पत्रोंमें मैंने बतलाया था कि २० जूनके बाद ही राजनैतिक जगत्में एक विस्मयोत्पादक घटना होगी। जो मित्र है वह शत्रु होगा और जो शत्रु है वह सहसा मित्र बन जाएगा जनताने साश्चर्य देखा कि २१ जून ही को जर्मनी ने रूस से युद्ध घोषित कर दिया, और कलके दुश्मन रूस और ब्रिटेन आज पुनः स्नेह बन्धन में आबद्ध हो गए। इधर प्रकृति परसे भी जो सन्तुलन

कुम्भ मनमें व्यग्रता, शारीरिक पीड़ा, आत्म चिन्ता, सन्ताप, विपरीत बुद्धि, कौटुम्बिक कष्ट, अपमान भय, शुभ कार्यमें व्यय, राज्यपक्ष उत्तम, दुराग्रह, मित्र बन्धुओंसे वैमनस्य, स्वास्थ्य मध्यम। शु० ४-७-६-१२ कृ० २-६-१० तिथियां शुभ हैं।

मीन व्यवसायमें उत्कर्ष, साम्पत्तिक लाभ, बुद्धि अस्थिर, शरीर कष्ट, स्त्री कष्ट, सन्तति कष्ट, मित्र सुख, मातुल सुख, वादविवादमें जय। शत्रु नाश, पराक्रम वृद्धि।

सूचना—उपर्युक्त राशि फल प्रत्येक मनुष्यको शतप्रतिशत ठीक बैंठे यह बात अनिवार्य नहीं है, क्योंकि संसार के प्राणियोंको बारह भागों या १२ राशियोंमें विभक्त करके यह विचार लिखा गया है। देशकाल परिस्थिति और अपने अपने जन्मलग्नकी ग्रहस्थितिके अनुसार कुछ अन्तर रहना स्वाभाविक ही है। एतदर्थ मासका ठीक ठीक सूक्ष्म फल तो गणित द्वारा अपने अपने वर्ष फलसे ही ज्ञात हो सकता है। मध्यम मानसे यह राशिफल भी मिल जाता है। अतः जिन लोगोंका जन्मपत्र वर्षफल बना हुआ नहीं है, उनके हितार्थ यह त्रैमासिक राशिफल हमने बड़े विचार पूर्वक लिखा है। यदि आप हमारे द्वारा अपना सूक्ष्म यथार्थ मासिक फल अथवा जीवन भरका भविष्य जानना चाहते हैं तो सूक्ष्म शुद्ध गणनानुसार जन्मपत्र वर्षफल बनवाइये।

हट गया है, वह आये दिन पत्रों में पढ़ा ही है। उसका विवरण देनेकी जरूरत नहीं है।

अब दो बार पुनः ऐसी ही और विशिष्ट घटनाएं घटेंगी, जिनको जनता स-विस्मय देखेगी। एक बार मित्रोंकी फेर बदली होनेका पुनः समाचार सुनाई देगा। परन्तु अभी इसमें काफी देरी है, दिसम्बर मास तक युद्धका रुख एक नए दृष्टिकोणसे नए मोर्चे पर बदला हुआ दिखाई देगा। सितम्बर तक का समय घमासान युद्धका ही मानना चाहिए। परन्तु दिसम्बरके मध्य हो जाने पर युद्धका जो रूप बदलेगा, वह भारतीय दृष्टिकोणसे भी बड़ा भयोत्पादक, और अराजक वातावरण उत्पादक होगा। इधर ग्रहणोंके निकट आजानेके कारण प्राकृतिक कोपोंकी भी अति वृद्धि होगी। अधिक दुर्घटनाएँ असामयिक और अनपेक्षित होने लगेंगी। दिसम्बर से फरवरी २८ तकका पीरियड् फिर युद्धकी नवीन दिशाकी सूचना देगा। भारतवर्ष भी आपत्तिसे आक्रांत रहेगा। २८ फरवरीके पश्चात् मुझे एक नवीन शंका है, और ग्रहयोगोंको देखते हुए असंभव नहीं कि रशियाके अंगभंग होने पर जर्मन और ब्रिटिश राष्ट्रोंमें जो महान् विरोधी दो शक्तियोंमें विभक्त हैं — मित्रता संभवित हो जाय। आज तो यह अतिशयोक्ति वत् मालूम होता है. परन्तु जब मैंने २० जून को लक्ष करके 'जर्मन-रूस' की शत्रुता हो जाना सूचित किया था, तब भी ऐसा ही वातावरण था, और वह घटना संभवित हो गई। आज यद्यपि 'जर्मन-ब्रिटिश' मैत्री सर्वथा असंभवित घटना जैसी मालूम देती है, पर उसी प्रकरकी ग्रह-स्थिति को लक्ष्यमें रखकर मैं साहस करना चाहता हूँ कि यह 'आश्चर्य' भी घटित होना संभाव्य है। फरवरी २८ के अनंतर युद्धका रुख बदलना बहुत संभव मालूम होता है। तब तक हमें आपत्तियों के सहने की शक्ति सम्पादित करना चाहिए।

चन्द्र सूर्य ग्रहणोंका प्रभाव।

महायुद्धके परिणाम और संसारकी परिस्थिति पर ज्योतिश्शास्त्रकी दृष्टि।

[लेखक— श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

श्रीस्वाध्यायकी रूपरेखामें (जो ८ पृष्ठोंमें पहले अलग छप चुकी है) चन्द्र-सूर्य ग्रहणोंका सचित्र विवरण हम पहले दे चुके हैं। इन ग्रहणोंका फल इस शरदङ्कमें देने की सूचना दी गई थी; तदनुसार अभी एक मासमें जो चन्द्र-सूर्यके दो ग्रहण हुए हैं, इनका परिणाम हम पाठकोंको बतलाते हैं—

ग्रहणोंका अनिष्ट प्रभाव

शिल्पी, वैद्य, पराक्रमी, दयालु, विनयवान्, पाखण्डी, शास्त्र-विचारक, श्रीमन्त, कृषक, कवि, लेखक, गायक, अग्नीजीवी, स्त्रियां, बालक, ब्राह्मण, क्षत्रिय राजाओं तथा काम्बोज, चीन, यवन, बाल्हीक, सिन्ध, पौण्ड्र, किरात (विन्ध्याचलसे दक्षिण) कलिङ्ग (आसाम-बंगाल-बिहार-उड़ीसा) अन्तर्वेदी देश, सरयू नदीके देश, नैपाल और पश्चिमीय म्लेच्छ यूरोपादि देशवासियों पर इन ग्रहणों का बुरा प्रभाव पड़ेगा। राज व्यवस्था, राजा, बादशाह, अधिकारीवर्ग, राजपरिवार, व्यापारीवर्ग, नेता और धनाढ्य व्यक्तियों एवं इंगलैंड-जर्मनी-रूस-तुर्किस्तान-अरब-ईरान-अफगानिस्थान-यूनान - मिश्र - चीन - जापान-इटली-अमेरिका-अफ्रिका, पूर्वीय एशिया, पोलैण्ड-पेलेस्टाईन, सीरिया, स्वीजरलैण्ड, मेसोपेटोमिया, आयरलैण्ड, परशिया (फारस) हॉलैण्ड, मोरक्को, ब्राजील, मेक्सिको, न्यूजीलैण्ड और पुर्तगाल पर भी इन ग्रहणों और आगेकी ग्रहस्थितिका अनिष्टकारी प्रभाव पड़ेगा।

यहां चन्द्रग्रहणके १५ दिन उपरान्त ही सूर्य ग्रहण हुआ है, यह राजा प्रजा के लिए महान् अनिष्ट-कर सिद्ध होगा। वर्षानाश, फल हानि, सैनिक-आतंक और गर्भवती स्त्रियोंको पीड़ा होगी। संसार में कई प्रकारके उपद्रव होंगे, कहीं अग्निकांड प्रचण्ड वायु (आंधी बवण्डर) या भूकम्पसे, कहीं अनावृष्टि अतिवृष्टि और चोर डाकू लुटेरों के भयसे तो कहीं युद्ध गृहकलह साम्प्रदायिक-संघर्ष दुर्भिक्ष महामारी आदि रोगोंसे अशान्ति उत्पन्न होगी। महाभारत युद्ध के समय भी इसी प्रकारके दो ग्रहण एक मासमें आये थे। महर्षि कश्यपके मतसे सेना; सेनापति और राजाओंके लिये यह विनाश सूचक है—

चन्द्रार्कयोरेकमासे ग्रहणं न पशस्यते।
परस्परं वधं कुर्युः स्वबल क्षुभिता नृपाः॥

गेहूं, चावल, चना, मूंग, उड़द, कपूर, श्वेतवस्त्र, रुई, अलसी, घृत, तैल और लाल रंगकी वस्तुओंका भाव तेज रहेगा। इन वस्तुओंका संग्रह करनेसे आगे पर्याप्त लाभ होगा। इस ग्रहणके बाद ६ मासके भीतर रुई अलसी गेहूं में भयंकर तेजी आवेगी।

संसार का भविष्य

सूर्य ग्रहण मध्यकालीन कुण्डली



लग्नेश अष्टमेश शुक्र ग्रहण लग्नमें भौमसे दृष्ट और तृतीयेश षष्ठेश गुरु तथा चतुर्थेश पंचमेश शनि हर्शलके साथ अष्टम पड़े हैं, अतः सर्वसाधारण जनता और अधिकारीवर्ग पर कई प्रकारकी आपत्तियां आवेंगी। संसारमें रोग और मृत्यु संख्या

अधिक होंगी। अपराधोंकी संख्या भी बढ़ेगी। कृषि, अन्न, और देशमें उत्पन्न होने वाली अन्यान्य वस्तुएं तथा व्यापार एवं साम्पत्तिक स्थितिमें विषम हलचलें उत्पन्न होंगी। संसारकी अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थिति डावांडोल हो जावेगी। कई असम्भव बातें सम्भव होती दिखाई देंगी। बड़ी-बड़ी उच्च हस्तियोंका पतन होना सम्भव है। धनेश सप्तमेश मंगल छठे पड़ा है और नवमेश व्ययेश बुध, दशमेश चन्द्र तथा लाभेश सूर्य बारहवें (त्रिकमें) नेपच्यूनके साथ पड़े हैं, इन पर वक्री मंगलकी शत्रु दृष्टि है अतः संसार आर्थिक संकटसे पीड़ित रहेगा। शक्तिशाली समृद्ध राष्ट्रोंकी सम्पत्ति एक दूसरेके सर्वनाशमें नष्ट होगी। महायुद्ध भयंकर रूप धारण करेगा। राजकीय पुरुष अथवा किसी उच्च वर्णके महापुरुष एवं राज्य परिवार या अधिकारारूढ़ पक्षमेंसे किसी सम्माननीय महिला पर कोई भयानक आपत्ति आवे, जिससे मृत्यु होना भी सम्भव है। इस ग्रहणके बाद जर्मनीके किसी महापुरुष (हर हिटलर, गोयरिंग, हर वानरिवनट्राप आदि) पर भी भीषण आपत्ति आवेगी। जो कई प्रदेश अब तक जर्मनीने अपने अधिकारमें कर लिये हैं, उनके अधिकांश भागोंमें विद्रोह गृह-कलह आरम्भ हो जावेंगे। संसारके कई भागोंमें खानोंकी दुर्घटना, रेल-मोटर-व्योमयान दुर्घटना, ज्वालामुखी स्फोट, भूकम्प, आंधी, महामारी, अवर्षण, जलप्लावन आदि उत्पातोंकी भी सम्भावना है। प्रत्येक राष्ट्रकी सुस्थिति एवं उन्नतिके लिए आगेका समय बड़ा अनिष्टकर होगा। एक दूसरे राष्ट्रोंके सम्बन्ध परस्पर बिगड़ते जायेंगे। सन्धियां भंग होंगी और आगे जो नई सन्धियां होंगी वे भी चिरकाल तक टिकाऊ न रहेंगी। सम्बन्ध विच्छेद (तलाक) के व्यवहार (मुकद्दमे) अधिक होंगे। मन्त्रिमण्डलोंमें उलटफेर होंगे। लोकसभा और व्यवस्थापिकासभाओंमें तीव्र मतभेद होने के कारण फूट पड़नेकी सम्भावना है।

चतुर्थेश पंचमेश शनि गुरुके साथ अष्टममें पड़ा है, यह शिक्षा-विभाग, समाचारपत्र, लेखक, प्रकाशक, ग्रन्थकार, नाट्यगृह, विद्यालय तथा आमोद-प्रमोद स्थानोंके लिए अनिष्ट कर सिद्ध होगा

इस ग्रहणके समय मङ्गल वक्री होकर लग्नको देख रहा है तथा आगे चलकर शनि भी वक्रगतिसे अपनी नीच राशि (मेष)में मंगलके साथ मिल रहा है, वहां फाल्गुनमें इनका (शनि मङ्गलका) युद्ध होगा और पुनः खग्रास चन्द्र ग्रहण भी होने वाला है, तथा आगामी वर्ष (सं० १९९९) के आषाढ़में शनि रोहिणी शकट भेद करने जा रहा है। ये सब संसारमें घोर आतङ्क और भयङ्कर परिवर्तनके सूचक हैं। मंगल शनि ग्रहका प्रभाव—युद्ध, मारकाट, रक्तपात, अत्याचार, अपघात, अग्निकाण्ड, शस्त्रक्रिया, रेलवे, मेकेनिकल वर्क्स, सर्व प्रकारकी यन्त्र सामग्री (मशीनरी) अग्नि वाष्प विद्युतादि द्वारा चलने वाले बड़े-बड़े कारखाने, पुलिस, सेना, सेनापति और शासकों पर अधिक होता है। अतः उपर्युक्त वतुओंके द्वारा संसारमें भीषण संहार होगा। शनि मंगलके दूषित प्रभावसे ज्ञात होता है कि आगे चलकर महायुद्धमें यत्र-तत्र विषैली गैसोंका प्रयोग भी किया जावेगा। वर्तमान महायुद्ध निकट भविष्यमें किसी प्रकार भी रोका न जा सकेगा। इस विभीषिका से बचने के लिए जितनी भी शान्ति चर्चाएं चलाई जावेंगी वे सब सं० २००० वि० तक विफल सिद्ध होंगी और परिस्थिति सुलझनेकी अपेक्षा अधिकाधिक उलझती हुई प्रतीत होगी। कुछ समयके लिए तत्कालीन परिस्थितिके अनुसार किसी राष्ट्रमें एकाध बार क्षणिक शान्ति चाहे भले ही हो जावे पर उसका स्थायी प्रभाव कुछ नहीं होगा। कोई भी सबल राष्ट्र अपनी हठ नहीं छोड़ेगा। छोटे-छोटे कई निर्बल राष्ट्रोंका बलिदान होगा। इस महायुद्धका अंत महा संहारके बाद विप्लव के रूपमें ही होगा। जिसमें ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, जापान इटली ही नहीं. समस्त राष्ट्र नवीन रूपमें प्रकट होते दिखाई देंगे, या यों कहिये कि विश्वका मान चित्र ही एकदम बदल जायगा, जिसकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते। समुद्र तटवर्ती प्रान्तों का अस्तित्व खतरेमें होगा। स्वेज नहर और कुछेक

महत्वपूर्ण बन्दरगाहों पर भीषण परिस्थिति उत्पन्न हो जावेगी। भूमध्यसागर, प्रशान्तमहासागर, अरब-सागर एवं अतलांतक महासागरोंका जल रक्त रंजित हो उठेगा। इसके बाद विक्रम की २१ वीं शताब्दीके प्रथम दशक (आरम्भिक दश वर्षों) में विश्वमें अराजकता व्यापेगी।

भारत का भविष्य

सं० २००० वि० तक विश्वके साथ भारतमें भी अशान्तिका साम्राज्य रहेगा। साम्प्रदायिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विद्वेषको लेकर अंतः-कलह होंगे। पारस्परिक वैमनस्य और अविश्वास इतना बढ़ जाएगा कि कोई इससे अछूता न रहेगा। अधिकतर कौटुम्बिक जीवनमें भी सद्भावना और सहनशीलता न रहेगी, जिससे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें गृहकलह होकर पारिवारिक जीवनमें नित्य नये बखेड़े खड़े होंगे। आततायी लोगोंके भयसे प्रजा त्रस्त रहेगी। पश्चिमोत्तर भारत (सिन्ध, सीमान्त, पञ्जाब, काश्मीर) ब्रह्मदेश, बङ्गाल, आसाम और मद्रास का वातावरण अधिक अशान्त रहेगा। जन प्रतिनिधि नेताओं और शासकों को नई-नई आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। व्यापारमें बड़ी भारी उथल-पुथल मचेगी। बेकारी, तङ्गदस्ती जोरों पर होगी। सारा भारत आर्थिक सङ्कट से पीड़ित रहेगा। सं० १९९९ और २००० वि० में भारतका वातावरण क्षुब्ध हो जायेगा, इसके परिणाममें भारतको अनेक प्रकारकी आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। नेताओंमें मतभेद और उदासीनताके कारण राष्ट्रिय प्रगतिमें बाधा उपस्थित होगी। यत्र-तत्र दङ्गे-फिसाद, चोर-डाकू-लुटेरोंकी लूट खसोट एवं अवर्षण, जल-प्लावन, शीताधिक्य, अग्निप्रकोप, वायुप्रकोप और रोगादि उपद्रवोंसे भी बहुत हानि होगी। इतनी सब कुछ आपत्तियां सहनेके बाद आगे भारतका भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है। इन ग्रहणों और आगेकी ग्रहस्थितिका परिणाम अंतमें हमारे लिए श्रेयस्कर सिद्ध होगा। अब अधिक समय तक भारत वर्तमान स्थितिमें नहीं रह सकेगा। स्वराज्य या स्वतन्त्रता भिक्षामें प्राप्त होने जैसी वस्तु नहीं और न आज तक मांगनेसे किसीको स्वराज्य मिला ही है, अपितु कालचक्रानुसार (ग्रहयोग अनुकूल आने पर) राष्ट्र-शक्ति उसे स्वयं प्राप्त कर लेती है। श्री १०८ पूज्यपाद आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजने अपने राष्ट्रालोक में स्पष्ट लिखा ही है—

> स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते।
> योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्र शक्तिः प्रभाविनी॥

यों तो इन भावी वर्षोंमें भारतमें ही क्या सारे संसारमें महान् परिवर्तन होने वाला है। यद्यपि विश्वव्यापी महान् परिवर्तनको रोकना मनुष्यकी तुच्छ शक्तिसे बाहर है। तथापि इस विनाशकारी वायुमण्डलसे अपनी आत्म रक्षाके लिए जो लोग समय रहते अपनेको परिस्थितिके अनुकूल बनाने का प्रयत्न करेंगे वे भावी आपत्तियोंसे कुछ अंशों में अवश्य सुरक्षित रह सकेंगे। अतः मनुष्य मात्रका कर्तव्य है कि वह अपने राष्ट्र, अपने धर्म और अपनी आत्म-रक्षाके लिए सर्वथा सन्नद्ध हो जावे। यह समय आपसमें लड़ने या मौज उड़ानेका नहीं है। "संघे शक्तिः कलौयुगे" के अनुसार जो राष्ट्र जो जाति और जो मनुष्य संगठित एवं शक्ति सम्पन्न होंगे वे ही संसार में अपना अस्तित्व स्थिर रख सकेंगे।

समाचारपत्र पाठकोंको यहतो भलीभांति विदित ही है कि वर्तमान संसार सङ्कट और महायुद्धकी सूचना (चेतावनी) हम आजसे ८ वर्ष पहलेसे देरहे हैं। सं० १९९० में श्रीवेङ्कटेश्वर-समाचार, मारवाड़ी-ब्राह्मण, हिन्दी-बङ्गवासी, हिन्दी-मिलाप आदि कई पत्रोंमें हमारी एक भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी, उसका शीर्षक था—"उत्पात और अशान्तिकी सम्भावना, दश वर्षके भीतर सभी महाशक्तियां क्षीण हो जावेंगी" इसके उपरान्त भी समय समयपर हमारे लेख समाचारपत्रोंमें प्रकाशित होते रहे हैं। सन् १९४० के आरम्भ में "विश्वबन्धु" में जो हमारी विस्तृत भविष्यवाणी छपी थी, उसकी इतनी अधिक मांग आई कि कार्यालयमें एक भी प्रति शेष न बची। परन्तु प्रतिबन्ध लगनेके कारण वह दुबारा नहीं छप सकी, अस्तु।

दीपावली

[ले०—श्री पं० नन्दलाल जी शास्त्री साहित्याचार्य, पटियाला राज्य]



प्रतिगेहं भासयन्ती नाशयन्ती दरिद्रताम्।
कालरात्रिर्जयति सा भवनाशकरी शिवा॥

कार्तिक कृष्ण अमावस्याको दीपावलीका पर्व समस्त भारतवर्षमें बड़े समारोहसे मनाया जाता है। इस दिन सब लोग अपने २ घरोंको लीप पोत कर साफ करते हैं, वस्त्र धोते हैं। पहिले दिन कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी (नरक चतुर्दशी) को घरका सब कूड़ा कचरा बाहर फेंक देते हैं। और अमावस्याको विविध प्रकारके पक्वान्न (मिठाई) आदि बनाते हैं, घरोंको चित्रोंसे सजाते हैं। अपनी २ शक्त्यनुसार दीपकोंकी श्रेणियें (कतारें) जलाते हैं। इसी लिये इसे दीपावली (दीपकोंकी श्रेणि) कहते हैं। इसमें श्रीमहालक्ष्मीका पूजन होता है और लक्ष्मीको पानेके लिये ही सब लोग अपने २ घरोंको सब प्रकारसे सुसज्जित और प्रकाशित करते हैं। क्योंकि जहां लक्ष्मीका निवास होता है, वहां सर्वतः उज्ज्वलता (चमक दमक) देखनेमें आती है। उज्ज्वलता (पुण्य) के अतिरिक्त लक्ष्मीदेवीकी कृपा भी कैसे हो सकती है ? इस लिये उसीके स्वागतमें सब प्रकारका समारोह होता है। दीपावली हमें लक्ष्मी-प्राप्तिकी स्मृतिके अतिरिक्त प्राचीन विजयलक्ष्मीकी भी याद दिलाती है। जिस समय मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी दुष्ट रावणके बन्धनमें पड़ी हुई आर्य-लक्ष्मी (सीता) को स्वतन्त्र करा कर और अनार्य रावणको नष्टकर अवध पधारे थे। उस विजयलक्ष्मीके उपलक्ष्यमें अवधमें बड़े समारोह से दीपावली मनाई गई थी। अतः प्रतिवर्ष दीपावली आती है, और उस प्राचीन कालकी स्मृति हम भारतीयोंको दिला जाती है। इतना ही नहीं दीपावली इस जीवको अपने मुख्य ध्येय (आत्मसाक्षात्कार) की ओर प्रवृत्त होनेका भी उपदेश देती है। अर्थात् आनन्दलक्ष्मी (मुक्ति) की प्राप्तिके लिये भी जीवको सावधान करती है। क्योंकि जहां अन्धकार (अज्ञान) होगा, वहां आनन्दलक्ष्मीकी प्राप्ति कैसे होसकती है। उसके लिये नरकचतुर्दशीके दिन नारकीय सामग्री (तामसीप्रवृत्ति) को घर (चित्त) से बाहर निकालना ही होता है। शुद्ध घर (चित्त) में ही प्रकाश (ज्ञान) होनेपर लक्ष्मी (मुक्ति) प्राप्तिकी संभावना होसकती है। वास्तवमें जीवकी प्रवृत्ति सदा प्रकाशाभिमुखी ही होती है। और प्रकाशमें ही उसे पूर्णानन्द प्राप्त होता है। देखा जाता है कि प्रत्येक पुरुषकी अज्ञात विषयोंको जाननेकी इच्छा स्वाभाविक है। उन्हें समझ कर उसे आनन्द प्राप्त होता है। क्योंकि ज्ञान (प्रकाश) ही आनन्द देने वाला है। अज्ञान (अप्रकाश) में असन्तोष (पूर्णानन्दका अभाव) ही रहता है। सांसारिक वस्तुओंको जानने और पानेकी प्रवृत्ति भी आनन्द प्राप्तिके लिये ही है। यद्यपि मृग तृष्णावत् उन सांसारिक पदार्थोंमें आनन्द पूर्ण नहीं मिलता परन्तु प्रयत्न तो उसका आनन्दके लिये ही है। चौरासी लक्ष योनियोंमें मनुष्ययोनि कृत-कर्मोंके फलको भोगता हुआ, यह जीव मोक्षके द्वार-स्वरूप इस मनुष्य जन्मको प्राप्त होता है, यहां इसको कर्त्तव्याऽकर्त्तव्यको जाननेके लिये बुद्धि दी जाती है, उसके द्वारा ज्ञान पाकर जन्ममरणके बन्धनसे छूट जाता है, और पूर्णानन्दस्वरूप हो जाता है। परन्तु जो अन्धकार (अज्ञान) में पड़े हुए हैं, सांसारिक पदार्थोंमें ही आपाततः सुख मानकर अपने लक्ष्यसे च्युत हो रहे हैं—उनको प्रकाशके आनन्दका अनुभव कराती हुई दीपावली सजग करती है, कि अपने लक्ष्य स्वरूप प्रकाश (ज्ञान) की ओर प्रवृत्त हो जाओ यदि पूर्णानन्द लक्ष्मीको चाहते हो। अन्धेरा ही प्रकाश का क्या मूल्य है यह बात अच्छी प्रकार अनुभव कराता है। इसीलिये दीपावली रातको ही मनाई जाती है। इस प्रकार दीपावली हमें लक्ष्मी (धन)

[शेष पृष्ठ ४६ पर देखिये]

विजयादशमी

वीरावलीहृदयसारसजागरायै
मार्त्तण्डभैरववपुर्जगति प्रसिद्धा ।
सम्प्रेरयेदखिलराष्ट्रजनावनाय
सम्पादनाय विजया दशमी जयस्य ॥

वीर पुरुषोंके हृदयरूपी कमलोंको जगानेके लिए प्रचण्ड सृष्टि-स्थितिप्रलयकारी मार्त्तण्डका रूप धारण करने वाली, संसारमें अति प्रसिद्ध, यह विजयादशमी सम्पूर्ण राष्ट्र और राष्ट्रिय लोगोंके रक्षणके लिए तथा संसारमें विजय सम्पादनके लिए भली भांति प्रेरणा करे ।

कौमुदी-महोत्सव

राका-शशाङ्क-शरदङ्क-मृगाङ्कमेत्य
स्वाध्यायमातनुत मा कुरुत प्रमादम् ।
ज्योत्स्नोत्सवोऽस्य रचयेत् कमपि प्रकाशं
श्रीराष्ट्रजीवनपथं जनजागरायै ॥

सोलहों कलाओंसे परिपूर्ण राका (पूर्णमासी) के चन्द्रमाके समान इस 'शरदङ्क' रूपी चन्द्रमाको प्राप्त कर स्वाध्याय करिए, तथा इसका विस्तार करिए, इसमें कहीं प्रमाद न करना । इस शरदङ्क रूपी चन्द्रमाका यह कौमुदीमहोत्सव उस अनिवर्चनीय अत्यन्त प्रकाशमान राष्ट्रको जगाने के मार्गका लोगोंको उद्बुद्ध करनेके लिए निर्माण करेगा ।

दीपावली

दीनाऽवनीयदयनीयदशादिशाना
मालोचनाय कमनीयदृशं दिशन्ती ।
श्रीपूजनाय निजराष्ट्रसमृद्धिवृद्ध्यै
दीपावली दिशतु शाश्वतिकं प्रकाशम् ॥

दरिद्री भिखारी लोगोंकी दयनीय परिस्थितिकी दिशाओंके विचार पूर्वक देखनेके लिए, समुचित सुन्दर कामना पूर्ण करनेवाली दृष्टिको देने वाली लक्ष्मीका पूजन करनेके लिए, अपने राष्ट्रकी समृद्धिकी वृद्धिके लिए यह दीपावली चिरस्थायी सनातन प्रकाशको देवे । –अ० वा० आचार्य

अर्थ

अर्थेभ्योऽपि हि वृद्धेभ्यः सम्वृद्धेभ्यस्ततस्ततः।
प्रवर्त्तन्ते क्रियाः सर्वाः पर्वतेभ्य इवापगाः॥

[सम्पत्तिकी उन्नतिसे तथा अधिकाधिक उन्नतिसे पर्वतोंसे नदियोंके समान सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न होते हैं]

पाठकवृन्द! इस मनुष्य लोकमें मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अधिकसे अधिक अपनी आकांक्षाकी पूर्ति कर सकता है। "नर करनी करे तो नरका नारायण होय" यह कहावत सोलहो आने सच ही है। प्रत्येक मनुष्य पुरुष-जीव-भावमें आवद्ध जिस क्षणसे हुआ उसी क्षणसे उसे अपनेमें एक त्रुटि दिखाई देने लगी। फिर उसीकी पूर्तिके लिये यावज्जीव जीतोड़ परिश्रम करने लगता है। वह प्रत्येक क्षण संसारकी अनन्त वस्तुओं पर दृष्टि डालता है, किन्तु उसकी दृष्टि इतनी विशाल नहीं, कि सबको एक बारगी ही देखले। फिर भी वह यही चाहता है, कि मैं असमर्थ नर न रहूं। सामर्थ्यकी पूर्णता ही उसका एकमात्र ध्येय हो जाता है, यह बात अलग है कि सफलता लाखोंमें किसी एकाधके गलेमें माला डाल उसकी चेरी होती है। इसीलिये भगवान् गीता में कहते हैं—

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद् यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥

[सहस्रों मनुष्योंमें सिद्धिके लिए कोई ही पुरुष प्रयत्न करता है। प्रयत्न करने वाले सहस्रोंमें तथा सिद्धिलाभ करने वाले सहस्रोंमें भी आत्मरूप मेरा वास्तविक ज्ञान किसीको ही होता है]

हां, परिश्रम कभी न कभी सफल अवश्य होगा। एक दिन वह अवश्य ही आएगा, जिस दिन पुरुष अपने आपको पूर्ण तृप्त पाएगा। इन्द्रियोंके द्वारा नानाविध सांसारिक पदार्थोंका उपभोग किया जाता है। जिससे पूर्णकामता पाई जाती है। इसीलिये अर्थतत्त्वज्ञ ऋषिलोग सांसारिक वस्तुमात्रको अर्थ कहते हैं। इन पदार्थोंसे व्यावहारिक कामकी पूर्ति की जाती है। प्रत्येक पुरुषके पास सम्पूर्णपदार्थ नहीं रह सकते। कारण—वह अपूर्ण है। किन्तु पूर्णताकी कामना सहज स्वाभाविक होनेसे अर्थमें विनिमयकी स्थापना अत्यन्त आवश्यक भासित होती है। अनन्तर प्रत्येक पदार्थका मूल्य भी निर्धारित किया जाता है। मूल्य निर्धारण करते समय इन बातोंका अवश्य विचार करना पड़ता है, जैसे—यह पदार्थ सुलभ है? अथवा दुर्लभ? लोकोपकारिताके गुण किसमें अधिक हैं किसमें न्यून। लोकोपकारिता और दुर्लभता ये दोनों गुण जिस पदार्थमें जितनी अधिक मात्रामें होंगे, उतना उस पदार्थका मूल्य अधिक हो जाएगा। मूल्य सर्वदा एकसा रहना इसी कारण सम्भव नहीं। प्रत्येक पदार्थकी उत्पत्तिसे लेकर उसके भोग पर्यन्त विचार कर उसकी उपयोगिता, उसकी लोकहितकारिता. उसका स्थायी परिणाम, तथा उसकी स्थिरता, इत्यादि सब बातोंको देखकर उसका मूल्य निर्धारित किया जाना चाहिए। इसकी व्यवस्थाके लिए आर्य पुरुष जिन नियमोंका निर्माण कर देते हैं, वह सब धर्म है।

जिस राष्ट्रमें जितने अधिक पदार्थोंका उत्पादन, उनका संग्रह, उनका संरक्षण तथा उनका उचित उपयोग होता है, वह राष्ट्र उतना ही अधिक अपनी कामनाको पूर्ण कर सकता है। वही राष्ट्र संसारमें जीवित रह सकता है, तथा शान्ति स्थापित करनेमें समर्थ हो सकता है। राष्ट्रालोकमें भी इसी से लिखा भी है कि—

वस्तु शक्योत्पत्ति राष्ट्रान्तरादायाति यत्र तत्।
नाशमाशु प्रयात्येव राष्ट्रमालस्यसंयुतम्॥

[जिस पदार्थकी उत्पतिका जिस राष्ट्रमें सम्भव है, उस राष्ट्रमें वही पदार्थ दूसरे राष्ट्रसे यदि वहां आते हों, तो वह राष्ट्र आलसी तथा अकर्मण्य हो जाएगा। अनन्तर शीघ्र ही अवनतिके गड्ढेमें गिर जाएगा]

कोई भी कार्य स्वातन्त्र्यके बिना सम्भव नहीं। इसी कारण स्वातन्त्र्य सबसे पहिला और सबसे बड़ा

पुरुषार्थ माना जाता है। तथा अन्तिम ध्येय भी स्वातन्त्र्य ही सबका होनेसे उसको चौथा पुरुषार्थ भी कहते हैं। स्वातन्त्र्य तथा मोक्ष एक ही बात है। स्वातन्त्र्यकी प्राप्ति व उसका संरक्षण यह सब मोक्ष स्तम्भका विषय है। अर्थ और कामकी सुव्यवस्था करनेके लिये नियमोंका निर्माण धर्मस्तम्भका विषय है। इन्द्रियोंको सुन्दर सुदृढ़ बनाना तथा पदार्थका उपभोग करना यह सब कामस्तम्भका विषय है। कृषि व्यापार आदि विनिमय साधनों का स्थापन, व्यवस्थापन, आदि सब अर्थस्तम्भका विषय है। उन्नतिकी कामना करने वालोंको प्रत्येक क्षण इन बातोंकी ओर ध्यान देना ही पड़ेगा। उन्हें प्रत्येक प्रयत्नसे अपने राष्ट्रको समृद्ध करनेकी भी चेष्टा करनी ही होगी। राष्ट्रकी आय और व्ययकी जांच करनी ही होगी। आयसे अधिक एक कौड़ीका भी व्यय एक दिन कुबेरको भी भिखारी बना देगा। एक २ कौड़ीका भी सञ्चय किसी दिन भिखारीको भी कुबेर बना सकता है। इसीलिये नीतिशास्त्रज्ञोंने कहा है -

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थञ्च साधयेत्।
क्षणनाशे कुतो विद्या कणनाशे कुतो धनम्॥

[विद्याके चाहने वाले पुरुषको एक २ क्षणकी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। एवं धनको चाहने वाले को एक २ कणकी भी उपेक्षा उचित नहीं। एक क्षणके नाशसे भी विद्या तथा एक २ कणके नाशसे भी धन का सञ्चय कैसे हो सकता है ?]

—अ० वा० आचार्य।

पारिवारिक आय-व्यय और मेरा अनुभव।

[ले०—श्रीमान् रावजी साहब गिरिधारीशरणसिंह जी, भरतपुर]



इस संसारमें प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि अपनी आयको जितना गुप्त रख सकता है उतना उसे रखना चाहिये। व्ययकी व्यवस्था पूर्णरूपसे प्रकट रखनी चाहिये। मेरा ऐसा लिखनेसे यह तात्पर्य है कि व्ययकी व्यवस्था प्रकट रखनेसे मनुष्य दुष्कर्मों में अपव्यय करनेसे हिचकिचायेगा और यह भी संभव है कि वह दुराचरणोंसे बच जाय। आयको गुप्त रखनेका कारण यह है कि प्रत्येक मनुष्यके शत्रु और मित्र दोनों होते ही हैं। यदि सहसा किसी बड़े आवश्यक कार्यमें व्यय करना पड़े तो उस मनुष्यको कोई कठिनाई नहीं पड़ेगी, उसका कार्य रुपयेकी जगह पैसोंमें होगा, अपनी आर्थिक स्थिति किसीको भी नहीं बतलानी चाहिये।

प्रत्येक मनुष्यको अपनी आयमेंसे दो भाग करने चाहियें, जिसमें एक भागमेंसे आधा सञ्चित करे और आधा आवश्यक कार्यके लिये रक्खे। अब बचा दूसरा भाग, जिसमें घरका व्यय और अपने मनोरंजक कार्य तथा आवश्यकतानुसार भृत्त्यादिकी व्यवस्था की जाय। कोईभी वस्तु किसीसे उधार न लीजाय, चाहे वह व्यापारीसे हो चाहे अड़ोस पड़ोस मेंसे हो। क्योंकि जिस पुरुषको ऋण लेनेका अभ्यास होजाता है, फिर उसका छूटना कठिन हो जाता है, जोकि परिणाममें बहुत दुखदायी सिद्ध होता है। बारम्बार उधार लेनेवाला यावज्जीवन ऋण ग्रस्ततासे छूट नहीं सकता, कारण कि उधार वही देगा जो व्यापार करेगा और जो व्यापार नहीं करता है वह कभी नहीं देगा। केवल अन्तर इतना रहा जैसा ईंट और पत्थरका। ऐसा आप लोगोंने सुना होगा कि एक मनुष्यने एक बनियाके यहांसे सवासेर गेहूँ लिये थे और उसका परिणाम यह निकला कि उसने और उसके लड़कोंने उसकी आजीवन दासता की, परन्तु वे ऽ१। गेहूँ उसके ऊपर उधारही रहे।

ऐसे एक नहीं सहस्रों उदाहरण हैं। यदि मनुष्य गृहस्थीमें रहता हुआ उधार न ले और क्रमाऽनुसार व्यय करे, तो भारतवर्षकी यह आर्थिक दुःस्थिति नहीं रहेगी। मनुष्य कहते हैं कि बालबच्चोंका पालनपोषण कैसे हो? उनको पहिले अपनी आर्थिक स्थितिका आलोचन करना चाहिये, अनन्तर विवाहादि कार्य करें। आजकलके विवाह प्रायः विवाहके उद्देश्य बिना समझे ही किये जाते हैं, केवल इन्द्रियोपभोग अथवा सन्तानोत्पादन ही विवाहका उद्देश्य नहीं, अज्ञानके कारण बहुतसी संतान उत्पन्न करनेमें ही लोग कृतकृत्यता समझते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि उनकी आर्थिक स्थिति नितान्त गिर जाती है। स्त्रियों को भी पातिव्रत्यधर्मकी शिक्षा नहीं देते, इसके विषयमें मैं यथावसर कभी लिखूंगा। जिस समय मनुष्य विवाह करे उस समय इस बातको ध्यानमें रक्खे कि वह कितने बच्चोंका पालनपोषण कर सकेगा। यदि मनुष्य अपनी आय और व्यय जैसा मैं लिख चुका हूँ वैसा ही चला सकता है तो ठीक। यह मैं मानता हूं कि विवाह करनेके अनन्तर व्यय बढ़ जाता है, किन्तु यह नहीं सोचते कि व्यय क्यों बढ़जाता है? होना तो यह चाहिये कि व्यय कम हो, हमारे यहां एक कहावत है "कि रँडुआका पैसा पौन पैसेमें चलता है" तो इससे यह ठीक मालूम पड़ता है कि मनुष्य विवाह करनेके अनन्तर थोड़े ही व्ययसे कार्य करसकता है। किन्तु व्यय अव्यवस्थित होगा तो व्यय घटनेके स्थानपर बढ़ता ही जायेगा, जिसका परिणाम दारिद्र्य प्रसिद्ध ही है। केवल अपनी पत्नी ही ऐसी हो सकती है जो सभी अपव्ययोंसे बचा सकती है। व्यर्थ व्यय जैसे—चून पिसाईके पैसे, कपड़े धुलाई, कपड़े-सिलाई, अजीर्णादि रोगोंके लिये औषधियों का व्यय। अपनी स्त्रीको घरके सब काम सिखाने चाहिये, तभी वह घरकी गृहलक्ष्मी कहलायेगी। विवाहिता स्त्री जो घरका काम नहीं जानती यदि उसको गृहलक्ष्मी कहा जाय तो अलक्ष्मी किसे कहेंगे? विवाहित जीवन उत्तम अवश्य है, क्योंकि कई प्रकारके इसमें सुखभी हैं, किन्तु अव्यवस्थित विवाहित जीवन दुःख के सिवाय क्या देसकता है? अब रहा प्रश्न उधार का। मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि कभी उधार लिया ही न जाय, क्योंकि संसारमें मनुष्योंके बीचमें रहते हुए उधार लेनेकी आवश्यकता पड़ ही जाती है, उधार लेते समय आगे पीछे भली भांति सोच कर लिया जाय और लेनेके पश्चात् उसे चुका देनेके लिये अतिशीघ्र प्रयत्न करना चाहिये, जिससे कि अधिक ब्याज न देना पड़े। प्रत्येक व्यापारी प्रायः चक्रव्याज (सूद दर सूद) लगा करके ऋण लेने वालोंको अपनी मुट्ठीमें रखनेका और उनको दरिद्री बनानेका प्रयत्न करते रहते हैं। अतः उनके चंगुलमें फँसनेसे बचना चाहिए। यह कहना व्यर्थ है कि वैश्य ही ऐसा करते हैं, यह कोई बात नहीं, जो भी मनुष्य उधार लेनदेन करेगा वह अपनी स्वार्थ पूर्तिके लिये ऐसा ही करेगा। मूलधन लेनेके स्थानमें वह उसकी सारी सम्पत्ति ही डड़प कर जाना चाहता है, तो इस महान् सङ्कटसे बचने के लिये सरल उपाय यही है कि पहिले उधार ही न ले, और यदि लेना ही पड़े तो उसको लौटानेका प्रयत्न शीघ्र ही करे और व्यापारियोंसे जहांतक हो सके वहांतक अपनी आयको बचाये। एक बार आय व्यापारियों के हाथ पड़ जाय तो वह कभी लौट नहीं सकती। मेरा यह सब लिखनेका सारांश यह है कि आयको देखकर व्यय करे और निपुणताके साथ व्यय करे, और यदि ऐसा नहीं करेगा तो अपना और अपने बच्चोंका जीवन नष्ट कर देगा। जयशङ्कर।

त्रैमासिक समर्घ-महर्घ विचार

[पृष्ठ ६२ का शेष]

विशेषः—इन उपर्युक्त तीन मासोंमें तेजीमन्दीके दुतर्फा ग्रहयोग बन रहे हैं, अतः यहां घटबढ़ अधिक होगी। मन्दीके बीचमें तेजी और तेजीमें मन्दी चलने लगेगी। रुईमें २५) ३०) चान्दीमें ५) ६) सुवर्णमें ३) गेहूंमें ।।) अलसीमें ।।।) एरण्डा सींगदाणामें २) ३) और बिनौलोंमें २) के लगभग घटाबढ़ी होकर अन्तमें रुख तेजी की ओर रहेगा। तांबा, लोहा शीशा, पारद, ऊनी-रेशमी-सूती-वस्त्र और घृत तैल तथा लाल रङ्गकी वस्तुओंका भाव बहुत तेज रहेगा। [सम्पादक]

त्रैमासिक समर्घ महर्घ विचार

अर्थस्तम्भमें अर्थोपार्जन और उसके संरक्षणके प्रत्येक वैध उपाय दिये जावेंगे। व्यापार-वाणिज्य-व्यवसाय भी इसके अन्तर्गत ही आता है; क्योंकि— "व्यापारे वसते लक्ष्मीः" तदनुसार इस स्तम्भमें हम व्यापारी वर्गके लाभार्थ पौरस्त्य पाश्चात्य सिद्धान्तके निष्कर्षरूपमें प्रतिमासकी महर्घता समर्घता (तेजी मन्दी) देंगे। इस बार दैनिक-ग्रहोंके कारण यह अङ्क बहुत बढ़ गया है; अतः हम ग्रहोंके योग शुभाशुभ वेध आदिका उल्लेख न करके केवल गेहूँ रुई अलसी आदि कुछ वस्तुओंमें (इन तीन मासमें) होने वाली महर्घता समर्घता (तेजी मन्दी) पर ही संक्षिप्त रूपमें प्रकाश डालेंगे। इस अङ्ककी तैय्यारीके कारण अवकाश बिल्कुल नहीं मिला, एतदर्थ इस विषय पर हम अधिक नहीं लिख सके। आगामी अङ्कमें महर्घ समर्घ के अनुभवी विशेषज्ञोंका सहयोग प्राप्त करके विस्तृत रूपमें लिखनेका प्रयत्न करेंगे।

आश्विन शु०१० ता. ३० सितम्बरसे कार्तिक शु० ६ ता० २८ अक्टूबर १९४१ पर्यन्त बाजार भावमें बहुत उलटफेर (घटबढ़) होगा। प्रायः प्रत्येक वस्तुके भाव तेजीकी ओर रहेंगे। मन्दीमें अचानक तेजीका उछाला बार २ आवेगा। का० कृ० ८ के उपरान्त साधारण तया गेहूं अलसीमें ।।) सुवर्णमें ।।।) रुईमें २५) ३०) और चान्दी पाट एरण्डा मूंगफलीमें २) ३) के लगभग तेजी आनेका योग है। का० शु० ६ से रुईमें मन्दी चलेगी। कार्तिक बदीमें जो वस्तु मन्दी हो उसे संग्रह करना आगे लाभदायक रहेगा। सुपारी, मिर्च, सरसों, राई, हींग, किराणाका भाव प्रायः तेज रहेगा। का० कृ० ४-५ को क्रमशः शनिशुक्र और सूर्यमङ्गलका प्रतियोग हो रहा है, तथा इस पक्ष में ४ ग्रह (मं. बु. गु. श.) वक्री हैं; अतः संसारमें अनिष्टकर घटनाएँ घटेंगी, युद्ध भीषण रूप धारण करेगा और व्यापारमें भयङ्कर घटावढ़ी आरम्भ होगी। यह समय व्यापारियोंके लिए बड़ी सावधानी का है। का० शु० में गेहूं, जौ, चणा, चावल, रुई आदि वस्तुओंका भाव तेज चलेगा।

कार्तिक शु० १० ता० २६ अक्टूबरसे मार्ग० कृ० १ ता० ५ नवम्बर तक रुई, चान्दी, गेहूं, अलसी, सुवर्ण, पाट, एरण्डा, मूंगफलीका भाव कुछ मन्दा रहेगा। का० शु० १२ के उपरान्त रुईमें सहसा १०) १५) मन्दी हो। गेहूं, अलसी, सुवर्णमें =) के लगभग और चान्दी, पाट, एरण्डा, मूंगफलीमें ।।) के लगभग मन्दी आनेका योग है। मार्ग० कृ० २ से मार्ग० कृ० ३० तक रुई पहले मन्दी होकर बाद तेज। चान्दीमें घटावढ़ी होकर रुख तेज। मार्ग० कृ० ८ तक अफीम, गेहूं, जौ, चणा, अलसीमें तेजी, बादमें कुछ मन्दी। मार्ग० कृ० ११ के बाद रुई और अफीममें मन्दापन, तैल, पिप्पली, लवंग, कालीमिर्चमें तेजी।

मार्ग० शु० १ ता० १६ नवम्बरसे मार्ग० शु० १५ ता० ३ दिसम्बर तक रुई, गेहूं, अलसी, मक्की, गुड़, खण्डके भाव मन्दे रहेंगे। घृत और लालरङ्गकी वस्तुएँ तेज होंगी। मार्ग० शु० १० के बाद रुईमें घटावढ़ी होकर १०) १५) और चान्दीमें १) २) मन्दा हो। व्यापारियोंको चाहिए कि इस पक्षमें मन्दीके समय माल खरीद लें, क्योंकि यहां मन्दीकी लाइन समाप्त है। अगले पक्षमें तेजी आवेगी।

पौष कृ० १ ता० ४ दिसम्बरसे पौष कृ० १२ ता० १५ दिसम्बर तक अलसी, घृत, गुड़, खण्ड और अन्न-गेहूं आदिका भाव प्रायः समान रहे या साधारण मन्दी आवे। इसके बाद प्रत्येक वस्तुमें अचानक घटावढ़ी आरम्भ होगी। अमावस्याके उपरान्त व्यापारिक जगत् में विषम परिस्थिति उत्पन्न होगी। गेहूं अलसीमें ।-) के लगभग, रुईमें ५) ६) और चान्दी पाट, एरण्डा, मूंगफली, सुवर्ण आदिमें १) के लगभग तेजीका योग प्रतीत होता है।

(शेष पृष्ठ ६१ पर देखिये)

काम

अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित् ।
यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्कामस्य चेष्टितम् ॥

[इस संसारमें कामना रहित पुरुषकी कोई भी क्रिया किसी भी समय दिखाई नहीं देती। प्राणी-मात्र जो भी कुछ करता है वह प्रत्येक कर्म कामकी ही चेष्टामात्र है।]

पाठक-वृन्द ! आजकल 'काम' शब्दका उच्चारण करते ही लोग केवल गुह्येन्द्रियकी वासनाको ही समझ बैठते हैं। किन्तु वस्तु-स्थिति इसके विपरीत है। स्वाध्याय न करनेसे ही ऐसा हो रहा है। काम तथा इच्छा पर्याय-मात्र है। समस्त संसारकी उत्पत्ति का मूल कारण वस्तु काम है। जिस प्रकार बीज तथा फलमें अवस्था तारतम्यसे नामकी व्यवस्था की गई है उसी प्रकार कारण व उद्देश्य एक ही वस्तुके दो ओर छोर हैं। देखिये, मूर्खसे लेकर विद्वान् पर्यन्त बिना प्रयोजनके किसी कर्म में प्रवृत्त होता हो, ऐसा कहीं भी देखने में नहीं आता। इसीलिये शास्त्रकार कहते हैं:—

प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते ।

यदि कोई कहे कि सकामता श्लाघनीय नहीं, क्योंकि वह मनुष्यको स्वार्थी बना देती है, तथा आगे चल कर स्वार्थी ही अनार्य हो जाता है। अनार्यता संसार में अशान्ति-प्रचारका मूल कारण है। किन्तु उन्हें यह भी सोचना होगा कि अकामताका रहना सम्भव भी है ? अकामता संसार में आकाशके फूलके समान असम्भव है। जब सारे संसारका मूल ही काम-रूप है तो उससे उत्पन्न होने वाले संसार में अकामताकी सम्भावना कैसे हो सकती है ? अत एव संसारके मूलको रहस्य शास्त्रोंमें तन्त्ररहस्य-विद्-महर्षियोंने महाकामेश्वर कहा है। तथा उसकी अभिन्न स्वरूप महाशक्ति महाकामेश्वरी कही जाती हैं। श्रुति कहती है "स एकाकी न रमते" "अतः स द्वितीय मैच्छत्" मूलतत्त्व आनन्दस्वरूप है। तथा अभिनव-रमणीय है। उपनिषद्में कहा है "आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति।" कमनीय होनेके कारण काम नाम पड़ा है। पुण्यानन्दनाथ कहते हैं— "कामः कमनीयतया" एवञ्च संसार सारा ही काममय है, ऐसा मानना ही होगा। यह कोई निन्दनीय बात नहीं है। इसी कारण प्रत्येक प्राणिमात्र सकाम है, तथा प्रतिक्षण कामकी ही कामना से व्याप्त है। अपने आपको छोड़कर कौन रह सकता है ? काम अपना आत्मरूप है। श्रुति कहती है "सर्वत एवाऽऽत्मानं गोपायीत" हां, यच्च यावत्संसार आत्मरूपसे पूर्ण अनुभूत होने पर ही पूर्णकामताका सम्भव है, यह बात ठीक ही है। इसी लिये भगवान् कहते हैं:—

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः ।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥

[जो मानव अपने आपमें ही प्रेम करता है, अपने आपसे ही तृप्त है तथा अपने आपसे ही सन्तुष्ट है, उसके लिये कोई कर्म शेष नहीं रहता।]

मूल महाकामेश्वरी महाकामेश्वराऽभिन्न विन्दु ही इस संसारसिन्धुका विसर्ग करता है। इस निसर्गको समझ लेनेसे व इसकी अनुभूति-सिद्धिके होजानेसे स्वर्गाऽपवर्गकी उलझन भी सुलझ जाती है, मूल शिव विन्दु ही इच्छा, ज्ञान तथा क्रिया स्वरूपोंसे पूर्ण-कामताका पूर्णानन्द ले रहा है, यह है काम रहस्य ! विशेष बातें हमारे 'श्रीआत्मविलास' 'श्रीराष्ट्रसंजीवन' 'श्रीमहानुभवशक्तिस्तव' में जिज्ञासू पाठक देख सकते हैं। साधारण पुरुषोंको इसे उलझनको सुलझानेका उपाय भगवान् मनुने यों कहा है:—

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता ।
काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः ॥

[कामनाके एकमात्र वश रहना अच्छा नहीं, किन्तु इस संसारमें अकामताका होना सम्भव नहीं।

ऐसी परिस्थितिमें कल्याणकर तो यह है—वेदोंका स्वाध्याय कामनाके योग्य है। तथा ज्ञानशक्तिका मूल अर्थात् इच्छा शक्ति कामनाके योग्य है, तथा ज्ञानशक्ति के अनुकूल कर्मकलाप भी कामना करनेके योग्य है।] क्रिया ज्ञान तथा इच्छा इन सभीकी कामनामें उपादेय रूपसे अथवा हेय रूपसे पुरुषमात्रकी जो भी प्रवृत्ति होती है, वह सब आत्मतृप्तिके लिये ही। जीव-भाव में आबद्ध जीवकी तृप्तिके लिये, तथा शिवभाव में आबद्ध शिवकी तृप्तिके लिए। जीव अथवा शिव जिनकी कामनासे आबद्ध होता है, उन काम्यरूपोंको विषय कहते हैं। 'विशेषेण सिन्वन्ति बध्नन्ति ते विषयाः' इस प्रकार शास्त्रकारोंने विषय शब्दकी व्युत्पत्ति की है। विषयोंका उपभोग करनेके लिये जो साधन, द्वार या करण, निर्मित किये गये हैं। उनको इन्द्रिय कहते हैं। विषयोंका इनमें होम किया जाता है, जीव अथवा शिवके लिये यह एक महान् यज्ञ-रहस्य है। वेदादि सच्छास्त्रोंमें इसी कारण इनको देव कहते हैं। इन इन्द्रियोंकी शक्तियोंको वहिर्मुखता में वृत्ति तथा अन्तर्मुखदशामें करणेश्वरी देवी आदि रहस्यविद् विद्वानोंने कहा है। रहस्यका अधिक खोलना अच्छा नहीं। जिज्ञासु पाठक आत्मविलासादि ग्रन्थोंको सद्गुरुसे पढ़ें।

राष्ट्रको स्वतन्त्र तथा पूर्ण आर्य बनाए बिना विश्व-में पूर्ण सुख व शान्तिकी स्थापना संभव नहीं। राष्ट्र-को स्वतन्त्र वा पूर्ण आर्य बनानेके लिये प्रत्येक राष्ट्रिय को कामशास्त्रका स्वाध्याय भी परमावश्यक है। प्रत्येक इन्द्रियको उसके विषयका उपभोग करनेके लिये पूर्ण समर्थ बनाना तथा प्राप्त सामर्थ्यका अक्षुण्ण रखना ये सब बातें जिन शास्त्रोंमें हों, वे सब कामशास्त्र हैं। उपभोग्य विषयोंको उपभोग योग्य बनानेके उपाय जिसमें वर्णित हों उसको भी कामशास्त्र कह सकते हैं। जैसे बाल संवारना, वस्त्र पहनना, आभूषण पहनना, भोजन बनाना, भोजन करना, झूलना, तैरना, फूल, तैल, इत्र, चन्दन, पान आदि तैयार करना, उपवन-विहार, जलक्रीड़ा आदि २। कामशास्त्रके अनध्ययनसे मनुष्य पशुप्राय हो जाते हैं। देखिये, शासककी सभा, पण्डितकी सभा, कैसी होनी चाहिए। गृहनिर्माण, उपवननिर्माण, नगर-निर्माण, ग्रामव्यवस्था, पदार्थव्यवस्था आदि अज्ञात हो तो पशुमें तथा मनुष्योंमें क्या अन्तर है? मनुष्य-जीवन आनन्दमय बनानेके लिये मोक्ष, धर्म, तथा अर्थके साथ ही कामका भी स्वाध्याय करना ही होगा। प्रत्येक विषयका उपभोग करते समय उसके कारण तथा फलका ज्ञान परम आवश्यक है। उसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं हो सकता। वास्तवमें देखा जाय तो काम ही परम पुरुषार्थ है। अर्थ और धर्म तो इसके साधनमात्र हैं। मोक्ष भी कामकी परिपूर्तिका असाधारण साधनमात्र ही है। हां, व्यावहारिक काम-से पारमार्थिक काम अतिश्रेष्ठ है। इसी कारण पारमार्थिक मोक्ष भी सर्वश्रेष्ठ साधन है। हां, कुछ भी हो कामशास्त्र के स्वाध्यायके बिना विश्व सुखी नहीं हो सकता। हां, अशुद्ध कामको बिना नष्ट किए विशुद्ध कामकी प्राप्ति नहीं होती। मनुने जो कहा है—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाऽभिवर्धते॥

[कामनाओंके उपभोग से कभी भी काम शान्त नहीं होता। घृतादि होमद्रव्योंके हवनसे जिस प्रकार अग्नि बढ़ती ही जाती है, उसी प्रकार काम बढ़ता ही जाता है।]

यहां पर कामका तात्पर्य अशुद्ध काम-से है। इन सब बातोंका ज्ञान कामशास्त्रके स्वाध्यायके बिना कैसे हो सकता है? सारांश तो यही है कि—राष्ट्रियमात्रको अपने राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत बनाने के लिए काम-शास्त्र पढ़ना ही होगा। शिवमस्तु!

—अ० वा० आचार्य।



प्राकृतिक चिकित्सा

[ले०—कविराज श्री पं० मोहनलालजी शास्त्री भिषगाचार्य, विशेष चिकित्सक राजयक्ष्मा, भू० पू० स्पेशल प्रो० तिब्बी कालेज, अध्यक्ष आर्य आयुर्वैदिक रसायनशाला, गाडोदिया मारकेट, दिल्ली]



प्राकृतिक चिकित्सा आयुर्वेद है, यतः वेदोंका ज्ञान अनादि और प्राकृतिक है, वह ही इसका स्रोत है। वेदोंका प्रतिपादन किया हुआ पञ्च महाभौत्तिक संसार निर्माण ही इसका सिद्धान्त है। अतः प्राणिमात्रका चिकित्सा क्रम पञ्च महाभूतोंके अनुसार वर्णित है। यथा—पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश पञ्च महाभूत हैं। इनसे त्रिदोष पञ्च महाभौत्तिक वात पित्त कफ बने हैं, पर इनमें किसीकी अधिकता या न्यूनताके द्वारा त्रिदोष भेद हैं। यथा—पृथ्वी जल जिसमें अधिक है वह कफ, अग्नि-जलकी जिसमें विशेषता है वह पित्त और वायु-आकाशकी अधिकता जिसमें है वह वायु नामसे पुकारा जाता है। इस त्रिदोष समुदायकी साम्यावस्था शरीर सङ्गठनके अनुकूल (शरीरोंका भी महाभूतोंकी न्यूनता और विशेषतासे अनेक विध स्वभाव होनेसे त्रिदोषके भी अनेक भेद हो जाते हैं) आरोग्य तथा विषमता रोग कहलाता है। अतः चिकित्सा क्रममें निदान करते समय आयुर्वेदज्ञको अंशांश कल्पना करनी चाहिए। उसीके अनुसार अर्थात् त्रिदोषकी न्यूनता और विशेषताको ध्यान रख कर रोगीको पञ्च कर्म, औषध और तन्मात्राकी व्यवस्था करनी पड़ेगी; तभी वह चिकित्सा स्वास्थ्य प्रद हो सकेगी। अतएव शास्त्रोंमें रोग निदान करते समय वात पित्त कफ उल्वणता अनुल्वणताका ध्यान रखते हुए रोगोंके अनेक भेदोंका दिग्दर्शन कराया है। इसी प्रकार द्रव्य गुणमें एक एक द्रव्यकी त्रिदोष हरण वृद्धि बताई और रोग अवस्था विशेषको ध्यान रखते हुए औषध मात्राकी कल्पना करनी बताई है।

अतः रोगियोंकी प्रकृति जानना परमावश्यक है। इसी प्रकार रोग विज्ञान द्वारा की हुई चिकित्सा ही प्राकृतिक एवं फल प्रद है। पर आजकल दौर्भाग्यवश ऐसे वैद्य भारतमें इने गिने ही हैं—वे ही चिकित्सक समझे जाने चाहिएं। इसके विरुद्ध चिकित्सा करने वाले बहुतायतसे मिलते हैं, जिन्होंने आयुर्वेदकी परीक्षा तो पास की है, पर इस शैलीको काममें नहीं लाते। वे भी जैसे अन्य चिकित्सा वाले पहले तो पञ्च महाभूतोंकी इस वैज्ञानिक रीतिको न मानते हुए एक ही औषध एक जैसे रोगोंमें प्रयुक्त करते हैं, क्योंकि उनके यहां त्रिदोष व्यवस्था न होने से एक रोगके अनेक भेद नहीं बनते, वे एक विध समझकर औषध प्रदान करते रहते हैं। उससे किसीको लाभ, किसीको हानि भी हो सकती है। वही प्रकार हमारे नवशिक्षित वैद्योंने स्वीकार कर लिया है। इसे मैं आयुर्वैदिक चिकित्सा कहने को तैयार नहीं हूँ; न वह प्राकृतिक ही है। पर पूर्वोक्त विधि पूर्णतः प्राकृतिक है, उसमें द्रव्य-गुण बताकर देश कालका भी विचार किया गया है।

मैं आशा करता हूँ कि भारतीय आयुर्वैदिक विद्वान् इस शास्त्रीय चिकित्सा क्रमका ध्यान रखते हुए प्राणियोंको आरोग्य प्रदान करेंगे, जिससे इस विज्ञान की उन्नति होगी। अन्य पद्धतियां इसके सामने धीमी अवश्य पड़ जायेंगी। मैं भी रोगोंके निदान, अनेक विध चिकित्साक्रम "श्रीस्वाध्याय" द्वारा आपकी सेवा में अर्पित करता रहूँगा।

इतिहास

इतिहास नाम सुनते ही एकप्रकारकी उत्सुकता हृदयमें भर जाती है साथ ही उसकी पूर्तिकी उत्कंठा भी। यह उत्कंठा स्वाभाविक है, कृत्रिम नहीं ? किसी भी वस्तुके सम्मुख आने पर उसके इतिहासकी जानकारी के लिए प्रयत्न प्रारम्भ हो जाता है। इतिहास ज्ञानकी पूर्तिके बिना चित्त में शांति नहीं होती। सम्मुख होनेके क्षणसे पहले जितना भी समय हो चुका है उसकी वास्तविक घटनाका नाम ही इतिहास है। प्रत्येक वस्तुका इतिहास तो होता ही है क्योंकि वह अनिवार्य है। इतिहास ज्ञानसे भविष्यका निर्माण करनेमें यथेष्ट सहायता मिलती है। स्वाध्यायके बिना इतिहास ज्ञान नहीं होसकता। जिस राष्ट्रमें जितना अधिक इतिहासका स्वाध्याय होगा उस राष्ट्रको उतना ही अधिक उन्नत होनेके उपायोंका ज्ञान होसकता है। उन्नतिकी इच्छा सभी रखते हैं। इतिहासका अनध्ययन राष्ट्रोंके विनाशका मूल कारण है। वस्तुमात्र अनुकरणशील है। अनुकरण यदि अविवेकपूर्ण होगा तो दुःख तथा अवनतिके अतिरिक्त क्या प्राप्त होसकता है ? अवनतिको कोई भी उपादेय नहीं समझता। किन्तु इतिहास ज्ञानके बिना हिताहितका ज्ञान नहीं होगा। अनुकरण करते समय अनुकरणीय वस्तुके साङ्गोपाङ्ग इतिहास ज्ञानकी आवश्यकता अत्यन्त वांछनीय है। जिससे अपने पुरुषार्थोंकी सम्पूर्ति हो सके। पुरुषार्थोंकी सम्पूर्ति पुरुषकी स्वाभाविक परिस्थिति है। स्वाभाविक परिस्थिति अपरिवर्तनीय है। पुरुष जो भी चाहता है सब पुरुषार्थ है। सम्पूर्ण पुरुषार्थ चार भागोंमें आजाते हैं, वे ही धर्म अर्थ काम और मोक्ष नामसे भारतीय शास्त्रोंमें वर्णित हैं। इन चारों के आमूलचूल ज्ञानके बिना व्यवस्था नहीं हो सकती, इनका आमूलचूल ज्ञान इतिहासमें निहित है। इसी कारण भारतीय वाङ्मयमें इतिहासको पांचवां वेद कहा है। "इतिहासः पंचोमो वेदः"। इतिहास ज्ञानके बिना अनुकरणके लिए किसी आदर्श की स्थापना नहीं होसकती। जिनका इतिहास जितना उज्ज्वल होगा वे उतने ही उज्ज्वल हो सकते हैं। इससे पाठक समझ गये होंगे कि इतिहासके अन्वेषण, अध्ययन, लेखन, प्रचारणकी कितनी आवश्यकता है ? समस्त संसारमें भारतीय इतिहासके जोड़का समुज्ज्वल इतिहास मिलना कठिन है। किन्तु दुःखसे कहना पड़ता है कि आज भारतीय इतिहासकी कितनी दुर्दशा हो रही है। दासताकी बेड़ीमें जकड़ा भारत अपनी इस दुर्दशाको अपनी खुली आंखों देखता हुआ भी कुछभी करनेमें असमर्थ हो रहा है। हां, कुछ २ आशा तब होने लगती है जब कि इतिहासान्वेषणके प्रयत्नको देखने लगते हैं। प्रो० यदुनाथ सरकार, इतिहासाचार्य वै० का० राजवाड़े, म०म०रा० ब० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, शं० बा० दीक्षित, रा० ब० चि० वि० वैद्य, देसाई, पं० जयचन्द विद्यालंकार आदि महानुभावोंके प्रयत्न इस दिशामें श्लाघनीय हैं। किन्तु अतिविस्तृत भारतीय इतिहासमें इससे क्या हो सकता है। प्रांत २ में मंडल २ में गांव २ में इसके अध्ययनकी आवश्यकता है। राष्ट्रमें वर्तमान प्रत्येक वस्तुके इतिहासके अन्वेषणकी आवश्यकता है, साथही उसके प्रचारण की भी। सुनते हैं कि महाराष्ट्रोंने १५००० पृष्ठ इतिहास लिखा है, किन्तु भारतीय विशाल वैभवकी दृष्टिमें यह सिन्धुमें बिन्दुके समान भी नहीं। हमारा "स्वाध्याय" भी इस ओर यथाशक्ति प्रयत्न करेगा। "नभः पतन्त्यात्मसमं पतत्त्रिणः" इस न्यायसे 'श्रीस्वाध्याय' इस ओर भी प्रयत्न करना चाहता है। पाठकवृन्द इस कार्यमें हमें तन मन धन से सहर्ष सहायता प्रदान करेंगे ऐसी पूर्ण आशा है।

इतिहास लिखते समय इस बातका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी बात अधिक या कम न हो। झूठके लिए इतिहासमें कोई स्थान नहीं। इसमें लाग लपेट अथवा लोभ लालचसे काम बिगड़ जाने की सम्भावना रहती है। इसी कारण इतिहास लेखन

में बहुत ही सावधानी रखनी पड़ती है। एक दो उदाहरण हम बड़े दुःखके साथ देते हैं।

(१) दश वर्षसे पहले "माधुरी" के किसी अङ्क में एक एम. ए. महाशयने इतिहास की ऐसी टांग तोड़ी थी जो कि बहुत ही अखरती और लेखकके इतिहास ज्ञानकी हँसी भी उड़ाती है। मिश्र बन्धुओंके विषयमें उनके गुणानुवाद गाते हुए आपने लिखा है कि "मिश्र बन्धुओंके पूर्वज एक चिन्तामणि मिश्र थे, जिन्होंने भारतके अत्यन्त प्रसिद्ध मुहूर्तचिन्तामणि ग्रन्थकी रचना की थी" पाठक वृन्द ! देखा आपने एम. ए. महाशयके इतिहास ज्ञानका उदाहरण। साधारणसे साधारण ज्योतिषी भी जानता है कि मुहूर्तचिन्तामणि रामदैवज्ञकी बनाई हुई है। सैकड़ों बार जो पुस्तक छप चुकी हो उसको एक बार उठाकर तो एम. ए. महाशयको देख लेना चाहिए था। क्या इसीका नाम इतिहासान्वेषण है ? अस्तु।

(२) स्व० म० म० पं० शिवदत्तजीने भट्टोजी दीक्षितको केवल मात्र लक्ष्मीधरका पुत्र होनेके कारण बारहवीं शताब्दीमें धकेल दिया है और इसी प्रकार महाराष्ट्र देशके सारस्वत ब्राह्मण तथा किसी मन्दिरका पुजारी लिख मारा है। ऐसी मनघड़न्त बातोंको लिखनेसे क्या इतिहासकी हत्या नहीं होगी ? विक्रम सं० १६४५ में एक व्यवस्थापत्र पर शेषकृष्णके हस्ताक्षर मिलते हैं और जब कि राजा वीरबल व राजा टोडरमल आदि २ कई बड़े २ राजा महाराजाओंके गुरु काशीके तात्कालिक सबसे बड़े विद्वान् शेषकृष्णका स्थितिकाल सं० १६५० के बाद भी मिलता है तो उनके प्रधानशिष्य भट्टोजी दीक्षित बारहवीं शताब्दीमें कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ? इस विषयमें विस्तृत विवेचन फिर कभी लिखा जायगा। ऐसे ही लाखों उदाहरण मिल सकते हैं। इतिहासमें कृत्रिमता महान् पाप समझा जाता है, किन्तु इस पापके करनेवालों को दण्ड कौन दे। अस्तु।

—अ० वा० आचार्य

इतिहासानुशीलन—स्वाध्याय

[ले०—'एक इतिहासका छात्र']

भारतवर्ष एक ऐसा सुवर्ण युग रहा है कि यहां एक ही जातिके लोगोंकी शासन-सम्बन्धी व्यवस्थापिका सभा निर्मित थी और समस्त प्रजाजन इसीके द्वारा अपने अधिकारोंको सुरक्षित रखती थी। वह जानपद-शासन पद्धति थी, बादमें धीरे २ भारतमें साम्राज्यके उदय होने पर इस संस्थामें शिथिलता आई और वह संस्था जिसमें जातीय जीवनका समन्वय था, शनैः शनैः भङ्ग होती गई।

इस परिस्थितिमें पुनः एक नवीन संस्थाने जन्म लिया, परन्तु स्थित्यनुसार यह केवल पुरातन संस्थाका परिवर्तित रूप ही था।

उज्जयिनीके सम्राट् विक्रमके ६०० वर्ष पूर्वसे इतने ही वर्ष पश्चात् काल पर्यन्त शासन दो भागोंमें विभक्त था। प्रथम-भाग राजधानीके रूपमें और द्वितीय भाग 'जनपद' नामसे मानित था। प्रथम भागको पुर नगर या दुर्ग संज्ञासे लोग पहिचानते थे और जनपदको 'राष्ट्र' या देशकी अभिधासे लोग जानते थे। अर्थशास्त्रमें इसी 'जनपद' और दुर्गका उल्लेख है। केवल राजधानीके भूमि खण्डको छोड़कर शेष पृथ्वी-भागको जनपद ही संज्ञा स्वीकृत थी।

बाल्मिकीय रामायणमें—

'पौर जानपदाश्चापि नैगमश्च कृतांजलिः'

इस उल्लेखसे पौर, जानपद, और नैगमकी उपस्थितिका प्रमाण बतलाता है कि—'पौर' तो राजधानीके जन थे, और 'जानपद' उस जनशासित भूभागके प्रतिनिधि थे। इससे स्पष्ट है कि पौर और जानपद भिन्नार्थवाची राजधानी और जनतन्त्रके

श्रुति सम्मत राज्य पद्धति

[ले०—श्री पं० नन्दकुमार शर्मा, भरतपुर]

—:*❀❀❀*:—

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि हमारा भारतवर्ष किसी समय विद्या, बल, बुद्धि, कला कौशल, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी विषयोंका भण्डार होनेके साथ ही साथ जगद्गुरुके महिमामय पद पर अधिष्ठित था। इस बातको सिद्ध करनेके लिये हमारे पास समुचित प्रमाण हैं कि संसारके प्रत्येक देशको सभ्यताका आलोक इसी देशसे प्राप्त हुआ है। किन्तु कालके चक्रसे भारतके वह दिन अब नहीं रहे। वह शनैः शनैः पतनके पथ पर बढ़ने लगा और होते २ आज वह समय उपस्थित है कि संसार के समुन्नत सभ्य और बलशाली राष्ट्रोंमें इसका कोई स्थान ही नहीं है।

वर्तमान युगको उन्नतिके युगके नामसे पुकारा जाता है। चारों ओर क्रांतिकी प्रखर लहरें बड़े वेगसे बढ़ती हुई दृष्टिगत हो रही हैं। किन्तु इतने हाथ-पैर मारने पर भी अभी तक भारतकी उन्नति 'आकाश-कुसुम' ही दिखाई दे रही है। इसका मुख्य कारण यही है कि जैसे कोई वैद्य बिना रोगीकी प्रकृतिका परिचय प्राप्त किये तथा उसके शरीरमें उत्पन्न हुए विकार का मूल कारण जाने बिना ही उपचारको अग्रसर होता है। उसका परिणाम प्रत्यक्ष है, वह उस रोगीको रोग-मुक्त तो कर ही नहीं सकता। (चाहे वाह्य लक्षण अच्छे भले ही दीखने लगें) साथ ही साथ उसे और भी कतिपय व्याधियोंका लक्ष्य बना देता है। ठीक ऐसी ही दशा आधुनिक कालीन भारतीय सुधारकोंकी भी होरही है।

इसमें सन्देह नहीं कि कोई भी देश बिना अपनी सनातन-संस्कृतिके उत्थानके उन्नत नहीं हो सकता। साथ ही जिस देशकी राज्य-पद्धति विश्रृङ्खल हो जाती है वह देश अवश्य ही अवनतिके गहरे गढ़ेमें जा गिरता है। राष्ट्रशक्तिका नियंत्रण तथा नियमन राज्य-पद्धतिके द्वारा ही होता है। इसके बिगड़ते ही राष्ट्रमें उच्छृङ्खलता आजाती है। जिसके कारण वह स्वार्जित शक्तिको गंवा कर शक्तिहीन हो जाता है, और शक्ति-हीनका संसारमें कोई स्थान नहीं रहता।

अब विचारणीय विषय यह है कि उस समय जब कि हमारा देश उन्नतिके सर्वोच्च शिखर पर आसीन था यहांकी राज्य-पद्धति कैसी थी। भारतीय संस्कृतिका उद्गम है वेद। वैदिक आदर्शानुसार राष्ट्र शक्तिका नियंत्रण ब्राह्म-क्षत्र शक्ति से होना माना गया है; यथा —

प्रतीक थे। जनपद-संस्थामें प्रजाके प्रतिनिधिका स्थान था, वे शासनमें अपना स्वतन्त्र सम्मतिका अधिकार रखते थे।

अतएव 'जन' की अपेक्षा 'जनपद' का आदर विशेष था, यानि 'राष्ट्र' का आधार 'जाति' की अपेक्षा, प्रजाके रहनेकी भूमिसे होगया था। इसके फल-स्वरूप— एक ही राष्ट्रमें जहां 'जनपद' शब्द आरम्भ-में एक जातिके आवासस्थानके रूपमें मान्य था, लेकिन 'राष्ट्र' रूपमें परिवर्तित होजाने पर 'जनपद' व्यापकार्थ-में— 'देश' के रूपमें प्रयुक्त होने लगा था।

साम्राज्यवादका आरम्भ तो एक प्रकारसे बुद्ध के अभिनव 'धम्म' से मानना होगा। स्वयं बुद्ध तो आरम्भमें 'प्रजातन्त्र' में विश्वास रखते थे। परन्तु उन्हें अपने 'धम्म' के सार्वभौम साम्राज्य स्थापित करनेकी बलवती भावनाने साम्राज्य-वादी बना दिया था। यों तो यजुर्वेद तथा ऐत्तरेय ब्राह्मणमें— 'आसमुद्र क्षितीश'—या—'पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया-एकराड्' इस प्रकार साम्राज्य-वादकी भावना हजारों वर्षसे भी सामने थी ही। परन्तु 'बुद्ध' की जातक—कथाओंमें कई जगह समस्त-भारतीय-साम्राज्यकी भावनाके दर्शन हो सकते हैं। "सकल जम्बूद्वीपे एक राजम्" इस सूत्र में हमारे कथनका समर्थन है।

१. ब्रह्मणा क्षत्रेण च श्री: परिगृहीता भवति ।
२. सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद् ब्रह्म । शतपथ १४.४.२.२३.
३. यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरत: सह ।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवा: सहाग्निना ॥
यजु० २०।२५

उक्त अवतरणोंसे यह भलीभांति प्रकट होजाता है कि क्षत्रिय-शक्ति, ब्रह्म-शक्तिके साथ समनस होकर काम करे तभी राष्ट्र सुख समृद्धि तथा उन्नतिको प्राप्त होता है, और ऐसाही भारतवर्षमें होता भी था। भारतीय संस्कृतिमें सबसे बड़ा त्यागी ही ब्राह्मणत्वसे सुशोभित माना जाता है। ऐसे निर्लेप व्यक्ति विशुद्ध मनसे जिन योजनाओं और धर्मोंकी व्यवस्था करते थे वह प्रजाके लिए हितकर होती थीं। जो देश आधुनिक कालमें बड़े बलशाली तथा समुन्नत माने जा रहे हैं, यदि सूक्ष्म दृष्टिसे विचार किया जाय तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि उनमें शान्ति किञ्चित् भी नहीं दिखाई देती। कारण यही है कि वहांकी शासन पद्धतिमें क्षात्रशक्तिका ही महत्व माना गया है, उसके साथ ब्रह्मशक्तिका सम्पर्क नाम मात्रको भी नहीं है। इसी लिए सारे विश्वमें आज भीषण अशान्तिका नग्न-नृत्य हो रहा है, जो किसी पर भी अविदित नहीं। भारतीय पद्धतिके अनुसार जब तक क्षात्र-शक्ति पर ब्रह्म-शक्तिका प्रेमपूर्ण नियंत्रण नहीं, तबतक किसी भी देशमें शान्ति स्थापित करनेका विचार कोरी 'मृग-मरीचिका' ही होगा।

महाप्राज्ञ प्लैटो जो पाश्चात्य देशोंमें राजनीतिके अद्वितीय पंडित माने गये, जिनके आदर्शोंकी भूठन मात्र खाकर अनेक लोग राजनीतिके धुरन्धर पण्डित माने जाते हैं उनका भी इस विषयमें यही मत है। विना आध्यात्मके राज्य सफल नहीं हो सकता। राजा की परिभाषा अथर्ववेद १५।८।२१ में इस प्रकार है—

"सोऽरज्यत ततो राजन्योऽजायत"

महाभारत शान्तिपर्वमें भी—

"रंजिताश्च प्रजा: सर्वा: तेन राजेति शब्द्यते"

वाक्य पाए जाते हैं। महर्षि वशिष्ठ राज्याभिषेकके समय श्री रामचन्द्रजीको आदेश करते हैं—

"युक्त: प्रजानामनुरंजने स्यास्तस्माद्यशो यत् परमं धनं व:"

इसके उत्तरमें श्रीराम कहते हैं—

"स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा ॥"

यह हैं भारतीय नरेशोंकी निज प्रजाके प्रति उच्च एवं आदर्श भावनाएं।

जिस भांति मानव शरीर पंचकोषात्मक है, ठीक उसी प्रकार राष्ट्र भी पंचकोषात्मक है—

१. अन्नमय कोष—इसके अंतर्गत पृथ्वी, खनिज सम्पत्ति, वन, नदी, पर्वत, कृषि सम्पत्ति, धन-धान्य, पशु, नगर, पुर, ग्राम, नहर आदि स्थूल पदार्थ हैं।

२. प्राणमय कोष—इसमें राष्ट्रका प्रबल संगठन, जिसके अंतर्गत रेल, तार, डाक, समाचारपत्र, सड़क आदि हैं।

३. मनोमय कोष—राष्ट्रकी शक्ति उसके मनोमय कोष पर ही अवलम्बित है। राजाके पास चाहे जितनी सेना क्यों न हो, यदि प्रजाकी भक्ति उसमें नहीं तो वह राजा उस सैन्य शक्तिके होते हुए भी न हुए के समान है।

४. विज्ञानमय कोष—उपरोक्त तीनों कोषोंके ऊपर विज्ञानमय कोष है। विद्या, संस्कृति, सभ्यता, विवेक, जाग्रति, ज्ञान आदि सबका अधिष्ठान यही विज्ञानमय कोष है। नीति, धर्म, आध्यात्म और संस्कृतिकी उन्नति ही व्यष्टि समष्टि जीवनका परम लक्ष्य है। इसीकी वृद्धिसे सर्वत्र आनन्दका प्रसार होता है और लोग यह भूल जाते हैं कि समाज और राज्यमें कुछ पार्थक्य है। भारतीय पद्धतिमें इस कोषके ऊपर सर्वथा ब्रह्मशक्तिका ही अधिकार था।

५. आनन्दमय कोष—इस दशामें काल, कर्म, स्वभाव और गुणकृत दोष नहीं रह जाते। इसी आनन्दमय कोषकी पुष्टिके फलस्वरूप राम-राज्य की स्थितिका चित्र अंकित करते हुए श्री गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं:—

"दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम-राज्य नहिं काहुहि व्यापा ।
राम भगति रत नर अरु नारी, सकल परमगति के अधिकारी ।"

इस आदर्शकी प्राप्ति ही सबसे बड़ी विजय है,

संस्कृत-साहित्य और काश्मीरी पण्डित

लेखक—डा० श्रीनाथ तिक्कू शास्त्री, ए० एम० एस० (बी० एच० यू०)



यही सबसे बड़ा कल्याण है, यही उच्चतम सभ्यता है, इसीको लक्ष्य करके महाभारतकार कहते हैं—

"सर्वे त्यागा राजधर्मेषु दृष्टाः
सर्वाः दीक्षा राजधर्मेषु युक्ताः ।
सर्वा विद्या राज धर्मेषु चोक्ताः
सर्वे लोका राजधर्मे प्रविष्टाः ॥"

भारतीय वैदिक राज्य पद्धति इन्हीं महावाक्यों पर अवलम्बित थी।

उपरोक्त अवतरणोंसे यह भलीभांति सिद्ध हो जाता है कि वैदिक कालमें भारतवर्षमें राजा और प्रजाके बीच तदात्म्य भावकी प्रधानता थी। दोनों ही धर्मके आधीन थे। अधिकारोंकी खेंचातान नाम को भी न थी। भारतीय पार्थिव राज विस्तारके इच्छुक न थे। संस्कृतिकी विजयको ही वह सच्ची विजय समझते थे। अमर आदर्शोंका प्रचार ही देशकी महिमा-वृद्धिका कारण माना जाता था, और इस सबको नियमित रूपसे चलानेको ब्रह्म-क्षत्र शक्ति मिल कर पूर्ण मनोयोगसे कार्य करती थी — यह थी भारतीय शासन-पद्धति।

यदि भारतकी उन्नतिके इच्छुक हमारे नेतागण आज भी उसी वैदिक पद्धतिको पुनर्जीवित करनेका प्रयत्न करें तो कोई कारण नहीं कि हमारा प्यारा राष्ट्र फिर उसी उन्नतिके सर्वोच्च शिखर पर न पहुंच जाय।

———

संस्कृत-साहित्य संसारका सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। पश्चिम तथा पूर्वके भिन्न भिन्न देशोंके साहित्योंने संस्कृत साहित्यके आधार पर उन्नति की है। यद्यपि आजकल संस्कृत-साहित्यकी प्रगति रुक गई है और इस साहित्यके अनेकों पुस्तकालय विदेशियोंने जला दिये हैं, तथा असंख्य ग्रन्थ लुप्त हो गये हैं। तथापि संस्कृत-साहित्यका भंडार आज कलके प्रगतिशील साहित्योंके समान ही भरपूर भरा है। भारतकी उज्ज्वल सभ्यताका एकमात्र प्रमाण संस्कृत-साहित्य का अखंड भंडार ही है। जिसके आधार पर भारत अपनेको सब देशोंके गुरु होनेका गौरव धारण करता है।

भारतवर्षके प्रायः प्रत्येक प्रान्त में अनेकों विद्वान् उत्पन्न हुए हैं। जिन्होंने समय समय पर संस्कृत-साहित्यके कोषको अनेक ग्रन्थोंसे भर दिया है। इन प्रान्तोंमें से युक्तप्रान्त, बंगाल, महाराष्ट्र, मिथिला, काश्मीर इत्यादि प्रान्तोंने संस्कृत-साहित्यके भंडार को भरनेमें विशेष भाग लिया है। महाराजा विक्रमादित्यके राज्यकालसे लेकर यवनोंके आक्रमण काल तक संस्कृत-साहित्य उन्नतिकी चरमसीमा तक पहुंच गया था। यह काल वास्तवमें संस्कृत-साहित्यके मध्ययुगका "स्वर्णकाल" माना जा सकता है। इस समयमें भारतके सभी प्रान्तोंके विद्वान् अपनी कृतियों की रचना संस्कृत भाषा में ही करते थे। जब कि भारतके प्रान्तोंमें मुसलमानोंका आधिपत्य हो गया तो भारतके कई प्रान्तों का पारस्परिक सम्बन्ध टूटसा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि कई प्रान्तोंके विद्वान् अपने ग्रन्थोंको अपनी अपनी प्रान्तीय भाषाओंमें ही लिखने लगे। बंगालके लोग अपनी बंगला भाषामें और महाराष्ट्रके लोग अपनी महाराष्ट्री भाषाके साहित्यको ही भरनेका प्रयत्न करने लगे। इसी प्रकार संयुक्तप्रान्त में हिन्दी-भाषाकी प्रगति होने लगी। इधर फारसी एवं उर्दू भाषाओंमें भी लिखना प्रारम्भ हुआ। इस समय संस्कृत-साहित्य दीनदशामें पड़ा हुआ था और बहुतही थोड़े विद्वान् संस्कृत भाषामें अपनी रचनाओंको लिखते थे। किन्तु ऐसे समयमें भी काश्मीरी पण्डितोंने संस्कृत-साहित्य की सेवा करनी नहीं छोड़ी। "संस्कृत साहित्यकी

उन्नतिके लिये काश्मीरी पण्डितोंने कितना भाग लिया है" इसकी विवेचना हम कुछ पंक्तियोंमें करेंगे।

क्षेत्रफलकी दृष्टिसे काश्मीर भारतका एक अत्यन्त अल्पभाग है। काश्मीरकी उपत्यकाकी समतलभूमि केवल १०० मील लम्बी और लगभग ३० मील चौड़ी है। जिन काश्मीरी पण्डितोंने संस्कृत साहित्यकी सेवा करके इसके भण्डारको उज्ज्वल बना दिया है वे सब इसी समभूमिमें उत्पन्न हुए हैं। इस दृष्टिसे जितनी सेवा काश्मीरने संस्कृत साहित्यकी की है उतनी और किसी प्रान्तने नहीं की है। अब हम संस्कृत साहित्यके भिन्न-भिन्न शाखाओंके कुछ मुख्य काश्मीरी विद्वान् तथा उनकी कृतियोंकी विवेचना करेंगे।

काव्य

वास्तवमें काश्मीरको काव्य विद्याकी यदि जन्म-भूमि कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। काव्य विद्याके अखण्ड भण्डारको अधिकतर काश्मीरी पण्डितोंने ही भर दिया है। इसी लिये 'बिल्हण' ने कहा था—

सहोदराः कुङ्कमकेसराणां भवन्ति
नूनं कविताविलासाः ।
न शारदादेशमपास्य दृष्टस्तेषां
यदन्यत्र मया प्ररोहः ॥

महाकवि मङ्खने श्रीकण्ठचरितके २५वें सर्गमें एक पण्डित सभाका वर्णन किया है। जिससे विदित होता है कि काश्मीरमें काव्यकलाके धुरन्धर आचार्य हुआ करते थे। जिन पण्डितोंका वर्णन मङ्खने किया है। उनमेंसे बहुतोंकी रचनायें संस्कृत साहित्यके उज्ज्वल रत्नोंमें से हैं। महाकवि रत्नाकरने तो ५० सर्ग का 'हरविजय महाकाव्य' लिखकर संस्कृत साहित्यको एक अमर-विभूति प्रदान की है। काव्य-क्षेत्रमें काश्मीरी पण्डित कितने अग्रगण्य माने जाते थे इस बातको महाकवि श्रीहर्षने —

"काश्मीरैर्महिते चतुर्दशतयीं विद्यां विदद्भिर्महा ।
काव्ये चारुणि नैषधीयचरिते सर्गोऽगमत् षोडशः॥"

इस पद्यसे स्पष्ट किया है।

संस्कृत साहित्यके अमर इतिहासमें महाकवि क्षेमेन्द्रका नाम तो स्वर्णाक्षरोंमें लिखा रहेगा। इसने संस्कृत भाषामें अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। यह काश्मीर नरेश महाराजा कलशकका अध्यापक एवं गुरु था। इसने महाभारत रामायण तथा बृहत्कथा को संक्षेपरूपसे लिखकर महाभारत मञ्जरी, रामायण मञ्जरी, तथा बृहत्कथामञ्जरीकी रचना की है। 'कला विलास' में इसने अनेक वृत्तियोंकी विवेचना की है। 'समयमातृका' में इसने वेश्याओं के हावभाव तथा उनके छलसे बचनेका अच्छा दिग्दर्शन किया है। इसी कविने तिब्बतमें जाकर एक पालीग्रन्थका पता लगाया था और फिर इस ग्रन्थको संस्कृतमें लिख लिया था। इस ग्रन्थका नाम "बौद्धावदान कल्पलतिका" है। जबकि ग्रन्थका अनुवाद समाप्त हुआ तो क्षेमेन्द्रको ज्ञात हुआ कि मूल-ग्रन्थका कुछ भाग तिब्बतमें ही है। तदनन्तर इसने अपने पुत्र सोमेन्द्रको तिब्बत भेजा और वहां से पालीग्रन्थको लाकर पुस्तककी रचना पूरी कराई। क्षेमेन्द्रने 'देशोपदेश' और 'नर्ममाला' नामक पुस्तकों में विश्वविद्यालयोंमें उस समयके पढ़नेवाले विद्यार्थियोंके दुर्व्यसनों का सुचारू चित्र उतारा है। 'नृपावली' नामक ग्रन्थमें क्षेमेन्द्रने काश्मीरका इतिहास भी लिखा था, परन्तु दुर्भाग्यसे यह ग्रन्थ नहीं मिलता है। संस्कृत साहित्यमें क्षेमेन्द्र जैसे बहुत ही विरले पण्डित हुए होंगे जिन्होंने मानवजीवन के प्रत्येक विषयपर पुस्तकें लिखी हों।

अलङ्कार

संस्कृत-साहित्यके अलङ्कार ग्रन्थ प्रायः काश्मीरी पण्डितोंने ही लिखे हैं। महाकवि मम्मटका 'काव्य-प्रकाश' पंडितसमाजमें जितनी प्रतिष्ठा पा चुका है उतना बिरला ही कोई अलङ्कार-पुस्तक पा चुका होगा। आनन्दवर्धनाचार्यका 'ध्वन्यालोक' आचार्य उद्भटका 'उद्भटालङ्कार' महिम भट्टका 'व्यक्ति-विवेक' इत्यादि ग्रन्थ तो अनेक अलङ्कार पुस्तकोंमें उच्च स्थान प्राप्त कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त क्षेमेन्द्रकी 'औचित्यविचारचर्चा' में कितने ही आलङ्कारिक

पंडितोंके नाम मिलते हैं जिनकी इस समय कोई भी रचना नहीं मिलती।

व्याकरण

संस्कृत-साहित्यके व्याकरण विभागको भी काश्मीरके पंडितोंने खूब भर दिया है। कैयटाचार्य की महाभाष्य पर की हुई टिप्पणी तो सर्वत्र विदित ही है। हेलाराजके व्याकरण पुस्तकको भी सभी जानते हैं। क्षीरस्वामीकी व्याकरणवृत्ति तथा वामनाचार्यकी 'काशिकावृत्ति' भी उपयोगी मानी जाती है। काश्मीरी पंडितोंने व्याकरणको सुगम बनानेके लिये भी कई नवीन पद्धतियां निकालीं थीं। जगद्धर भट्टने 'कातन्त्रव्याकरण' की रचना की थी। आचार्य चन्द्रने तो पाणिनिसे पहले ही 'चान्द्रव्याकरण' बनाया था। इसके अतिरिक्त महाभाष्य पर कई काश्मीरी विद्वानोंने व्याख्याएं बनाई थीं जो कि अब नहीं मिलती हैं। जगद्धर भट्टके पिता रत्नधरने 'लघुपंचिका' नामक व्याख्या बनाई थी। इसी प्रकार बिल्हणके पिता ज्येष्ठ कलश तथा मङ्खके भाई अलङ्कारने भी कई महाभाष्य पर विवृत्तियां लिखी थीं जिनका अब नाममात्र ही अवशेष है।

शैवदर्शन

शैवदर्शनके विषयमें जितने भी ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनमें अधिकतर काश्मीरी पण्डितोंने ही लिखे हैं। शैव सूत्रोंका उद्धार भी 'वसुगुप्त' नामक काश्मीरी पण्डितने ही किया था। आचार्य सोमानन्द उत्पलाचार्य तथा अभिनव गुप्ताचार्यने शैव दर्शन पर जो ग्रन्थ लिखे हैं उनसे ही इस दर्शनका भण्डार परिपूर्ण माना जा सकता है। इनमेंसे तो शैवशास्त्रके धुरन्धर आचार्य अभिनव गुप्त संस्कृत साहित्यके प्रकाण्ड पण्डितोंमें से हैं। इन्होंने शैवशास्त्रके अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। इनकी 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृत्ति' शैवदर्शनका एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है। भरतमुनिके नाट्यशास्त्र पर भी इन्होंने 'अभिनव भारती' नामक विवृत्ति लिखी है, जिसकी आजकल पश्चिमके नाट्याचार्य भी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करते हैं।

न्याय दर्शन

यद्यपि न्याय विभागमें काश्मीरी पण्डितोंकी रचनाएँ नहींके बराबर ही हैं, तथापि काश्मीरी विद्वान् इस विभागमें भी कुछ न कुछ लिख ही बैठे हैं। महाकवि अभिनन्दके पिता जयन्त भट्टने 'न्याय मञ्जरी' नामक बृहत् ग्रन्थ लिखा है जो अब भी पण्डित-समाजमें आदरसे पढ़ा जाता है।

बौद्ध दर्शन

जब कि भारतवर्षमें बौद्धमत उन्नतिके उच्च शिखर पर पहुंच चुका था उस समय भी काश्मीरी विद्वानोंने महायान सम्प्रदायको निकाल कर संस्कृत साहित्यके भण्डारको भरना प्रारम्भ किया। इस सम्बन्धमें आचार्य नागार्जुनका नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। सम्राट् अशोकके समय जो बौद्धोंका दूसरा सम्मेलन काश्मीरमें हुआ था उसका सभापति पद नागार्जुन ही ने विभूषित किया था। यह नागार्जुन श्रीनगरके समीप 'हार्वेन' नामक स्थानमें रहता था, जिसका ज्ञान राज तरङ्गिणीके 'स च नागार्जुनः श्रीमान् षडर्हद्वनसंश्रयी' इस पद्यसे होता है। नागार्जुनने बौद्धदर्शनके विषयमें कई पुस्तकें लिखी हैं। इसके अतिरिक्त क्षेमेन्द्र और उसके पुत्र सोमेन्द्रकी 'अवदानकल्पलतिका' भी बौद्ध साहित्यकी एक बड़ी पुस्तक है।

इतिहास

आज कलके विद्वान् संस्कृत साहित्यमें ऐतिहासिक पुस्तकोंके न होने का एक बड़ा आक्षेप करते हैं। वास्तवमें संस्कृत साहित्यके मध्ययुग तथा वर्तमानयुगमें यदि काश्मीरी पण्डितोंने ही कुछ ऐतिहासिक पुस्तकें न लिखी होती तो यह आक्षेप अनिवार्य ही माना जा सकता था। कल्हण पण्डितकी 'राजतरङ्गिणी' ने तो संस्कृत साहित्यमें इतिहास न होने का आक्षेप बहुतसे अंशोंमें हटा दिया है। कल्हण पण्डितके बाद जोनराज श्रीवर तथा प्राज्यभट्टने क्रमशः द्वितीया तृतीया तथा चतुर्थी राजतरङ्गिणी लिख कर संस्कृत-साहित्यकी जो सेवाकी है वह किसीसे छिपी नहीं है।

इसके अतिरिक्त नीलमुनिका 'नीलमतपुराण' भी एक भौगोलिक तथा ऐतिहासिक ग्रन्थ है। कल्हणके सिवाय कई विद्वानोंने और भी ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे थे, जिनके आधार पर कल्हणने अपने इतिहासकी रचना की थी। इनमेंसे क्षेमेन्द्र, हेलाराज, सुप्रभ, पद्म मिहिर, छविल्लाकर इत्यादि मुख्य इतिहासकार हैं। हेलाराजकी 'पार्थिवावली' में १२ हजार श्लोक थे। क्योंकि कल्हणने स्वयं कहा है—

बद्धा द्वादशभिर्ग्रन्थसहस्रै पार्थिवावलिः।
प्राङ् महाव्रतिना येन हेलाराजद्विजन्मना॥

इनके अतिरिक्त बिल्हणके 'विक्रमाङ्कदेवचरित' तथा राजानकजयरथके 'हरचरितचिन्तामणि' में भी ऐतिहासिक अंश भरे पड़े हैं। महाकवि जल्हणका 'सोमपालविलास काव्य' तथा शङ्ककका 'भुवनाभ्युदय' भी इतिहास ही थे जो कि लुप्त हो गए हैं। इन प्रमाणोंसे यह कहा जा सकता है कि काश्मीरी पण्डितोंने इतिहासग्रन्थोंकी रचना करनेमें संस्कृत-साहित्यकी सेवाका जो गौरव प्राप्त किया है वह किसी भी देशके विद्वान्को नहीं मिला है।

कोष

संस्कृतमें अमर-कोषके अतिरिक्त कई कोष मिलते हैं। इनमेंसे 'मङ्खकोष' भी एक उत्तम कोष है। इसकी रचना महाकवि मङ्खने की थी। यह महाकवि काश्मीर नरेश जयसिंहका 'सन्धिविग्रहिक' था। अमरकोषकी व्याख्या क्षीरस्वामीने की थी। इस तरह 'कोष' रचना में भी काश्मीरियों का हाथ रहा है।

वैदिक

कश्मीरी पण्डितोंमेंसे 'उव्वटाचार्य' ने 'शुक्ल यजुर्वेद संहिता' पर भाष्य लिखा है। इसके अतिरिक्त कर्मकाण्ड इत्यादि विषयों पर भी कई विद्वानोंने वृत्तियां लिखी हैं।

तन्त्र

तन्त्र शास्त्रोंकी रचनामें भी कश्मीरवासी पंडितों ने विशेष भाग लिया है। इनमेंसे अधिकतर अनेक ग्रन्थ अभी अविदित तथा अमुद्रित ही हैं। किन्तु कश्मीरके महाराजा सन्धिमान्के गुरु ईशानदेवने 'ईशानशिवगुरुदेव पद्धति' नामक ग्रन्थकी रचना की है जोकि मुद्रित हो चुकी है। इसके सिवाय आचार्य सोमानन्दकी 'सोमानन्द पद्धति' भी सम्प्रति मुद्रित हुई है।

आयुर्वेद

काश्मीर नगाधिराज हिमालयकी उपत्यकामें विराजमान है। इस देशमें अनेक प्रकारकी दिव्य औषधियां ऊगती हैं। अतः आयुर्वेद जैसे प्राकृतिक वैज्ञानिक ग्रन्थोंकी रचना भी इस देशके पण्डितोंने विशेषतया की है। चरक-संहिताके मूल सूत्रकार भगवान् पुनर्वसु आत्रेय भी काश्मीर देशके समीप बहनेवाली चन्द्रभागा नदीके तटपर उत्पन्न हुए थे। कई विद्वानोंका मत है कि 'चरक' भी काश्मीरके ही निवासी थे। चरकसंहिताके इन्द्रियस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान तथा उत्तरतन्त्रके लेखक आचार्य दृढ़वल भी काश्मीरी पण्डित ही थे। यह 'पञ्चनदपुर' (जिसको आजकल पेञ्जिनोर कहते हैं) में उत्पन्न हुए थे। पण्डित नरहरि आचार्य सोमानन्दके वंशज थे। यह 'सिन्दपुर' नामक ग्राममें उत्पन्न हुये थे। इन्होंने 'राजनिघण्टु' लिखकर आयुर्वेद विद्याकी जो सेवा की है उसको सभी आयुर्वेद पण्डित अनुभव कर रहे हैं। 'जय्यट' नामक काश्मीरी पण्डितने भी सुश्रुतसंहिता पर व्याख्या लिखी थी। 'आयुर्वेदनावनीतकम्' नामका जो नया ग्रन्थ भूगर्भसे उपलब्ध हुआ है उसके अनुसन्धानसे पता चलता है कि उस ग्रंथके तीन लेखक थे, जोकि काश्मीरमें वितस्ता नदीके तटपर उत्पन्न हुए थे और तक्षशिला विश्वविद्यालयमें आयुर्वेदके अध्यापक थे। आचार्य नागार्जुनने तो लङ्कामें जाकर रसविद्या सीखी थी। उसके बाद उसने भारत में भी इस विद्याका प्रचार किया और रसशास्त्र पर कई ग्रन्थ भी लिखे थे, जिनमेंसे कुछ ही उपलब्ध हैं। यह आचार्य नागार्जुनके परिश्रमका फल है कि भारत में आज भी रस-चिकित्साकी प्रणाली बराबर चली आरही है और अनेक रस-ग्रन्थोंकी रचना भी हुई है। शम्भु महाकविके पुत्र 'आनन्द' ने भी आयुर्वेद पर एक ग्रन्थ लिखा था जो अब नहीं मिलता है।

टीकाएँ

संस्कृत पुस्तकोंकी जो प्राचीन टीकाएँ उपलब्ध हैं उनमें काश्मीरी पण्डितोंका भी पर्याप्त हाथ रहा है। वल्लभदेव, जोनराज, रत्नकण्ठ इत्यादि पण्डितोंने कई संस्कृत पुस्तकोंकी टीकाएँ लिखी हैं जो अबभी मुद्रित तथा अमुद्रित रूपमें मिलती हैं। भास्करकण्ठ ने 'ईश्वरप्रत्यभिज्ञा' पर जो बृहत् टीका लिखी है वह भी अब छपचुकी है।

अनुवाद ग्रन्थ

जिस समय अरबी और फारसीकी चलती थी संस्कृत विद्या और हिन्दू संस्कृति अवनतिकी ओर जा रही थी, उस समय भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें पृथक्-पृथक् भाषाएँ शुरू होने लगीं और लोग इन्हीं भाषाओंमें ग्रन्थोंका निर्माण करने लगे। परन्तु इस समयमें भी केवल काश्मीरी पण्डित ही ऐसे हुए जिन्होंने चिरवत्सला संस्कृत भाषाको ही अपनानेका प्रयत्न किया। राजतरङ्गिणीके पढ़नेवालोंको विदित ही है कि किस तरह काश्मीरी पण्डितोंने यवनोंके अत्याचारोंको सहन करते हुए भी अपनी बुद्धिसे वैदिकधर्म तथा संस्कत विद्याको लुप्त होनेसे बचाया। यद्यपि वे अरबी तथा फ़ारसीको पढ़ते थे, तथापि उन भाषाओंके ग्रन्थो का उन्होंने संस्कृतमें अनुवाद किया। राजानक भट्टाह्लादकने 'देलरामा कथासार' नामक पुस्तक अरबीके एक पुस्तकका अनुवाद करके लिखी। पण्डित श्रीवरने 'कथाकौतुक' नामक एक अनुवाद ग्रन्थ लिखा। राजानक प्राज्य भट्टने जो चतुर्थी राज-तरङ्गिणी लिखी है उसका बहुतसा भाग फारसीके इतिहास पुस्तकोंसे लिया गया है, इसके अतिरिक्त महाकवि क्षेमेन्द्रने जो 'बौद्धावदान कल्पलतिका' लिखी है वह भी एक पाली ग्रन्थका ही अनुवाद है। इस बातको हम पहले भी लिख ही चुके हैं। सोम-देव भट्टने भी अनन्तदेवकी रानी सूर्यमतीके कहनेसे पिशाच भाषामें लिखी हुई बृहतकथाका संस्कृतमें अनु-वाद करके 'कथासरित्सागर' की रचना की थी।

फुटकर विषय

'सुभाषित रत्नभाण्डागार' संग्रह ग्रन्थोंमें अनेक काश्मीरी पण्डितोंके पद्य मिलते हैं। इसके सिवाय बहुतसे स्त्रोत भी काश्मीरी पण्डितोंने बनाये हैं। जिनमेंसे आचार्य अभिनव गुप्त, क्षेमराज, उत्पलाचार्य तथा जगद्धर भट्टके स्तोत्र ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध हैं।

इन विषयोंके अतिरिक्त कश्मीरी पण्डितोंने ज्योतिष, इन्द्रजाल तथा सामुद्रिक विद्यामें भी कई ग्रन्थ लिखे हैं जिनमेंसे कुछ लुप्त होगये हैं और कुछ अमुद्रित हो हैं। कोक्कोक पण्डित का रतिरहस्य (कोक शास्त्र) तो सभी जानते हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट ही है कि काश्मीरके पण्डितोंने संस्कृत साहित्यके भण्डारको जितना बढ़ाया है उतना भारतके किसी भी प्रान्तके विद्वानों ने नहीं बढ़ाया। भारतके सुविस्तृत समभूमिसे बहुत दूर हिमालयकी पर्वत शृंखलासे घिरी हुई इस छोटी सी फुलवाड़ीमें संस्कृत साहित्यके क्षेत्रको शोभा देने-वाले जो फूल खिले हैं उनकी दिव्य सुगन्धि संस्कृत साहित्यका सेवा करने वाले समाजको चिरकाल तक सुगन्धित करती रहेगी। संस्कृत विद्याकी इस अनुपम विद्वत्ताका काश्मीरियोंको आदिकालसे ही अत्यन्त गर्व था। इसीलिये कल्हणने कहा था —

रसपूर्णं तु वैदुष्यं कुङ्कुमं सहिमं पय:।
द्राक्षेति यत्र सामान्यमस्ति त्रिदिव दुर्लभम्॥

परन्तु विधाताकी विचित्र लीला है। जहां छांह है वहां धूप भी है। जहां प्रकाश है वहीं क्षणभरमें अंधेरा भी है। कहां वह काश्मीर जिसके विषयमें विल्हणने कहा था कि :—

यत्र स्त्रीणामपि किमपरं जन्मभाषावदेव।
प्रत्यावासं विलसति वच: संस्कृतं प्राकृतं च॥

और कहां अब वही काश्मीर जहांपर ठिठुराती और बूढ़ी संस्कृत विद्याको टिकनेके लिए टूटी-फूटी लाठीका सहारा भी नहीं मिल रहा है। अबतो इस देशके लोग अपने पूर्वजोंकी उन अनुपम रचनाओंको बिल्कुल ही भूल गए हैं। विचित्र बात तो यह है कि अब इस देशके संस्कृत भाषाके अभ्यासी एवं बहुतसे विद्वान भी अपने पूर्वजों की रचनाओं से वञ्चित रह जाते हैं, अस्तु।

पर्यन्तत: परम एव शिव: प्रमाणम्।

स्वाध्यायका महत्व

[ले०—वैद्यराज श्री पं० राधाकृष्णजी उपाध्याय, भिषगाचार्य धन्वन्तरि,
प्रधान वैद्य म्युनिसिपल आयुर्वेदिक औषधालय,
सीताराम बाजार, देहली]

संसारके विचारशील व्यक्तियोंके सम्मुख स्वाभाविक ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि जिस देश और जातिके भूतकालका इतिहास परमोज्ज्वल रहा हो, विश्वको सुख शान्ति और सभ्यताका प्रथम पाठ जहांसे प्राप्त हुआ हो—उसी देशके प्रातः स्मरणीय पूर्वजोंकी सन्तान आज क्यों हतश्री, पराधीन एवं दीन-दुखी होकर सभ्य कहे जाने वाले राष्ट्रोंकी दृष्टिमें दयाकी पात्र बनी हुई है ?

इस प्रश्नका सक्षेपमें एकही उत्तर है, वह यह कि—"स्वाध्यायकी उपेक्षा" जिस प्रकार मनुष्यका शरीर कितना ही सुन्दर और सबल क्यों न हो, यदि स्वाध्यायके द्वारा उसने अपने मस्तिष्कको भली प्रकारसे उन्नत नहीं किया है तो वह कभी पूर्ण रूपसे सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जितनी ही उसके मस्तिष्कके विकाशकी न्यूनता होती जायगी वह उतना ही अपने उद्देश्यसे पतित होता जायेगा। भारत वासियोंने स्वाध्यायको छोड़कर अपने ज्ञानबलको न्यून कर दिया है। इसी कारण कर्त्तव्याकर्तव्यको न समझ कर देश तथा जाति रसातलको जा रही है। पूर्वजोंके प्राचीन इतिहासके स्वाध्यायसे उत्पन्न हुए ज्ञान बल द्वारा शिवसंकल्प युक्त होकर देश वासी अपना दैनिक कार्य कलाप करते रहें तो व्यक्तिगत उन्नतिके साथ साथ राष्ट्रिय जाग्रति होकर देश पुनः अपने नष्ट प्राय गौरवको प्राप्त कर संसारके अन्य राष्ट्रोंके सम्मुख पुनः आदरणीय हो सकता है। यद्यपि स्वाध्यायके महत्व पर संसारको सभ्यताकी शिक्षा देने वाली प्राचीन आर्य (हिन्दु) जातिका इतिहास अनेकानेक अनुकरणीय आदर्श उदाहरणोंसे परिपूर्ण है। तथापि हम नीचे अति संक्षेपमें दो एक स्वाध्यायशील कर्त्तव्यनिष्ठ महापुरुषोंके उदाहरण पाठकोंकी भेंट करते हैं—

आजसे लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व आर्य संस्कृतिके महान् आचार्य चाणक्य और सम्राट् चन्द्रगुप्तने अपने स्वाध्याय और शिवसङ्कल्पके बल पर पाटलीपुत्रके महान् साम्राज्यका निर्माण किया। मौर्य सम्राट् चंद्रगुप्त और उसके सुयोग्य पौत्र विश्व-विख्यात सम्राट् अशोकके कालमें भारतीय साम्राज्य उत्तरमें अफगानिस्तान और हिन्दुकुश पर्वतको पार करता हुआ फारसकी सीमासे लग गया था। प्रसिद्ध पश्चिमीय इतिहासवेत्ता विन्सेण्ट ए. स्मिथ सम्राट् चन्द्रगुप्तके भारतीय साम्राज्य विस्तारके सम्बन्धमें लिखते हैं—

"दो हजार वर्षसे भी अधिक हुए भारतके सम्राट् चन्द्रगुप्तने उस वैज्ञानिक सीमाको प्राप्त किया था जिसके लिए उसके बृटिश उत्तराधिकारी व्यर्थमें आहें भरते हैं और जिसको कि सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियोंके मुगल सम्राटोंने भी कभी पूर्णताके साथ प्राप्त नहीं किया।"

इसी प्रकार वैदिक धर्मके पुनरुद्धारक जगद्गुरु आद्य शङ्कराचार्य और आचार्य कुमारिल भट्टने अपने स्वाध्याय और शिवसङ्कल्प द्वारा तत्कालीन बौद्ध अनीश्वरवादसे भारतको मुक्त किया। हम आशा करते हैं कि देशवासी वर्तमान सङ्कटमय राजनैतिक परिस्थितिमें अपने प्राचीन पूर्वजोंके अनुकरणीय इतिहासका स्वाध्याय करते हुए राष्ट्रोत्थानके पुनीत कार्यमें संलग्न होने का सङ्कल्प करेंगे।

हमें अत्यन्त आनन्द है कि इस 'श्रीस्वाध्याय" पत्रने प्राचीन भारतीय सभ्यताके आदर्शको संसारके सम्मुख रखनेका सङ्कल्प करके देशकी महान् सेवा की है। प्रभु से प्रार्थना है कि "श्रीस्वाध्याय" के सुयोग्य संस्थापक और सम्पादक महानुभाव देश व धर्मकी सेवा करते हुए अपने उद्देश्यमें सफल हों। साथ ही हमें यह भी आशा है कि भारतीय जनता "स्वाध्याय" को अपनाती हुई राष्ट्रोद्धारके इस पुनीत कार्यमें सञ्चालकोंको सहयोग देकर अपने कर्तव्यका पालन करेगी।

दैनिक ग्रहोंका राशि परिवर्तन

दैनिक ग्रहोंमें जहां जिस ग्रहने राशि परिवर्तन किया है वहां (अंश कोष्ठकमें) अधिक स्थान न होने के कारण उस राशिका पूरा नाम नहीं आ सका, अतः केवल मात्र राशिका एक आद्यक्षर ही दिया गया है। जहां राशिके आद्यक्षरके साथ अंशाङ्क न आसका हो वहां शून्यांश समझें।

हां, विज्ञ पाठक इस बातका भी ध्यान रक्खें कि जहां जो ग्रह वक्रगतिसे शून्यांश होकर पहलेकी (पिछली) राशिके अन्त्यांशमें (२९वें अंशमें) प्रवेश हुआ है वहां प्रवेश वाले दिन अंश कोष्ठकमें (दो अङ्क २९ होनेके कारण तथा प्रेसमें छोटा टाइप न होनेके कारण) किञ्चिन्मात्र भी स्थान शेष न रहनेसे पहले दिन ही उस राशिका नाम (आद्यक्षर) बाध्य होकर हमें देना पड़ा है। परन्तु वास्तवमें वह राशि अगले दिन २९ अंशके साथ ही समझनी चाहिए। जैसे पृष्ठ २४ पर अ० ज्येष्ठ कृष्ण ११ मंगलवारको बुध "वृ०–२२" लिखा है, परन्तु वास्तवमें मंगलवारको प्रातः बुध मिथुनके ० अंश २२ कला है। दूसरे दिन द्वादशी बुधवारको वक्रगतिसे वृषभराशिके २९ अंश ५१ कला हुआ है। इसी प्रकार आगे भी जहां २ वक्रगतिसे जो ग्रह पहली राशिमें पुनः आया है वहां राशि परिवर्तन २९ अंशके साथ ही समझें। मार्गी ग्रहोंका राशिपरिवर्तन सब ठीक ही है। दैनिक ग्रहों में पृष्ठ ४१ से ४४ तक दृष्टिदोष से "सन् १९४२ ई०" छप गया है, वहां (इन चारों पृष्ठोंमें) सन् १९४३ ई० होना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि और भी कोई त्रुटि रह गई हो तो सहृदय विद्वान् महानुभाव हमें सूचित कर अनुगृहीत करें।

—सम्पादक

क्षमा प्रार्थना

"श्रीस्वाध्याय" का यह प्रथमाङ्क (शरदङ्क) विज्ञ पाठकोंके हाथोंमें है। इस महायुद्धके समयमें जो पत्र कई वर्षोंसे चल रहे हैं उनकी स्थिति भी डावांडोल होरही है। प्रायः सभी पत्रोंने या तो अपना वार्षिक मूल्य बढ़ाया अथवा पृष्ठ संख्या कम करदी है। कई सुप्रतिष्ठित मासिक पत्रोंने हल्का (रफ) कागज लगाना आरम्भ किया है, क्योंकि कागजके विषयमें तो ऐसी विकट परिस्थिति उत्पन्न होगई है कि बड़े २ सुप्रतिष्ठित दैनिक पत्रोंको भी यथेच्छ कागज मिलना बहुत कठिन हो गया है। ऐसी परिस्थितिमें साहस करके जैसा भी कुछ कार्य हमसे बन पड़ा है वह पाठकोंके सामने ही है। नया २ कार्य होनेके कारण शीघ्रतामें दृष्टिदोषसे कोई त्रुटि रह जाना भी सम्भव है, उसके लिए आशा है, सहृदय पाठक क्षमा करेंगे।

दूसरा फार्म (पृष्ठ ९ से १६ तक) मशीनमैनकी असावधानीके कारण बिल्कुल स्पष्ट रूपमें जैसा चाहिए वैसा नहीं छप सका है। कहीं २ अक्षरोंकी मात्राओं पर स्याही ठीक न लगनेसे पूरी उठी नहीं हैं और कुछ छपते २ टूट भी गई हैं। जहां रेफ अनुस्वारादि मात्राएं ठीक नहीं उठी हैं वहां विज्ञ पाठक सुधार कर पढ़नेकी कृपा करें। प्रेसमें कुछ संयुक्ताक्षर और अनुस्वार (चन्द्रबिन्दु) का टाइप भी नहीं था, इस कारण जो टाइप उपलब्ध हुआ वही हमें बाध्य होकर लगवाना पड़ा है। आशा है कि विज्ञ पाठक इसके लिए भी हमें क्षमा करेंगे। भविष्यमें ये सब त्रुटियां दूर करदी जावेंगी।

विनीत—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"।

Registered No. L.

श्रीग्रन्थमालाका प्रथम पुष्प

श्रीपञ्चस्तवी

(श्रीमद्धर्माचार्य भगवत्पाद प्रणीत)

यह एक अत्यन्त प्राचीन तथा भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथोंको पूर्ण करने वाला श्रीमहामायाका स्तोत्र-रत्न है। लाखों भक्तोंने अनुभव किया है और आगे भी करेंगे कि यह स्तोत्ररत्न संसारमें अद्वितीय है।

पूज्यपाद सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य प्रणीत कुछ प्रकाशित तथा अप्रकाशित ग्रन्थरत्न

श्रीपरशुरामस्तोत्र

यह एक अत्यन्त ओजस्विनी भाषा में लिखा हुआ भगवान् श्रीपरशुरामका स्तोत्र है। भारतके अनेकों पत्र पत्रिकाओंने तथा विद्वानोंने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसाकी है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र द्वितीय संस्करण छप कर तैयार है।

श्रीराष्ट्रालोक

अत्यन्त सरल तथा सरस संस्कृतभाषामय इस ग्रन्थके अध्ययनसे नस २ में राष्ट्रप्रेम व उत्साह भर जाता है। राष्ट्रिय व्यक्तियोंके सम्पूर्ण कर्तव्य, राष्ट्रको स्वतन्त्र व उन्नत करनेके उपाय, राष्ट्र किसे कहते हैं? उस पर किसका अधिकार होता है? इत्यादि विभिन्न राष्ट्रिय विषयोंका सम्पूर्ण ज्ञान होजाता है। बड़े २ राष्ट्रिय नेताओंने इसकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अधिक क्या, गागरमें सागर है। राष्ट्रभाषानुवाद सहित द्वितीय संस्करण शीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

श्रीसप्तपदीहृदय

(राष्ट्रभाषानुवाद सहित)

भारतीय आर्यविवाह संस्कारमें सप्तपदी नामक क्रिया कितनी सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण है यह तो पाठकोंको विदित ही है। किन्तु इस सप्तपदीका वास्तविक रहस्य आज तक किसी भी विद्वानने खोल कर नहीं लिखा। "एकमिषे" इत्यादि सूत्रोंके यथार्थ रहस्यको खोल कर भारतीय आदर्शके राष्ट्रिय रूपमें यह श्रीसप्तपदीहृदय नामक ग्रन्थ लिखा गया है। विशेष क्या आदर्श-दाम्पत्य जीवनका तत्त्व इस पुस्तकमें भरा पड़ा है।

श्रीआत्मविलास

(सुन्दरी राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित)

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थ-रत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचलसी मचगई, और सैकड़ों प्रतियां हाथोंहाथ लग गई। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शान्त होता है, संसार बाहर भीतर सम्पूर्णरूपसे आनन्दमय प्रतीत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है? हम क्या हैं? और हमें क्या करना चाहिये? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि २ आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्म-साक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) रु० मात्र।

शीघ्र प्रकाशित होनेवाला

श्रीराष्ट्रालोकका

श्रीराष्ट्रसञ्जीवन संस्कृतभाष्य

इसके विषयमें संक्षेपसे ही हम पाठकोंको सूचित करते हैं कि यह ग्रन्थरत्न सम्पूर्ण साहित्य-सागरका सार है। इसके जोड़का ग्रन्थ आज तक संसार भरके किसी भाषाके साहित्यमें नहीं लिखा गया। ग्रन्थ क्या है, सम्पूर्ण राष्ट्रिय विषयोंका हृदय है। ग्रन्थमें प्रणेताने स्वाभाविक पूर्ण विज्ञानके आधार पर सम्पूर्ण मानव कर्तव्य तथा स्वभावका उस विशेषतासे प्रतिपादन किया है कि जो एक अत्यन्त नवीन, सुललित, स्वभाव शुद्ध तथा प्रकृति सिद्ध हो सकती है। इस ग्रन्थका स्वाध्याय प्रत्येक राष्ट्रहितैषीका परम प्रधान कर्तव्य है। न पढ़ने वाले आजन्म पछतायेंगे। कईसौ पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ समाप्त हुआ है।

सूचना—श्रीआत्मविलासको छोड़ कर शेष सभी मुद्रित पुस्तकें मार्गव्यय प्राप्त होनेपर "श्रीस्वाध्याय"के ग्राहकोंको बिना मूल्य दी जावेंगी।

पता— श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)।

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहली में छप कर श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।